पुस्तक—

संगीत-माधुरी

संपादक

सुरेश मुनि शास्त्री

प्रकाशक—

सन्मति-ज्ञान-पीठ,

लोहामण्डी, आगरा

तृतीय संस्करण

फरवरी १९६६

मूल्य १ २५ पैसे

मुद्रक—

रेखा प्रिन्टर्स

राजामण्डी, आगरा

प्रकाशक की ओर से

श्री सुरेश मुनि जी द्वारा सम्पादित आध्यात्मिक, धार्मिक, सास्कृतिक और सामाजिक गीतो का यह अभिनव सस्करण सामाजिक मच पर इतना लोकप्रिय सिद्ध हुआ है कि इसका पहला और दूसरा सस्करण कुछ ही दिनों मे समाप्त हो गया। क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या बालक क्या युवक, क्या मुनि क्या गृहस्थ, क्या जैन और क्या अजैन—जिस किसी के भी हाथ मे यह पुस्तक पहुँची, वह पढकर मुग्ध हो गया। सब ओर से इसे प्रशसा मिली और प्रत्येक पाठक ने इसे हृदय से अपनाया। जो जन-मन को छूती, जगाती और अनुप्राणित करती चली जाय, इसी का नाम तो कला है।

अब, उसका तृतीय सस्करण पाठको के कर-कमलो मे पहुँचाते हुए हमे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस तीसरे सस्करण मे काफी-कुछ नये गीत बढा दिये गये है और इस प्रकार यह सस्करण अपना नया रूप लेकर पहले की अपेक्षा भी अधिक उपयोगी हो गया है।

आशा ही नही, प्रत्युत पूर्ण विश्वास है कि पाठक पहले और दूसरे सस्करण की तरह इसे भी अपना कर हमारा उत्साह बढाएंगे।

मत्री,

सन्मति ज्ञान-पीठ, आगरा

विषय-सूची

पूर्व-वचन

मानव-जीवन गतिशील है। वह सदा, सर्वदा अपने आसपास के प्राप्त साधनों को लेकर विकास की ओर, पूर्णता की ओर बढ़ता है, प्रगति करता है। मुख्यत प्रगति करने के तीन साधन हैं—ज्ञान, कर्म और कला। ज्ञान से शान्ति प्राप्त होती है, कर्म से प्रगति होती है और कला समृद्धि की साधक है।

सगीत भी एक श्रेष्ठ कला है, जीवन को समृद्ध करने के लिए। एक समय था, जब भारतीय-सस्कृति मे सगीत-कला का महत्त्वपूर्ण स्थान था। वह आत्म-गौरव एव जीवन-प्रतिष्ठा की चीज मानी जाती थी। यहाँ तक कि सगीत तथा साहित्य से शून्य व्यक्ति बिना पूँछ और बिना सींग का पशु माना जाता था—

> "साहित्य—सगीत—कला—विहीन,
>
> साक्षात्पशु पुच्छ—विषाण—हीन।"
>
> —भर्तृहरि

वस्तुत जहाँ साहित्य और सगीत की चर्चा होती है, वहाँ मन उसी प्रकार आकर्षित होता है, जिस प्रकार सुगन्ध पर भौंरा। यदि किसी का मन आकर्षित नही होता, तो मान लेना चाहिए कि वहाँ जीवन के कतिपय मर्म तत्त्वो की कमी है।

कला सदा रस-भरी होती है। कला का अर्थ ही रस है। परन्तु, जहाँ रस होता है, वहा भय का स्थान भी रहता है। रस मे यदि नियन्त्रण न हो, वह केवल आस्वादन का विषय रहे, तो उस मे विष पैदा हो जाता है। वह अमृत और विष दोनो ही करने वाला है। भारत की पौराणिक गाथा है कि अमृत एव विष दोनो एक ही स्थान से उत्पन्न हुए हैं।

संगीत कला यों तो सुख और अमृत-प्रदायिनी है, किन्तु वह विष-दायिनी भी हो सकती है। जब संगीत का मधुर स्वर हमें आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है तो वह जीवन के कण-कण में अमृत की वर्षा करता है। संत आनन्दघन, तथा तुलसी, कबीर और दादू की जादू-भरी संगीत-मयी वाणी ने जन-जन के हृदय में अमृत-रस की धवल धारा बहायी थी—यह आबाल-प्रसिद्ध बात है। किन्तु, जब संगीत जन-मन में वासनात्मक उत्तेजना तथा काम की सूक्ष्म प्रेरणा की छाप छोड़ जाता है, और मनुष्य के अन्तर्मन को विकृत कर बराबर ऐसी बातों में उलझाये रखता है, जिनके बारे में उसे सोचना भी नहीं चाहिए, तो वह जीवन में व्याप्त होकर चारों ओर जहर बरसाता है।

कला-मात्र का उपयोग है जीवन को विकसित कर उन्नयन की ओर ले जाना। अगर यह नहीं होता, तो सारी कलाएँ एक विडम्बना और खिलवाड़ बनकर रह जाती है। अतः विश्ववंद्य बापू ने एक दिन कहा था—"जीवन सारी कलाओं से महत्तर है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि जिस व्यक्ति का जीवन पूर्णता के निकट है वह महानतम कलाकार है। भला गौरवपूर्ण जीवन के रूप-रेखांकन और उसमें संस्थापन के अतिरिक्त कला किस काम की?"

दुर्भाग्य से आज संगीत-कला के विषय में यही सब हो रहा है। आज वह अमृत के स्थान पर विष उगल रही है। इस कला में जो संयम एवं गाम्भीर्य था—आज वह अतीत की बात रह गयी है। संयमरहित कला अमृत-वर्षण करे, तो कैसे?

आप देखेंगे कि विश्व के रंगमंच पर आज सब ओर फिल्मी गीतों की बहार है। फिल्मी नगमे आज युवा वृद्ध, पुरुष और नारी सबके गले का कण्ठहार बने हुए हैं। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि फिल्मी गीतों का स्तर दिन-पर दिन गिरता जा रहा है। आधुनिक फिल्मी गीतों पर ध्यान देकर निष्पक्ष तथा सत्य भाषा में सोचें तो यह नग्न सत्य आँखों के सामने नाचने लगता है कि संगीत की दृष्टि से भारत स्वर्ण होता जा रहा है। उसका हर गीत-नग्न शृंगारिकता का विष बरसा रहा है वासनाओं की उत्तेजना में घृत का काम

कर रहा है। सचमुच, यह सरासर मानसिक व्यभिचार का खुला प्रचार है, जो शारीरिक व्यभिचार से भी कही बढ-चढकर है, भयकर है।

फिल्म-जगत के ये नग्न शृगारिक एव विरहात्मक गीत बालक-बालिकाओ के अपरिपक्व मन मस्तिष्क पर बुरी तरह छाते जा रहे है, जो किसी भी समाज या राष्ट्र की स्वस्थता पर सीधा प्रहार करते हैं। सगीत का यह तामसी प्रचार भारत के तन-मन-नयन को अध पतन की ओर बेतरह खीचे लिए जा रहा है। क्योकि बच्चो के अर्धविकसित मन पर नैतिकता-शून्य, अश्लील एव अभद्र गीतो को चढा देना, एक तरह से उनके जीवन की अध-खिली कलियो को पकड कर तोड मरोड देना है।

यह दोष-कला का नही, प्रत्युत उसकी गलत दिशा का है। क्योकि कला और विलासिता—यह दोनो एक चीज नही है। जहाँ विलासिता बढी, वहाँ कला या तो क्षीण होती है या विकृत होकर सडने लगती है। विलासिता कला का श्मशान है। क्या हम सगीत को विलासिता से बचा सकते है, जिसने परिवार, समाज और राष्ट्र की नैतिकता को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है? उत्तर मे 'हाँ' कहना ही होगा। सगीत अमृत बन सकता है। आवश्यकता है उसकी दिशा बदलने की, उसमे से असयम का जहर निकाल कर सयम की लगाम लगा देने की। जनता की रुचि परिवर्तनशील है। इस कारण उसको किधर भी ले जाया जा सकता है। दिशा बदलने से दशा बदलते देर नही लगती। दृष्टि बदलते ही सृष्टि बदल जाती है। अत आज सरकार, जनता, हम, आप सबको मिलकर सगीत-धारा का मोड ठीक दिशा मे मोडने को अपने कर्त्तव्यो मे प्राथमिकता देनी चाहिए। सगीत को माध्यम बनाकर हमे जन-मन को स्वस्थ एव आत्म-बोधक सास्कृतिक सगीत विषयो की पुष्ट खुराक देनी चाहिए।

इन सब तथ्यो को दृष्टिगत करते हुए इस दिशा मे यह मेरा लघु प्रयास है। स्थानकवासी जैन समाज के जिन चार काव्य-कलाकारो ने जन-मानस को जगाने के लिए धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक भावो को लेकर जो भाव-प्रवण कविताएँ लिखी है, उन्ही के कुछ नमूनो को यहा एक नया वर्गीकरण का रूप देकर सकलन किया है। जनता के अत्याग्रह पर कुछ अपनी रचनाएँ भी जोड दी हैं। साथ ही यह बात भी कह दूँ कि गीत-चयन मे अपनी

दृष्टि प्रधान रखते हुए भी मैं उन गीतों को छोड़ने का लोभ संवरण नहीं कर सका, जो जनता में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। साथ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है, जिससे पाठक उनके व्यक्तित्व और प्रतिभा से कुछ अभिज्ञता प्राप्त कर सकें। अन्त में "बिखरे मोती" सजा कर रख छोड़े हैं, जो अपना अलग ही महत्त्व एवं मूल्य रखते हैं।

—सुरेश मुनि

सं

गी

त

मा

धु

री

—सुरेश मुनि

अमर मुनि

कविरत्न मुनि श्री अमरचन्द्रजी 'अमर'

आपने कवि और व्यक्ति दोनो रूप मे समाज तथा साहित्य मे अपना स्थान बनाया है। समूचा समाज आपको 'कविजी' के मधुर नाम से सम्बोधित करता है। 'कविजी' नाम इस बात का द्योतक है कि प्रारम्भ मे आप कवि के रूप मे ही साहित्य की रगभूमि मे उतरे थे। आप समस्त स्थानकवासी जैन-समाज के ख्याति-प्राप्त सन्त हैं, विचारक है, लेखक हैं, प्रवक्ता है, समालोचक हैं और जैन-वाड्मय की प्रमुख प्रकाशन-सस्था 'सन्मति-ज्ञान-पीठ, आगरा' के उद्बोधक हैं।

कवि श्रीजी के जीवन मे ऋजुता, बाल-स्वभाव सरलता निष्कपटता, मैत्री करुणा और सहानुभूति प्रचुर मात्रा मे है। वह इतने ख्यातनामा व्यक्ति है—पर, मिथ्याभिमान उन्हे छू तक नही गया है। लोकैषणा उनमे नही है। मात्सर्य का उनमें नितान्त अभाव है। साम्प्रदायिक गुटबन्दी से वह परे हैं। "सब कोऊ मित्र शत्रु नही कोऊ"—ऐसी उनकी वृत्ति है। अपने समकालीन समाज-सेवी साथियो के प्रति उन्होंने कभी भी मन-मुटाव की मन स्थिति अनुभव नही की। सामाजिक निर्माण मे जो उनके निकट समानधर्मा कहे जा सकते हैं, उनके प्रति उनके हृदय मे अगाध स्नेह और अपनत्व का भाव रहा है, और है। यह एक बडी भारी बात है। उनके निकट बैठना-मात्र ही एक प्रकार की सास्कृतिक दीक्षा लेने के सदृश है। उनका व्यक्तित्व इतना निश्छल, इतना मधुर तथा इतना आकर्षक है कि वह बलात् हमे बहुत-कुछ करने के लिए उत्प्रेरित करता है।

आपकी काव्य-धारा ने समाज मे एक नये युग का आवाहन किया। कितने ही उठते हुए तरुण कवियो को नयी दिशा, नयी स्फूर्ति एव नयी प्रेरणा दी।

कविता की नव्य तथा परिमार्जित शैली दी और कल्पना के नये पंख प्रदान किये। दूसरे, किन्तु स्पष्ट शब्दो मे कह दूँ, तो उन्होंने साहित्य का भी निर्माण किया और साहित्यिको का भी।

जो भी हो, इसमे सन्देह नही कि वे बहुत प्रतिभा-शील कवि हैं। उनकी कविता जब हृदय के भावो और मानसिक द्वन्द्वो के स्रोत मे प्रवाहित होती है तो उसमे एक सहज प्रवाह तथा सौन्दर्य होता है। जिस प्रकार वह विचार को मन मे बिठाते हैं और दूसरो तक पहुँचाते हैं उसी प्रकार उनके भाव भी कविता का साकार रूप लेने से पहले अपने-आप मे स्वयं सुलझ लेते हैं। अतः उनके अन्त स्रोत से निर्गत कविताएँ पाठको की हृदय-वीणा के तारो मे एक झनकार पैदा कर देती हैं। और, पाठको के हृदय को छू जाना ही तो कविता की कसौटी हैं। यह उनकी रचना की बहुत बडी सफलता है। उनकी कविता में दार्शनिकता का पुट रहते हुए भी वह सुबोध, सुन्दर और हृदयग्राही होती है।

'अमर-पुष्पाजलि' आपकी सर्वप्रथम कविता-पुस्तक है, जो सर्वाङ्ग रूप में राष्ट्रीय एवं सामाजिक भावनाओ से ओतप्रोत है। सन् १६३१ के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे इस काव्य-रचना ने जनता के तन मन मे एक क्रान्तिकारी और जलती हुई प्रेरणा का कार्य किया था। सामाजिक तथा राष्ट्रीय दोनो ही क्षेत्रों मे इसे आदर से अपनाया गया। राष्ट्रीय एव सुधारक विचारों की पुष्ट खूराक देने के कारण इस पुस्तक को पटियाला स्टेट ने जब्त भी कर लिया था।

उसके बाद आपकी 'अमर-कुसुमाजलि', 'कविता-कुंज' 'अमरगीतांजलि', 'सगीतिका', 'अमर-माधुरी' आदि अनेक काव्य पुस्तकें समाज के रगमच पर नये युग और नयी आवाज का बोलता हुआ सन्देश लेकर आई। 'अमर-गीतांजलि' मे उनके दार्शनिक एव सांस्कृतिक परिपक्व विचारो की स्पष्ट छाप है। 'अमर-माधुरी' मे संस्कृत छन्दो मे जन-जीवन के विविध विषयो और पहलुओ को स्पर्श करती हुई सुन्दर और मंजी हुई कविताएँ है, जिन्होने समाज मे नया जीवन फूँका, जीवन की सही दिशा की ओर इगित किया और मानव-जीवन की आत्म-दीनता मिटाने मे जादू का काम किया।

इसके अतिरिक्त, कवि श्री जी ने 'धर्मवीर सुदर्शन' और 'सत्य हरिश्चन्द्र'

नामक धार्मिक उपाख्यानो को प्रबन्ध-काव्य का रूप देकर भारत के स्वर्णिम अतीत की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

कवि श्री जी समाज मे चोटी के लेखक हैं। आपके लेख जैन-अजैन पत्रो मे प्रकाशित होते रहते हैं, जो विषय, भाषा और भाव-सौष्ठव की दृष्टि के साथ-साथ आधुनिकता के पुट से भी अनुप्राणित होते हैं। उनके लेखो का अनुशीलन-परिशीलन करने से यह साफ हो जाता है कि—"युग और लेखक दोनो अन्योन्याश्रित हैं। युग लेखक से मागता है और लेखक युग से लेता है। दोनो का पारस्परिक आदान-प्रदान चलता है। जिस दिन युग और लेखक के मन, वाणी और कर्म एकाकार हो जाते हैं, उसी दिन समाज बदल जाते है और रूढ़ियाँ आसन छोडने को मजबूर हो जाती हैं।"

साथ ही आपका चिन्तनमूलक प्रत्येक लेख इस बात की स्पष्ट घोषणा करता है कि आपको जहाँ प्रगाढ पाण्डित्य प्राप्त है, वही उन्मुक्त सहज दृष्टि भी मिली है। इस प्रकार का मणिकाञ्चन योग प्राय नही मिलता। सचमुच उनकी लेखनी और वाणी दोनो ने धार्मिक श्रद्धा को जडता के पजे से छडाया है। समाज के सर्वाङ्ग मे गहराई से पैठे हुए रूढिविष को निर्भीक आलोचना के इंजक्शन से निष्क्रिय कर देने की फलवती चेष्टा की है। उन्होंने अपने मजे हुए उदार विचारो से समाज की उजडी हुई बगिया मे नव्य-भव्य भावो के सुरभित पुष्प खिलाये है।

सत्रह-अठारह वर्षों से आपने कविता-ससार मे सन्यास लेकर जैन एव इतर सस्कृति के रचनात्मक क्षेत्र मे अवतरण किया और सास्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा शास्त्रीय ग्रन्थो का गहन चिन्तन-मनन करके "सामायिक-सूत्र" पर एक मौलिक तथा मार्मिक भाष्य लिखा, जिसकी समूचे जैन-जगत ने एकस्वर होकर प्रशसा की और साम्प्रादायिकता का भेद-भाव भुला कर खुले हृदय से उसे अपनाया।

श्रमण-सस्कृति के आप प्रमाणिक विद्वान् है। श्रमण सस्कृति के आप केवल पण्डित ही नही हैं, वल्कि स्वय भी उसी परम्परा मे पलते हैं। उनका श्रमण-सस्कृति का अध्ययन बहुत विशाल तथा गहन है। वे कुछ आगम-साहित्य पर आश्रित तथ्यो को ही श्रमण-सस्कृति के अध्ययन का प्रधान साधन

नहीं मानते। श्रमण-संस्कृति इन तथ्यो से बडी है, महान् है। उनकी तीक्ष्ण दृष्टि साम्प्रदायिक आवरणो को भेद कर सत्य तक पहुँच जाती है। जिन लोगो ने उनकी "जैनत्व की झाँकी" और "श्रमण-सूत्र" पढे है, वे ही इस बात की सचाई का अनुभव कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त आप एक मजे हुए प्रवचनकार भी है। मधुर मुस्कान के साथ आपके भाषणो की ओजस्विता जन-मन-नयन को चुम्बक की राह की तरह बलात् अपनी ओर खीच लेती है। जो एक बार भी उनका धार्मिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक एव राष्ट्रीय भावनाओ से ओत-प्रोत भाषण सुन लेता है वह हमेशा के लिए उनका बन जाता है। ऐसा जादू है उनकी ओजस्विनी वाणी मे। अहिंसा-दर्शन सत्य-दर्शन, अस्तेय-दर्शन, ब्रह्मचर्य-दर्शन, अपरिग्रह दर्शन और जीवन-दर्शन मे आपके मौलिक एव ओजपूर्ण प्रवचनो का संकलन है जिन्होने जैन तथा इतर समाज मे अच्छा आदर पाया है। 'अमर-वाणी' मे आपका स्वतन्त्र चिन्तन मानवीय जीवन का सर्वांगीण विश्लेपण है और "विचारो के नये मोड" मे आपके आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्रान्तिकारी विचारो की नयी दिशाएँ हैं। "प्रकाश की ओर" "साधना के मूलमंत्र तथा अमर आलोक मे आपश्री जी के प्रौढ एव चिन्तन मूलक मौलिक प्रवचनो का सारतत्त्व है और "पर्युपण-प्रवचन" मे पर्युपण-पर्व की मूल भावनाओ का मार्मिक विश्लेपण एव मन्थन है।

अप्रैल १९५२ मे सादडी (मारवाड) मे अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन साधुओ का जो महासम्मेलन हुआ था, उसकी अप्रत्याशित सफलता का सर्वाधिक श्रेय आप ही को है। विरोधी धडियो को एकसूत्र करने मे आपने एक सफल माध्यम का काम किया और अपने व्यक्तित्व, विद्वत्ता मोहनकारिणी वाक्शक्ति तथा सामंजस्य बिठाने की नयी सूझ-बूझ से समूचे साधु-वर्ग को एकता के सूत्र मे आबद्ध करके जैन-इतिहास मे एक नये अध्याय का सूत्रपात किया। सब-कुछ करके भी आप सर्वथा अलग-थलग निर्लेप नारायण रहे—यह आपकी स्थित-प्रज्ञता एव शाश्वत स्थिति का परिचायक है।

जैन-जगत् के इन चमकते हुए व्यक्तित्व के विषय मे इतना ही कहना है कि सब जागरण और सब सुधार के इस क्रान्त युग मे जिन विचार-स्रोत को

इस महामहिम आत्मा ने समाज की मरुभूमि की ओर उन्मुख किया, उसने समाज के मन को नया जीवन और उसके साहित्य को नया स्वर दिया है। वे वर्तमान युग मे समूचे स्थानकवासी समाज की आँख हैं। और, यदि मुझे कहने की छूट दी जाय, तो मैं उन्हे 'प्रकाश-स्तम्भ" कहने मे भी नहीं सकुचाऊँगा।

समूचा स्थानकवासी जैन-समाज आज जिनकी ओर प्रकाश और प्रेरणा के लिए आशा-भरी दृष्टि से देख रहा है, उस 'अमर' ज्योति-रत्न के चरणो मे शतशः-सहस्रशः वन्दन !!!

भविष्य मे, समाज मे निर्माणात्मक स्थिति, युग-परिवर्तन एव नूतन साहित्य-सृ के आप ही एक शत-शत आशाओ के मेरुमणि हैं।

परमेष्ठी-महिमा

[तर्ज—आसावरी राग]

जय जय जय जयकार, परमेष्ठी !

जय जय भविजन-बोध-विधाता, जय जय आतम शुद्धि-विधाता ।

जय भव-भंजन-हार, परमेष्ठी !

जय सब संकट चूरण-कर्ता, जय सब आशा पूरण कर्ता ।

जय जग-मंगलकार, परमेष्ठी !

तेरा जाप जिन्होंने कीना, परमानन्द उन्होंने लीना ।

कर गये खेवा पार, परमेष्ठी !

लीना शरना सेठ सुदर्शन, सूली मे वन गया सिंहासन ।

जय जय करें नर-नार, परमेष्ठी !

द्रौपदी-चीर सभा मे हरना, तब तेरा ही लीना शरना ।

बढ़ गया चीर अपार, परमेष्ठी !

सोमा ने तुम सुमिरन कीना, सर्प फूल-माला कर दीना ।

वर्त्ते मङ्गलाचार, परमेष्ठी !

'अमर' शरण मे सप्रति आया, कर्मों के दुःख से घबराया ।

शीघ्र करो उद्धार, परमेष्ठी !

सफल जीवन की माँग

[तर्ज—झनियर वाला मेरा साईं ·· ·· ····]

जीवन सफल बनाना-बनाना प्रभू वीर जिनराज जी ।
मन-मन्दिर मे घुप है अन्धेरा,
ज्ञान की ज्योति जगाना जगाना प्रभू ··· · ·
धधक रहा है द्वेष-दावानल,
प्रेम-पयोधि बहाना, बहाना प्रभू · ···
अगम भँवर मे नैया फँसी है,
झट-पट पार लगा लगा प्रभू · ··
न्याय-मार्ग का पक्ष न छोड़ूँ
चाहे दुश्मन हो सारा जमाना, जमाना प्रभू ··
प्राणी-मात्र को सुख उपजाऊँ,
चाहूँ न चित्त दुखाना, दुखाना प्रभू · ·
मैं भी तुझ-सा जिन बन जाऊँ,
परदा दुई का हटाना, हटाना प्रभू ··
'अमर' निरन्तर आगे बढ़ूँ मे,
कर्तव्य-वीर बनाना, बनाना प्रभू ·· ···

मैं क्या हूँ ?

मैं न हूँ किसी तरह भी हीन,
अतल, अमल, आनन्द-जलधि का, मैं हूँ सुखिया मीन ।
ससारी झझट का चहुँ दिश बिछा हुआ है जाल,
बिछा रहे, मुझको न कभी भी होता तनिक खयाल,
मैं तो हूँ अपने मे लवलीन !

आत्म-लक्ष्य से मुझे डिगाते हो अरबो आघात,
वज्र प्रकृति का बना हुआ हूँ, क्या डिगने की बात,
स्वप्न मे भी न बनूँगा दीन !
भवसागर से तैर रहा हूँ, हुआ समझ लो पार,
क्या चिंता अब खुला, खुला वह, मोक्षपुरी का द्वार,
विश्व मे मैं हूँ इक स्वाधीन !
हानि-लाभ हो, स्तुति-निंदा हो, मान और अपमान,
अच्छा-बुरा भले कुछ भी हो, मैं सबसे बेभान,
कौन क्या देगा लेगा छीन !
अन्धकार विध्वस्त हुआ है, बढा ज्ञान-आलोक,
'अमर' शाति-सन्देश सुनेगा, सकल चराचर लोक,
समुन्नत हूँ मैं नित्य नवीन !

मन की कामना

[तर्ज—यहाँ बदला वफा का ··· ·· ··]

प्रभो मेरा हृदय गुण-सिन्धु अपरम्पार हो जाए,
सफल सब ओर से पावन मनुज अवतार हो जाए।
खुशी हो रज हो कुछ हो, रहूँ मैं एक-सा हरदम ;
हृदय के यन्त्र पर मेरा अटल अधिकार हो जाए।
जरा-सा भी मिले मुझ मे न ढूँढा चिन्ह ईर्ष्या का ,
परोन्नति देखकर दिल हर्ष से सरशार हो जाए।
अह के और त्व के द्वन्द्व हो सब दूर मुझमे से ;
भुला दे स्वर्ग को वह प्रेम का ससार हो जाए।
सचाई का निभाऊँ प्रण, नही पीछे हटूँ हर्गिज ;
भले ही खण्डश इस देह का सहार हो जाए।

दुखी को देख मैं दुखित बनूँ सेवा में जुट जाऊँ ;
दया का दिल के हर-कण में मधुर संचार हो जाए।

मुझे स्वर्गीय सुख-साम्राज्य की कुछ भी नहीं इच्छा,
"अमर" तो बस प्रभो तव नाम पर बलिहार हो जाए।

कर्मशील मनुष्य

[तर्ज—तेरे कूचे मे अरमानों ... " ...]

मनुष्य हूँ मैं यहाँ मनुष्यत्व का उपहार लाया हूँ,
हिमालय-सा अतुल कर्तव्य का शिर भार लाया हूँ।

मिलेगा जो मुझे, आनन्द-मद से झूम जाएगा,
हृदय में प्रेम-वीणा की मधुर झनकार लाया हूँ।

सुगंधित पुष्प हूँ, खिलकर सुगंधित विश्व कर दूँगा ;
कभी भी कम न हो वह गन्ध का भंडार लाया हूँ।

सताएँगे मुझे क्यों कर कुटिल रिपु काम क्रोधादिक,
चमकती ज्ञान की तीक्ष्ण अटल तलवार लाया हूँ।

पड़े आपत्तियों के वज्र शिर पर क्यों न कितने ही,
हटूँगा इंच ना पीछे विजय का हार लाया हूँ।

मिटेंगे देश, कुल और जाति के सब भेद जग में से,
अखिल भू पर बना नर-जाति का परिवार लाया हूँ।

बदल दूँगा सभी हाहा—भरी यह नर्क की दुनिया,
'अमर' सुन्दर खिचकर स्वर्ग का संसार लाया हूँ।

अन्तर्जागरण

[तर्ज—ओ जीने वाले ! हँसते हँसते ... .]

हठीले भाई ! जाग-जाग अन्तर मे ।
छाई काली घटा घमड के,
आया अन्धड प्रबल उमड के,
ज्ञान-दीप बुझने ना पाए, सावधान अन्दर मे !
भोगो मे ही जीवन गाला,
लक्ष्य न अपना तनिका सभाला,
मानव क्या वनमानुष ही है, समझ नही वन्दर मे ।
साथी तेरे गए अगाडी,
तू क्यो सोता पडा अनाडी,
देख ! पिछडना ठीक नही है, जीवन के सगर मे !
कायर बनकर रोता क्या है ?
'अमर' रुदन से होता क्या है ?
कमर बाध कर उठ, छुपा है, शकर इस ककर मे !

मूर्ख मन

[तर्ज—अय दिल मुझे ऐसी जगह ले चल .]

मूर्ख मन ! कब तक जहाँ मे अपने को उलझायगा,
ध्यान श्री जिनराज के चरणो मे कब तू लायगा ?
भूल कर निज लक्ष्य को जड भूत का चेरा बना,
क्या इसी भ्रम-कल्पना मे तू खुदा बन जायगा ?
धर्म का धन छोडकर पूँजी बटोरी पाप की,
ढोग के बल कब तलक धर्मात्मा कहलायगा ?

दीन को दाना न देता हज्म करता सब स्वयं,
जायगा परलोक मे तो तू वहाँ क्या खायगा ?
जब कि तू होता नही औरो के संकट मे शरीक,
कौन शठ ! तुझ को यहाँ फिर प्रेम मे अपनायगा ?
बन्दरो को भी उछलने-कूदने मे मात दी,
मानवी रग-ढग मे कब अपने को तू ठहरायगा ?
जोड नाता वीर से, ले शान्ति की धूनी रमा,
अन्यथा पाखड मे फँस कर 'अमर' क्या पायगा ?

जीवन में मधु घोल

[तर्ज —बाबा मन की आँखें खोल ' ']

खोल मन ! अब तो आँखे खोल !
उठा लाभ कुछ मिला हुआ है, जीवन यह अनमोल !!
जग-पति के चरणो मे सोजा,
प्रेम-सुधा पी पागल होजा ;
अपनेपन मे अथ इति खोजा,
भ्रम की मदिरा ढोल !
देख दुखी को झट हिल जा तू,
सेवा मे तिल-तिल पिल जा तू ;
अद्वैती बन संग मिल जो तू,
बोल न कुछ भी बोल !
'अमर' अमर-पथ पर पग धर ले,
दुस्तरतम भवसागर तर ले ;
अन्दर-बाहर खुशबू भर ले,
जीवन मे मधु घोल !

सन्त-महिमा

[तर्ज—आ जा मेरी बर्बाद .....]

जगत के तारने वाले जगत मे सन्त-जन ही हैं,
उन्हे उपमा कहो क्या दे, अपन से वे अपन ही हैं।
सकल सुख-भोग तज करके, जगत-कल्याण को निकले,
मनोहर महल जिनके फिर भयकर शून्य वन ही है।
अटल सयम-सुमेरू के शिखर पर सन्त बैठे है,
जिधर देखो उधर उनके अमन के गुलचमन ही हैं।
सुधा की शोध मे दुनिया बनी फिरती है क्यो पागल,
सुधा तो सत लोगो के सदा मङ्गल वचन ही है।
कुल्हाडी से कोई काटे, कोई आ फूल बरसाये,
खुशी से दे दुआ यकसा, अजब सारे चलन ही है।
स्वयं पर वज्र भी टूटे तो हँसते ही रहेगे हाँ,
दुखी को देख रो उठते, दया के तो सदन ही है।
हृदय की हूक से हर दम हजारो बार वन्दन हो,
'अमर' अमरत्व—दाता सत के पावन चरन ही है।

दिल की चाह

[तर्ज—आये भी वोह गये भी ......]

वीर जिनेश्वर आपका सच्चा भगत बन जाऊँ मैं;
पाप-भरी जग-वासना दिल से समस्त हटाऊँ मैं।
शान्त हृदय मे द्वेष की, धधके न कभी चिनगारियाँ,
शत्रु-जनो पै भी सदा, प्रेम की गगा बहाऊँ मैं।

दीन-दुखी को देख कर आँसू बहाऊँ, रो उठूँ,
जैसे बने सर्वस्व भी देके सुखी बनाऊँ मैं।
कैसा भी भीषण कष्ट हो, प्रण से न तिल-भर भी डिगूँ;
हँसता रहूँ कर्तव्य की वेदी पै शीश चढाऊँ मैं।
छोटे-बडे का भेद तज सेवक बनूँ मैं विश्व का,
अपने, विगाने की विष-भरी दिल से दुई मिटाऊँ मैं।
धर्म की लेके आड मैं, मत-पक्ष करूँ न कभी जरा,
सत्य जहाँ भी मिले वही, पूर्णतया झुक जाऊँ मैं!
स्वर्ग तथैव च मोक्ष की इच्छा नही कुछ भी 'अमर',
अब तो यही है कामना, जीवन सफल बनाऊँ मैं।

खरी बातें

[तर्ज—गली तो चारो बन्द पडीं]

पापो मे मनवा घूम रहा, तेरा मोक्ष-गमन कैसे होय ?
पामर पीडित दीन-जनो को सता-सता खुश होय,
करुणा तो अणु-मात्र भी रे! आवे कभी ना तोय।
बोले झूठ सदा बढ-बढ कर खुश हो थूक विलोय;
निकले ना मुख से कभी रे! सत्य वचन कही कोय!
सब ही कामो मे चोरी का करता काम छुपोय,
झूठे लालच के लिए रे! दे निज आतम डुबोय।
दूषित निज मानस अति करता सुन्दर नारी जोय,
ब्रह्मचर्य-व्रत खोयके रे! सब ही व्रत दिये खोय।
कौडी-कौडी जो भी जोडे धरती दावे सोय,
दान-पुण्य करती दफा रे! हृट जावे बस रोय!

खोटी संगत बैठ बढावे राग-द्वेष नित दोय;
सत्संगति मे बैठता रे! आवे लज्जा तोय!
फल अच्छा चाखा चहे तो बीज भी अच्छा बोय
ओष्ठ 'अमरता' दे रही रे! ले लेना दिल धोय।

क्या चाहिये ?

[तर्ज—अय दिल मुझे ऐसी जगह ले चल ....]

विश्वपति! तेरे चरण मे ध्यान मुझको चाहिये,
'मैं हूँ तेरा भक्त' यह अभिमान मुझको चाहिये।
कर्ण और जिह्वा तेरी ही भक्ति मे अर्पण करू,
दोनो पै बस तेरा ही गुण-गान मुझको चाहिये।
बेखुदी ऐसी हो जिससे भूलूं अपने को भी मैं,
सिर्फ तेरा ही हृदय मे भान मुझको चाहिये।
स्वर्ग के सौन्दर्य पर सानन्द ठोकर मार दूं,
वासना-जय की अनोखी शान मुझको चाहिये।
शत्रुओ को भी लखूं शुभ प्रेम-भीनी आँख से,
हर तरफ बस प्रेम का सामान मुझको चाहिये।
देवता दुख से बचाने को न आए मेरे पास,
सत्य-व्रत का पारखी शैतान मुझको चाहिये।
और कुछ वरदान की बिलकुल 'अमर' इच्छा नही,
धर्म पर मिटने का इक वरदान मुझको चाहिये।

वीर के पथ पर

[तर्ज—कृष्ण दे द्वारे उत्ते]

वीर प्रभू का पथ पै, कदम बढाते जाना,
　　मानव-जन्म अमोलक सफल बनाते जाना।
प्रेम के साथ रहना, सब मीठी, कडवी सहना,
　　उत्तर मे कुछ ना कहना, दिल से भुलाते जाना।
गर्व न कुछ भी करना, जग है बस जीना-मरना,
　　होकर के नम्र विचरना, शीश झुकाते जाना।
आवे जो दर पै दुखिया, शीघ्र बनाना सुखिया,
　　सेवा मे बन कर मुखिया, कीर्ति कमाते जाना।
पथो का जाल हटाके, मैं-तू का भेद मिटाके,
　　सबको इक साथ जुटाके, सत्य सुनाते जाना।
मन्दिर है प्रभु का नर-तन, करले यदि तन-मन पावन,
　　बनकर तू 'अमर' सुभगवन, दर्श दिखाते जाना।

जैसी करनी, वैसी भरनी

[तर्ज—अफसाना लिख रही ...]

बोवोगे जैसा बीज तरु वैसा लहरायेगा,
　　जैसा करोगे वैसा ही फल आगे आयेगा।
कूँए मे एक वार कुछ भी बोल देखिये,
　　जैसा कहोगे वैसा ही वह भी सुनायेगा।
जोडोगे हाथ खुद तो दर्पण-बिम्ब जोडेगा,
　　चाँटा दिखाओगे तो झट चाँटा दिखायेगा।

कांटा बनोगे तुम किसी की राह मे अड कर,
कांटा बनेगा एक दिन वह भी सतायेगा।
थूकोगे जो नादान होकर आफताब पर,
वापिस गिरेगा मुँह पर आ, दुनिया हँसायेगा।
चाहते है लोग तुमको कैसा, जानना है क्या?
अपने हृदय मे पूछिये वह खुद बतायेगा।
संसार मे मीठे 'अमर' बन कर सदा रहना।
आदर्श नर-जीवन तुम्हे ऊँचा उठायेगा।

विश्व-विद्यालय

[तर्ज—अफसाना लिख रही ']

यह विश्व है विद्यालय, तुम छात्र बन जाओ
जड शिक्षको मे सीख लो, कुछ योग्य बन जाओ।
उदयास्त-ज्यो सुख-दुख मे सम-रूप ही रह कर,
पाखड—तम—महारकारी 'सूर्य' बन जाओ।
दीनो को दीजे सान्त्वना, नित दान-जल बरसा,
निस्वार्थ जग-जीवन-प्रदाता 'मेघ' बन जाओ।
दीखे जहाँ सज्जन वही चरणो मे गिर जाना,
मधु गध-गुण-लोभी हठीले 'भृग' बन जाओ।
निष्पक्ष निर्णय कीजिये सच-झूठ का हरदम,
जल-दुग्ध मे से दुग्ध-ग्राही 'हस' बन जाओ।

निज शत्रुओं पर भी सदा उपकार ही करना,
पत्थर के बदले में फल-प्रद 'वृक्ष' बन जाओ।
कॉलेज तो केवल 'अमर' बी० ए० बनाता है,
लेकिन यहाँ से शीघ्र ही 'नररत्न' बन जाओ।

महावीर ने क्या किया?

[तर्ज—कृष्ण दे द्वारे उत्तो ·· ·· ·]

वीर जिनेश्वर! सोई दुनियाँ जगाई तूने;
ज्ञान की मधुर सुरीली वंशी बजाई तूने!
भारत की नैया डोली,
मृत्यु आ सिर पर बोली,
स्वर्ग से आकर भगवन्! पार लगाई तूने!
पशुओं पै छुरियाँ चलती,
रक्त की नदियाँ बहती;
करुणा के सागर करुणा-गंगा बहाई तूने!
देवों की करना पूजा;
बस काम था और न दूजा,
मानव की अटल प्रतिष्ठा जग में जताई तूने!
पंथो का झूठा झगड़ा,
जनता का मानस बिगड़ा;
भेद-सहिष्णुता की ज्योती जगाई तूने!
पाप का पंक धोना,
नर से नारायण होना;
'अमर' अमर पद की राह दिखाई तूने!

जागो, उठो

[तर्ज—अफसाना लिख रही ' •]

अफसोस, तुम राहगीर फिर बेहोश होते हो,
जागो हुआ परभात क्यो यह वक्त खोते हो ?
मारग विकट घन-घोर वन, फिर दूर चलना है,
क्यो पाप की गठरी का बोझा सर पै ढोते हो ?
चोरो की नगरी है, इसमे सावधानी से,
रहना सभल करके जरा, क्यो मस्त होते हो ?
ये इन्द्रियां है चोर, मन सरदार है इनका,
कह दो इन्हे हम देखते है, क्या चुरोते हो ?
यहाँ लुट गये लाखो सयाने भूल मे आकर,
सिर पीट कर रोते गए क्यो तुम भी रोते हो ?
बस धर्म-रूपी रत्न - मजूषा ही सुख देगी,
इसको लुटेरो से 'अमर' क्यो ना छुपोते हो ?

मनुष्य क्या ?

[तर्ज—इन्सान क्या नसीब की " •]

मनुष्य क्या, अदृष्ट की जो ठोकरे न सह सके,
मनुष्य क्या जो संकटो के बीच खुश न रह सके।
मनुष्य क्या, तूफान से जो क्षुब्ध भीम-सिन्धु में,
उठा के शीश वेग से न लहर बन के बह सके।
मनुष्य क्या, जो चमचमाते खजरो की छाया मे,
हाँ, मुस्करा के, गर्ज के न सत्य बात कह सके।

मनुष्य क्या, जो रोते-रोते चल बसे जहान से,
दिखा प्रचण्ड आत्म-बल न भीष्म राह गह सके।
मनुष्य क्या, जो वासना का पुष्पहार पा 'अमर',
हिमाद्रि-शृङ्ग से भी ऊँचे अपने प्रण से ढह सके।

अमर जीवन

[तर्ज—गम का फसाना किसको ·· ···]

अरे आ बशर! कुछ तो नेकी कमा जा,
जहाँ मे सदाकत का झण्डा लहरा जा।
बने दोस्त दुनिया मिले सब गले से;
यहाँ से वहाँ प्रेम-गंगा बहा जा।
खरी-खोटी सबकी सुने जा, बढ़े जा;
खयाले खुदा मे खुदी को मिटा जा।
बुरी आदतो का न नामो—निशा हो,
सदाचार पै सारे जग को चला जा।
धरा क्या जहालत भरे फलसफे मे,
बडा भोला-भाला तू सबसे कहा जा।
उठा अपना आपा ऊँचाई पै इतना;
फरिश्तो को भी अपने कदमो झुका जा।
जपे तेरी माला प्रजा लाखो बरसो,
'अमर' नाम ऐसा अमर तू बना जा।

भक्तों से परेशान भगवान्

[तर्ज—यहा बदला वफा का ··]

मनुष्यो ! क्यो मुझे जबरन स्वय-जैसा बनाते हो,
नमस्ते है तुम्हे, तुम तो मेरी प्रभुता घटाते हो !
पिता हूँ विश्व का फिर भी समझते बाल नन्हा-सा,
लिटा कर पालने मे लोरियाँ दे-दे सुलाते हो।
नही लगती मुझे सर्दी, नही लगती मुझे गर्मी,
उढाते क्यो दुशाले और पखे क्यो ढुलाते हो ?
स्वय मैं शुद्ध निर्मल हूँ तथा औरो को करता हूँ,
समझ का फेर है प्रतिदिन किसे मल-मल न्हलाते हो ?
भला मुझ निर्विकारी का विवाह क्या रग लायेगा,
बिछा कर पुष्प शय्या प्रेम से किसको सुलाते हो ?
नही हूँ मैं तुम्हारे मिष्ट मोहन भोग का भूखा,
वृथा ही नाम ले मेरा स्वय मौजे उडाते हो ?
दया करके मुझे नीचे गिराना छोड दो भक्तो !
'अमर' मम तुल्य बन कर क्यो न मेरे पास आते हो ?

ओ मानव !

[तर्ज—इक दिल के टुकड़े हजार ·····]

ओ मानव ! तूने मानवता का कुछ भी किया सुधार नही,
जीवन अनमोल, मिला हा ! फिर भी कुछ भी लीना सार नही।
भोगो के झूले पर झूला, महिषासुर-जैसा तन फूला;
अगली दुनिया का पथ भूला, सयम का तनिक विचार नही।
दीनो को खूब सताता है, निर्दय हो रक्त बहाता है,
जालिम क्यो जुल्म कमाता है, जग मे जिन्दा तलवार नही।

लक्ष्मी के ढेर लगाये क्या, मन चाहे मजे उडाये क्या,
सौ-सौ उत्पात मचाये क्या, भवसागर मे निस्तार नहीं।
पापो की सिर पर गठडी है, बन्धन मे आत्मा जकडी है,
दोजख की लाइन पकडी है सकट का कुछ भी पार नहीं।
ससार की झूठी माया है, वैभव बादल की छाया है,
कर धर्म 'अमर' बतलाया है, प्रभु का शुभ नाम विसार नहीं।

धर्म की पूँजी

[तर्ज—जीवन सफल बनाना]

धर्म की पूँजी कमाले, कमा ले, जीवा। जीवन बन जायगा।
जीवन-पट बेरग है कब से ?
सयम-रग चढा ले, चढा ले जीवा।
बागे-जहाँ मे अपना जीवन,
पुष्प-सुगन्ध बना ले, बना ले जीवा।
अखिल विश्व के दलित-वर्ग की,
सेवा का भार उठाले, उठाले जीवा।
सोया पडा है अन्तर चेतन,
सत्सग बैठ जगा ले, जगा ले जीवा।
मोह-पाश के दृढ बन्धन से,
अपना तू पिंड छुडा ले, छुडा ले, जीवा।
हो तू भला इतना कि रिपु भी,
चरणो मे शीश झुकाले, झुकाले जीवा।
राग-द्वेष का जाल बिछा है,
दूर से राह बचा ले, बचा ले, जीवा।
'अमर' सुयश के वाद्य बजेंगे,
सत्य की धूनी रमा ले, रमा ले, जीवा।

कलियुगी मित्र

[तर्ज—कहीं सुख है कहीं दुःख है ......]

जमाने हाल ने कैसा भयकर फेर खाया है,
जहा मे मित्रता के नाम पर अन्धेर छाया है।
जहाँ चाँदी भवानी की छना छन हो तिजोरी मे,
वहाँ झट मित्र-दल ने कूद दृढ आसन जमाया है।

कुपथ की ओर ले जाते कराते सैर चकलो का,
सिवा राडो व भाडो के न किस्सा अन्य भाया है।
पडी जब आफते भारी फसा हतभाग्य गर्दिश मे,
वनी के यार सब भागे, न ढूढे खोज पाया है।

सुबह बजार मे घूमे परस्पर डाल गल बाहे,
दुपहरी मे जो बिगडी शाम को वारन्ट आया है।
जरा भी गुप्त कोई बात गर निज मित्र की पाएँ,
करे बदनाम खुल्ला ढोल गलियो मे बजाया है।
भलाई ऐसे मित्रो से 'अमर' क्या खाक होवेगी,
वचन-मन मे कि जिन के रात-दिन-सा भेद पाया है।

कर्त्तव्य का भान

[तर्ज—अय दिल मुझे ऐसी जगह ले चल ...]

ओ मनुज ! कर्त्तव्य का कुछ भान होना चाहिए,
सच्चे अर्थों मे तुझे इन्सान होना चाहिए !
जिन्दगी और मौत दोनो आनी-जानी चीज है,
पूर्वजो की आन पर बलिदान होना चाहिए !

क्यो वनाया दिल को मुर्दा, इगमे आत्मोद्धार का,
शान्त हो न कदापि वह तूफान होना चाहिए।
दीन-दुखिया जव कभी कोई भी आये तेरे पास,
प्रेम से तव घर मभी का स्थान होना चाहिए।
श्रेय-प्रेय मिले हुए है विश्व के हर काम मे,
श्रेय की ही ओर हरदम ध्यान होना चाहिए।
हर किसी भी देश का या धर्म का महापुरुष हो,
ऐ 'अमर' दिल मे तेरे सम्मान होना चाहिए।

पूजा का अधिकारी कौन ?

[तर्ज—मै न हू किसी तरह भी हीन . .]

कौन जन महिमा का आगार ?
प्राप्त हुआ है किसे जगत मे पूजा का अधिकार ?
छोटे-से-छोटे जीवो पर रखता कृपा अपार,
अखिल विश्व मे सदा बहाता भ्रातृ-भाव की धार,
प्रेम मे डूवा सव ससार।
द्वेष-क्लेश का लेश नही है, नही घृणा कुविचार,
स्वच्छ हृदय है, उठे कही भी नही जरा कुविकार,
पूर्ण है सयम का अवतार।
कैसा भी कोई भी अपना करे क्यो न अपकार,
शान्ति-पूर्ण उपकार रूप मे करता है प्रतिकार,
क्षमा का खुला रखे नित द्वार।
अपना-पर का भेद मिटाकर करले हृदय उदार,
दान-दक्षिणा के पथ पर सव लुटा दिये भडार,
विश्व का बने एक आधार!

मन-वाणी और कर्म सभी मे अमृत का सचार,
आस पास मे लाखो कोसो नही तनिक भी क्षार,
"अमर" है मृत्यु-जय हुँकार ,

दया की महत्ता

[तर्ज—पछी बावरिया क्यो ना]

दया विन बावरिया ! हीरा जन्म गवाये ,
कि पत्थर-से दिल को क्यो ना फूल बनाये ?
कोमलता का भाव न मन मे, फिर क्या सुन्दरता से तन मे ,
जीवन विष बरसाये ।
दीन-दुखी की सेवा करले, पाप-कालिमा अपनी हर ले ,
तिहुँ-जग मङ्गल गाये ।
धन-लक्ष्मी का गर्व न करना, आखिर को सव तज कर मरना,
पर-हित क्यो न लुटाये ।
यह जीवन है एक कहानी, पाप-पुण्य है शेष निशानी,
"अमर" सत्य समझाये ।

अन्तिम कामना

[तर्ज—ओ दूर जाने वाले ······]

भगवन् ! प्रसन्न हम हो, जब प्राण तन से निकले,
आदर्श विश्व के हो, जब प्राण तन से निकलें ।

उवयास्त-राज्य ठुकरा, सानन्द सत्य कारण,
फाँसी पै झूलते हो, जब प्राण तन से निकले।
बन न्याय-पक्षी, हस्ती अन्याय की मिटाने,
सिर हाथ ले खडे हो, जब प्राण तन से निकले।
रक्षार्थ जाति-रिपुभी, जो भी शरण मे आये,
जी-जान होमते हो, जब प्राण तन मे निकले।
भूखे-अपाहिजो को, सर्वस्व दे दिलाकर,
उपवास हो रहे हो, जब प्राण तन से निकले।
ऋण मातृ-भूमि का सब, डके की चोट देकर,
जय-घोष गूँजते हो, जब प्राण तन से निकले।
हँसते हो हाँ 'अमर' हम, रोता हो देश सारा,
मर कर भी जी रहे हो, जब प्राण तन से निकले।

संसार में क्यों आये ?

[तर्ज—कव्वाली, आगई जब वो घड़ी तो है ....]

नाम पैदा ना किया, ससार मे आया तो क्या ?
दिल न दिलवर से लगाया, दिल अगर पाया तो क्या ?
भर लिये धन के खजाने ऐशो-अशरत खूब की,
दीन को यदि दान देते हाथ थर्राया तो क्या ?
दु ख मे प्रभु-भक्त होकर नित्य प्रभुजी को रटा,
मस्त हो सुख-भोग मे प्रभु-नाम विसराया तो क्या ?
भीम सा बल मे हुआ, लडता फिरा हर एक से,
धर्म-रक्षा के समय पग पीछे सरकाया तो क्या ?

सत्य का प्रण का धनी पक्का रहा आराम मे,
कष्ट मे निज लक्ष्य भूला और हिर्राया तो क्या ?
बैठ खल-जन-मण्डली मे गप्प हाँकी खूब ही,
दो घडी सत्सङ्ग मे गर आते शर्माया तो क्या ?
वक्त पर इक स्वेद-बिन्दु का भी श्रम कुछ ना किया,
ऐ 'अमर' बेवक्त यदि निज शीश कटवाया तो क्या ?

मनुष्य बनो

[तर्ज—घटा घनघोर घोर]

मनुष्य बन लगा दौड, विषयो से मुख मोड,
भूल न जाना, ओ प्राणी ! मन समझाना।
जीवन है इक लहर सिंधु की, इत आये, उत जाये,
धर्म-कर्म कुछ किया न जिसने, वह पीछे पछताये,
नरक मे मिले ठौर, पावे दुख अति घोर,
मन कलपाना, ओ प्राणी !
पाकर चन्द चाँदी के टुकडे, काहे जोर दिखाये,
कौडी सङ्ग चले ना तेरे, किस पर शोर मचाये,
आवे जो द्वारे दुखी, शीघ्र बनाना सुखी,
जग-यश पाना, ओ प्राणी !
बडे-बडे राजा महाराजा, आए जग पर छाए,
लगा काल का चपत अन्त मे ढूँढे खोज न पाए,
तू तो सीधा बन चल, काहे करे कल-कल ?
गर्व नशाना, ओ प्राणी !
भक्ति-भाव से झूम-झूम कर क्यो न प्रभु गुण गाए ?
शुष्क-हृदय मे 'अमर' प्रेम का रस क्यो न बरसाए ?
पाप-मल सारे छूटे, दुख-द्वन्द सभी हटें,
जिन बन जाना, ओ प्राणी !

मन की तरग

[तर्ज ओ दूर जाने वाले " " . .]

अद्‌भुत दशा कहूँ क्या, कैसी हुई है मन की,
सारी विगाड डाली प्रभुता स्वय मनन की !
पल-भर मे नरक के और स्वर्गों के जाल बुनता,
पल मे उडान लेता, आशा-विकल गगन की !
कौडी पै मर रहा है, सब होश भूल बैठा,
चोरो ने ली उडा है, गठरी अमूल्य धन की !
क्या खाऊँ, पीऊँ क्या क्या पहनूँ, रहूँ कहाँ मैं ?
चिन्ता मे घुल रहा है, सुध बुध रही न तन की !
भोगो की वासना के जगल मे घूमता है,
मिट्टी पलीद की है, जिनराज के भजन की !
अन्दर है राक्षसो-सा जीवन महा भयकर,
वाहर का ढोग क्या है बस देव-सी लगन की !
ओ भक्त ! देखता क्या, मन पर मवार होजा,
आशा 'अमर' उठी गर, दिल मे प्रभू मिलन की !

अतीत की नारियाँ

[तर्ज—आये भी वोह गये भी ....]

भारत मे कैसी थी एक दिन शीलवती कुल नारियाँ.
धर्म के पथ पे जो हुई हँस-हँस के वलिहारियाँ।
राजा विराट के महल मे पचकी रही थी द्रौपदी,
कीचक कुमौत मरा वृथा, खाली गई सब वारियाँ।

रावण-से दैत्य की कैद मे सत्यवती सीता रही,
झेले भयकर कष्ट पर मानी नही बदकारियाँ।
जौहर हुआ चित्तौड मे गौरव बढ़ा मेवाड़ का,
जिंदा हजारो जल मरी हँसती हुई सुकुमारियाँ।
लक्ष्मी थी लक्ष्मी हिन्द की, खूब लडी रण-भूमि मे,
देश के हित जोगन बनी छोड के महल अटारियाँ।
रानी थी पृथ्वीराज की कैसी भयङ्कर शेरनी,
कापा था अकबर आँखो मे फटने लगी थी तारियाँ।
गौरव पुराना याद कर, साहस की बिजली भरो,
उठो 'अमर' बहनो ! करो उन्नति की तैयारियाँ।

मन से दो बातें

[तर्ज—मन मूरख क्यों दीवाना..............]

मन मूरख क्यो दीवाना है,
जग सपना क्या गरवाना है ?
आज खिला जो फूल चमन मे
कल उसको मुरझाना है।
आज खिली जो धूप तो कल को,
घन अँधियारा छाना है।
प्रात चढ़ा जो सूर्य गगन मे,
शाम हुए छिप जाना है।
रात पड़ी जो ओस कमल पर,
हिलते ही ढल जाना है।

चन्द रोज की जिन्दगानी पर,
क्यो पागल मस्ताना है।
कितना ही तू क्यो न अकड ले,
आखिर मरघट जाना है।
कौन किसी का जग मे जिस पर,
यह सब झगडा ठाना है।
'अमर' सत्य पर तू वलि हो जा,
नाम अमर यदि पाना है।

मेरी ओर

[तर्ज—रसिया, काटो लागो रे देवरिया ..]

प्रभूजी ! क्या है, देखो ना जरा तो मेरी ओर !
ऊजड मग भव-विपिन भयंकर, चल रही आधी घोर,
जान दीन असहाय मुझे हा ! लूट रहे कलि चोर !
भूल गया औसान सभी मैं, चले न कुछ भी जोर,
नाथ तुम्ही हो अव तो मेरे केवल रक्षा-ठोर !
तुम तो पावन हो परम और मैं पतितन-सिरमोर,
दीनवन्धु ! क्यो देर करो, कुछ करो स्वपद पै गौर।
पुत्र-दु:ख मे लेत पिता का करुणा-सिन्ध, हिलोर,
किन्तु खेद, क्या कारण मुझ पै वन गये कठिन-कठोर !
अव तो अपने तुल्य करो प्रभु, यह जन पामर ढोर',
'लौ लगी वस 'अमर, तुम्ही से जैसे चन्द्र-चकोर'

अमर अभिलाषा

[तर्ज—भगवान भगत के बस मे ·· ··· ···]

सच्चा भगत बन जाऊँ, भगवान तुम्हारा अब मैं ।
क्रोध निकट नही आने देऊँ शस्त्र अचूक क्षमा का लेऊं,
दूर ही मार भगाऊँ, भगवान....
सन्त गुणी जन जब मिल जावे, मद मत्सर नही मन मे आवे,
सादर शीष झुकाऊँ, भगवान....
सत्य-शख का नाद बजा के, उथल-पुथल की क्रान्ति मचा के,
सोता जगत जगाऊँ, भगवान .
न्याय मार्ग से मुख नही मोड़ूँ, स्वीकृत प्रण की मेड न छोड़ूँ,
कर्त्तव्य-पथ बलि जाऊँ, भगवान....
प्राणी-मात्र को अपना भाई, मानूँ, सब की चाहूँ भलाई,
सेवा-मत्र बनाऊँ, भगवान ...
ऊ च-नीच का भेद न मानूँ, गुण-पूजा का महत्त्व पिछानूँ,
व्यक्ति न व्योम चढाऊँ, भगवान,..
करूणानिधि ! वर करुणा कीजे, आत्मिक बल कुछ ऐसा दीजे,
'अमर' अमर हो जाऊँ, भगवान....

नाम का चमत्कार

[तर्ज—जीवन है सग्राम बन्दे········ ······]

नाम प्रभू का प्यारा बन्दे !
शक्कर मीठी, मिसरी मीठी,
नाम सुधा की धारा बन्दे !

भवसागर में डूबती नैया,
नाम ही एक सहारा वन्दे !
जब भी भीर पड़ी भक्तों पे,
नाम का मन्त्र उचारा वन्दे !
सच्चा है बस नाम प्रभू का,
झूठा है जग सारा वन्दे !
माया की उलझन में फँसकर,
क्यों प्रभु-नाम बिसारा वन्दे !
नाम-मन्त्र के आगे पल में,
काम, क्रोध, मद हारा वन्दे !
'अमर' जिधर भी देखा जग में,
नाम ही नाम निहारा वन्दे !

वीर-वन्दना

[तर्ज—सच्ची भगती मे मन को···· ···· ····]

वीर ! तू ने जहाँ मे उजेला किया,
दूर पाखण्ड का सब झमेला किया;
मात तृशला के प्यारे गुणी नन्दना।
वन्दना वन्दना वन्दना वन्दना ॥
दीन-दुखियो पर तेरी कृपा थी बड़ी,
प्रेम-वर्षा की छम-छम लगा दी झड़ी
कष्ट-सागर से तारी सती चन्दना।
वन्दना वन्दना वन्दना वन्दना ॥

दंभ-दल की विकट घन घटाएँ घिरी,
आफतो की भयकर बिजलियाँ गिरी,
आपके थी न दिल मे जरा स्पन्दना।
वन्दना वन्दना वन्दना वन्दना ॥

शान्त मन मे दया का फुव्वारा छुटा,
राक्षसी यज्ञ-हिंसा मिटाने जुटा,
मूक पशुओ की मेटी करुण क्रन्दना।
वन्दना वन्दना वन्दना वन्दना ॥

प्रार्थना है 'अमर' की प्रभो वीर जी,
दास की काटिए कर्म-जजीर जी,
धर्म की हो हृदय मे सदा स्यन्दना।
वन्दना वन्दना वन्दना वन्दना ॥

सुरेश मुनि

मन की तरंग

"आज मुझे कुछ गाने दो !
अपने बेकल, पागल मन को,
गीतो से बहलाने दो !
आज मुझे कुछ गाने दो !!"

श्री सुरेश मुनिजी

श्री सुरेश मुनिजी शास्त्री हैं, साहित्यरत्न है और स्थानक वासी जैन समाज के ज्योतिर्धर उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के अन्यतर शिष्यरत्न हैं।

उत्तर-प्रदेश के जिला मेरठ के रठौडा गाव मे एक गरीब ब्राह्मण-परिवार मे आपने आँखें खोली। हिन्दी उर्दू मिडिल और वाराणसेये सस्कृत-परिक्षा घर मे ही उत्तीर्ण कर आप अपनी उठती-उभरती तरुणाई मे संयम तथा त्याग-वैराग्य की राह पर चल पडे।

सन्त बनने के बाद भी, आपका विद्याभ्यास अबाध गति से चलता रहा। शास्त्री और साहित्यरत्न की परीक्षाएँ आपने सन्त बनने के बाद ही उत्तीर्ण की? स्थानकवासी जैन समाज मे यह एक नया पग था?

सगीत की ओर आपका बाल्य-काल से ही विशेष झुकाव रहा है? आप कवि तो नही, कवि-पुत्र अवश्य हैं। अन्य कवियो द्वारा रचित-निर्मित गीतो को गाने-गुनगुनाने मे ही आपको रस रहा है? कविता की ओर प्रवृत्ति न होते हुए भी, कभी-कभी आपका बेकल-व्याकुल मन अपनी तरग-उमग मे बोल ही उठता है—

"आज मुझे कुछ गाने दो,
अपने बेकल, पागल मनको।
गीतो से बहलाने दो।
आज मुझे कुछ गाने दो॥

स्वान्त सुखाय रचित आपके गीतो मे एक लय-लालित्य और नव्य गये-तत्त्व रहता है। और, इसी लिए, वे जन-मन को बलात् आकर्षित कर लेते है। आप के गीतो मे नाम के मोह की गन्ध तक भी नही हैं?

गंगा और जमना

[तर्ज—मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमना ....]

ज्ञान की निर्मल गगा और जप-तप की यह जमना,
मानव बोल, मानव बोल सगम होगा कि नही ?

तन उजला और मन मैला है, कैसी यह तेरी माया है ?
दिल मे नफरत मुँह का मीठा, दोहरा रग बनाया है ?
तन-मन का रग एक तेरा कभी होगा कि नही ... ...

इस मिट्टी के तन को सजाकर, क्यो तू अकडा जाता है ?
मन मे तेरे पाप घनेरे, क्यो उनको तू छुपाता है ?
मन का मैल यह दूर तेरा कभी होगा कि नही ... .

मौका यह नायाव मिला है, इस से लाभ उठा लेना ?
जनम-जनम की अपनी विगडी, अव तो वात वना लेना ?
दिल का काटा दूर तेरा कभी होगा कि नही ....

आन, वान और शान सभी तू, समझा अभिमान वढाने मे,
तेरे-जैसा नादान भला फिर, होगा कौन जमाने मे ?
जीवन का यह वोझा हलका होगा कि नही ....

गीत प्रभू के गाते चलो

[तर्ज—जोत से जोत जगाते चलो]

गीत प्रभू के गाते चलो,
डूबती नैया तिराते चलो।
सत्य की धूनी रमाके यहाँ,
चैन की बसी बजाते चलो।

भटक-भटक कर लाख चौरासी, नर का यह चोला पाया।
जग के इस जजाल मे फँस कर, क्यो इसको है गवाया?
अपनी बिगडी को बनाते चलो॥

कदम-कदम पर रग सुनहरा माया ने बिखराया,
माया के झूठे सपनो मे है मानव भरमाया।
अपने मन को जगाते चलो॥

बीते दिनो की भूल कहानी, मजिल को पहचानो,
मजिल पर जो कदम बढाये, राही उसी को जानो!
मजिल पे कदम बढाते चलो॥

कर ले प्रभू से प्यार

[तर्ज—मै क्या करूँ राम ....]

करले प्रभू से प्यार, तुझे मौका मिल गया,
घूम-घूम कर लाख चौरासी, नर का चोला पाया है।
माया के चक्कर मे फँस क्यो हीरा-जन्म गँवाया है?
कर ले सच्चा अब व्यापार, तुझे ..

मस्ती को गर पाना है तो सत्संग मे नित आया कर,
झूम-झूम कर मस्त दीवाने, गीत प्रभू के गाया कर।
हो जा धर्म पे बलिहार, तुझे ....

बीच भंवर मे डोले नैया—इसको पार लगा ले तू,
दान शील तप भाव से अपने सोये भाग्य जगा ले तू!
कर ले अपना बेडा पार, तुझे ....

इधर-उधर क्यो नजर फिराये, अपना मन समझाले तू,
मन-मन्दिर मे जोत जला कर आसन खूब जमाले तू।
कर ले प्रभू का दीदार, तुझे.......

दूर नगरिया तेरी मुसाफिर फिर क्यों नींद मे सोना है?
जागने वाला पाता है और सोने वाला खोता है।
सुन ले सन्तो की पुकार, तुझे ....

नैया तिरेगी तेरी।

[तर्ज—मेरे मन की गगा और तेरे मन की जमना"]

मन से पाप हटा कर, और तन का जोर लगाकर।
प्रभु बोल, प्रभु बोल, नैया तिरेगी तेरी ....
अरे, बोल, प्रभु बोल नैया ....

कितनी सदियाँ बीत गई है, दुनिया मे आते-जाते।
लाख चौरासी की गलियो मे यूं चक्कर खाते-खाते।
ज्ञान ध्यान तप जप से काट चौरासी की फेरी ....

चार दिनो का जीवन तेरा, क्यों इस पर इतराता है।
आज खिला जो फूल चमन में, कल वो ही मुरझाता है।
सास-सास पर बजती है यहा काल की भेरी .. ...

मगी-साथी कोई न तेरा, यहा पर साथ निभाएगा।
अकेला ही तू आया जग मे और अकेला जाएगा।
मरने पर अपने ही करे तेरी राख की ढेरी ....

क्यो आशा के महल बनाए, तृष्णा मे मन भटकाए।
सामान करे लाखो वरसो के, पर कल का पता भी ना पाए।
झूठे जग के लिए करे फिर क्यो हेरा-फेरी ...

सत्संग की तरग में तू आ जा।

[तर्ज—मेरे रग दे दुपट्टा ...]

सत्सग की तरग मे तू आ जा, क्यो इत-उत डोलता फिरे।
हीरा हाथ अमोलक आला, विषयो मे क्यो इसको लुटाया।
काया—माया मे तू भरमाया, क्यो .

मतलव की है दुनियादारी, मतलव के सारे ससारी।
इन से अपना आप वचा ले, क्यो .

दुनिया क्या है एक तमाशा, चार दिनो की झूठी आशा।
झूठी आशा का वनके पियासा, क्यो .. .

सत्संग—जैसा तीर्थ न दूजा, सत्सग सच्ची आतम-पूजा।
अपने जीवन का मैल मिटा ले, क्यो.... ...

सत्सग का यह मीठा प्याला, पीकर हो जा तू मतवाला ....
अव तो जीवन की प्यास बुझा ले, क्यो...... .

काया-माया का खेल !

[तर्ज—तेरी प्यारी-प्यारी सूरत ....]

तेरी प्यारी-प्यारी सूरत यह, इक दिन मिट्टी मे मिले, याद रख तू ।
तेरी काया-माया सारी यह, इक दिन अगनी मे जले, याद रख तू ॥
जो भी यहाँ पर आता है, आखिर इक दिन जाता है ।
राजा रानी सेठ सेठानी, कोई न रहने पाता है ।
इन फूलो को मुरझाना है, जो आज चमन मे खिले, याद ....
जिन के लिए पाप कमाता है, कोई न साथ निभाता है ।
जीव अकेला ही आता है और अकेला जाता है ।
इस जग को सराए-फानी मे, पगले ! तू क्यो मचले, याद ....
जो ज्ञान जोत जगाता है, वो जीवन मे मुसकाता है ।
डूबती नैया भवसागर से अपनी वो पार लगाता है ।
वो ही जीवन का राही जो अपनी मजिल पे चले, याद .....

सत्संग मे नित आया करो

[तर्ज—जोत से जोत जगाते चलो ......]

सत्सग मे नित आया करो ।
ज्ञान का दीप जलाया करो ॥
मौ का सुनहरी मिला तुम को,
कुछ तो लाभ उठाया करो ॥
सत्सग-जैसा इस जगती मे नही तीरथ कोई दूजा ।
सत्सग ज्योति है जीवन की, सत्सग उत्तम-पूजा ॥
उत्तम-पूजा रचाया करो ॥

कौन देश मे आये हो तुम और कहाँ है जाना ?
मजिल को जो नही पहचाने-राही नही वो दीवाना ।
मजिल का पता लगाया करो ॥
कौन है अपना कौन बेगाना-इतना भी भेद न जाना ।
झूठी काया झूठी माया, इस पर मत इतराना ।
मन अपना समझाया करो ॥

क्यों मन अपना भरमाए ?

[तर्ज—कोई जब राह न पाए]

क्यो मन अपना भरमाए, समझ ना पाए—
कि पल-पल बीती जाए-तेरे जीवन की बहार ···
चाँदनी है यहाँ दिन चार फिर होगा यहाँ अन्धकार ।
अब भी तू कर ले प्रभु से प्यार—
नैया पार हो जाए समझ ना
दूर बडी तेरा मजिल, सोया पडा क्यो गाफिल ।
झूठी है दुनिया की सब महफिल—
क्यो देख-देख ललचाए, समझ ना····
झूठा है जग का प्यार, मतलब का सारा ससार ।
कोई भी न तेरा यहाँ गमख्वार—
फिर भी होश न आए, समझ ना

तू नित सत्संग मे आया कर !

[तर्ज—यह मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर ·· ···]

तू नित सत्सग मे आया कर, प्रभु के गीत गाया कर—
सफल तेरी जिन्दगी हो, सफल तेरी बन्दगी हो ॥

तू जिस यौवन पे फूला है—यह तो एक माया है,
जिसे अपना तू कहता है-वो धन भी तो पराया है,
तुझे मैं साफ कहता हूँ कि जग का झूठा प्यार है····
यह दुनिया एक धोखा है, यहाँ मतलब की है यारी,
न सगी साथी है कोई—न भाई-बन्धु—न नारी,
ये झूठे रिश्ते नाते हैं कि जिन पर तू निसार है····
जिसे काशी में तू ढूंढे, जिसे मथुरा मे तू ढूंढे,
जो दिल के पास है तेरे, जिसे बाहर मे तू ढूंढे,
यो फिर पगले तू भटके है प्रभु-दर्शन की इन्तजार है····

यहाँ पर कौन है तेरा ?

[तर्ज—मेरे मन की गगा और तेरे मन की जमना ···]

क्या मीठा राग सुनाए, क्यो मन अपना भटकाए ?
पछी बोल पछी बोल, यहाँ पर कौन है तेरा ?
अरे बोल पछी··· ·· ····

ककड चुन-चुन महल बनाया, मूरख कहे घर मेरा रे !
ना घर तेरा ना घर मेरा, दुनिया रैन बसेरा रे !
रग-रगीली इस दुनिया मे दो दिन का डेरा····

क्या लेकर तू आया जग मे, क्या लेकर के जाएगा ?
खाली हाथो आया था और खाली हाथो जाएगा ?
मोह-माया ने पाया तेरे चारो ओर घेरा····

कदम-कदम पर रग सुनहरा, माया ने बिखराया है !
देख-देख कर जिस को, पगले, दिल तेरा ललचाया है !
चार दिनो की चमक चादनी फिर है अंधेरा····

तोड के मोह-ममता की डोरी, ज्ञान की जोत जगा ले तू !
औघट घाट भटकती अपनी नैया पार लगा ले तू !
यहाँ-वहाँ सुख पाएगा—कहना मान ले मेरा …

तुम इन्सां हो

[तर्ज—तुम कमसिन हो, नादां हो …]

तुम इन्सा हो, नादा हो, गाफिल हो, भोले हो !
सोचता हूँ तुम्हे इशारा करूँ ना करूँ ?
माया के नशे मे चूर रहा. मजिल को कभी समझा ही नही ;
जाना था किधर और जाता किधर, इस सोच मे दिल डूबा ही नही !
तुम इन्सा हो,………

अन्धे से कहो वह झट सुनकर, काँटो से तुरत बच जाता है ,
आँखो वाले से कितना कहो, वह हँस हँस पाप कमाता है !
तुम इन्सा हो ……

बुराई का बदला बुरा मिले, यह बात तुम्हे मजूर नही,
काँटो के बदले फूल खिले, यह कुदरत का दस्तूर नही !
तुम इन्सा हो, ……

तुम आहे भरो और शिकवे करो, भगवान पे दोष लगाते हो ;
पहले तो बढ़ बढ पाप करो, और बाद मे आँसू बहाते हो !
तुम इन्सा हो ……

जो यहाँ पर जुल्म कमाता है, वह चैन कभी नही पाता है ,
औरो को रुलाने वाला भी, खुद इक दिन आँसू बहाता है !
तुम इन्सा हो,……………

दुनिया धोके का बाजार

[तर्ज—मैं का करूँ राम]

दुनिया धोके का बाजार, इससे बचना तू जरा !!
कदम कदम पर फिरें लुटेरे, होश मे अब तो आजा तू ;
चोर लुटेरो से बच-बचकर-अपना माल बचा जा तू !
आँखे रख कर अपनी चार-इससे.......

न कोई सगी न कोई साथी, माया का यह सपना है ;
बेगाने है दुनिया वाले कोई भी न अपना है !
झूठा दुनिया का है प्यार—इससे.......

भरोसा क्या है दुनिया का- यह दुनिया बडी लुटेरी है,
मुँह मे इसके राम-राम और दिल मे हेरा-फेरी है !
दुनिया झूठो का दरबार, इससे.......

दान की महिमा गाते चलो

[तर्ज—जोत से जोत जगाते चलो ·····]

दान की महिमा गाते चलो,
नेक कमाई कमाते चलो !

देने वाला ही पाता सदा ;
गीत यह सब को सुनाते चलो !!

खुश किस्मती से दौलत पाई, दिल को बडा बनाना ;
दीन-दुखी जो राह मे आए, उसका दुख मिटाना !
रोते हुओ को हँसाते चलो !!

ना कुछ अपने साथ मे लाए, ना कुछ लेकर जाना ;
खुद खाना औरो को खिलाना—माया का लुत्फ उठाना ।
दान की गगा बहाते चलो !!

जोड, जोड कर जो रख जाते, वोह पीछे पछताते
पाप की गठरी सिर ले जाते, माल जमाई खाते !
अपने मन को जगाते चलो !!

काल सिर पै आ रहा

[तर्ज—आज कल मे ढल गया]

जिन्दगी का कारवा, आगे बढता जा रहा ,
पल-पल छिन-छिन घड़ी-घडी, काल सिर पे आ रहा !

बचपन पीछे रह गया, जवानी भी तेरी ढली,
बुढापे के सहारे वोह, मौत आ रही चली,
अब भी होश मे तू आ, वक्त क्यो गवा रहा ?

जो भी आया है यहाँ, जाना उसको है जरूर ,
"मै रहूँगा यहाँ सदा"—झूठा तेरा यह गरूर ।
धीरे-धीरे काल यह सारे जग को खा रहा !!

अब भी सोया क्यो पडा, जाग अब तो जाग रे ,
लौ प्रभु से ले लगा, जगा ले अपना भाग रे !
हारी बाजी जीत ले, मौका हाथ आ रहा !!

यह मतलब का जमाना है !

[तर्ज—यह मेरा प्रेम-पत्र"]

यह दुनिया एक मेला है, यह सब झूठा झमेला है,
क्यो दिल तेरा दीवाना है, यह मतलब का जमाना है !
ये जितने तेरे हमराही, मुसाफिर लोग हैं सारे,
क्यो इन फूलो पे फूला है कि इनमे तीखा खार है !
ये रगले बगले और कोठी, छूट जाएँगे सब तुझसे;
बिछुड जाएँगे सब साथी, रूठ जाएँगे सब तुझसे !
यहाँ रहने की चिन्ता मे, क्यो यह दिल बेकरार है !!
तू जिस पर इतना इतराया, न काम आएगी यह माया;
क्यो इन पर नाज करता है, यह चलती फिरती है छाया !
तो फिर इस ठगनी माया से क्यो तेरा इतना प्यार है !!
तुझे बिगडी बनाने का, यहाँ मौका मिला अच्छा,
हाथ से तौल ले पूरा औ दिल का रहना तू सच्चा !
सचाई से ही जीवन का—होता बेडा पार है !!

दो दिन की जिन्दगी

[वो दिल कहाँ से लाऊँ ...]

सुन ले ओ तू भोले प्राणी, दो दिन की जिन्दगानी,
माया का खेल प्यारे, सारा यह जान फानी !
चलना जरूर होगा, राजा हो चाहे रानी;
आने के बाद जाना, यह रीत है पुरानी !
मतलब के रिश्ते नाते मतलब का है जमाना;
झूठे जहाँ की सारी, झूठी है यह कहानी !

तू जोड जोड माया, क्यो पाप है कमाता?
आखिर मे संग तेरे, कौडी न एक जानी!!
छोटी सी जिन्दगी में, कोई नेक काम कर ले;
नेकी बदी ही जग मे, जीवन की हैं निशानी!!

दीप से दीप जलाते चलो

[तर्ज—जोत से जोत जगाते चलो ....]

जो सीखो, किसी को सिखाते चलो,
दीप से दीप जलाते चलो।
भूला भटका जो कोई मिले, सचाई का रस्ता बताते चलो!!
छाया हुआ है इस दुनिया में चारों ओर अंधेरा;
अज्ञान अंधेरे ने जन मन को बुरी तरह से घेरा!
ज्ञान की जोत जगाते चलो!!
ज्ञान का दान बडा है जग मे—इसको ना कभी भुलाना;
दीन दुखी जो भी मिल जाए, धीरज उसे बंधाना!
जग के फंद छुडाते चलो!!
जीवन की उलझन में उलझा, गर कोई द्वारे आए;
सुलझा मन लेकर वो जाए, जीवन में मुसकाए।
मन की दुविधा मिटाते चलो!!

ओ गाफिल !

[तर्ज—ओ महबूबा ......]

ओ गाफिला ! ओ गाफिला !!

तू दिल मे यह सोच ले है कहाँ—तेरी मंजिले मकसूद
सोया पडा है क्यो तू, जाना तुझे है दूर ?
मंजिल को अपनी जानके, आगे बढा कदम ;
राही वही जो लेता—मजिल पे जाके दम !
सोना निशानी मौत की, जगना है जिन्दगी ;
भाग अपना तू जगा ले, कर प्रभु की वन्दगी !
दुनिया की खुशी क्या है, दुनिया का क्या है गम !
जीवन तो खुशी और गम—दोनों का है सगम !

गीत खुशी के गाते चलो

[तर्ज—जोत से जोत ......]

गीत खुशी के गाते चलो,
प्रेम की बसी बजाते चलो !
बिछुडे दिलो को धीरज दे,
प्रेम से उनको मिलाते चलो !
दो दिन की जिन्दगानी मे यहाँ—गम क्यो कोई उठाए ;
झूम झूमकर खुदमस्ती में हँसे और मुसकाए !
मन का कमल खिलाते चलो !!
कौन है अपना कौन पराया—झूठी जग की माया !
मोह माया के जाल मे अपना तन मन क्यो उलझाया ;
जिन्दगी की शान बढाते चलो !!

क्यो दुनिया की चमक-दमक पर दिल तेरा दीवाना ;
आये हो दुनिया मे तो कोई भला काम कर जाना ।
बुराई से दामन बचाते चलो ।।

मजिल तेरी दूर मुसाफिर, थक कर बैठ न जाना ;
किससे आस लगाये पगले, किसका हुआ जमाना !
प्रभू को मन मे बसाते चलो !!

आया यहाँ किस लिए ?

[तर्ज—तुम कमसिन हो नादाँ हो………]

तू मानव है, ज्ञानी है, विज्ञानी है, सयाना है।
सोच ले तू जरा आया यहाँ किस लिए ?

अनमोल यह चोला मिला तुझको, क्यो अमृत तज विष पीता है ?
अब मन की आँखे खोल जरा, क्यो अन्धा बनकर जीता है ?
तू मानव है ……

आया था बन्धन खोलने को, बतला कितने बन्धन खोले ?
मानव है वही जो अपने को, सदा ज्ञान के काटे पर तोले ।।
तू मानव है…………

क्यो मस्त बहारो में भूला हुवा, इस यौवन पर इतराता है ?
जो फूल खिला है गुलशन में, आखिर वो भी मुरझाता है ।।
तू मानव है…………

ओ भूले जीवन के राही, है दूर कहीं तेरी मंजिल ?
जिसे देख-देख कर फूला है, दुनिया की यह झूठी महफिल ।।
तू मानव है…………

ज्ञान की जोत जागते चलो

[तर्ज—जोत से जोत जगाते]

ज्ञान की जोत जगाते चलो।
मन का अन्धेरा मिटाने चलो॥
परदा पड़ा जो जीवन पर—
उसको दूर हटाते चलो॥
ज्ञान विना जीवन की सूनी और अंधेरी गलियाँ।
ज्ञान विना खिलती न कभी भी तन-मनकी ये कलियाँ।
ज्ञान के फूल खिलाते चलो॥
ज्ञान ही सच्चा संगी-साथी, यहाँ-वहाँ साथ निभाता।
ज्ञान ही जीवन के कण-कण मे उजियारा फैलाता।
जीवन की बाती जलाते चलो॥
मन-मन्दिर मे दीप जला कर आसन खूब जमाना।
ज्ञान ही सच्ची आतम-पूजा, इस को भूल न जाना।
जीवन को चमकाते, चलो॥

मेरी आत्मा की यह आवाज है !

[तर्ज—जरा सामने तो आ ··]

जरा ज्ञान तो तू पा ओ बन्दे ! जिन्दगी का यही इक राज है;
यों मिल न सकेगा परमात्मा, मेरी आत्मा की यह आवाज है।
भटक-भटक कर नर-तन रतन यह तूने अमोलक है पाया;
लेना हो सो ले ले मुसाफिर ! हाथ यह मौका अब आया।
तेरी जग मे बडी औकात है, तू तो देवो का भी सरताज है!

कोडे-मकोडो की तरह घिसटना, इन्सान तेरा काम नही ,
रग-रगीली इस दुनिया मे पल-भर को आराम नही ।
फिर नीचे को क्यो तेरा ध्यान है, जब ऊँची तेरी परवाज है !
चार दिनो की चमक चाँदनी, फिर अन्धेरी रात यहाँ ;
आज चलो चाहे काल चलो बस रहने की झूठी बात यहाँ ।
फिर सोया क्यो लम्बी तान है, जब मौत रही सिर गाज है ।
कोरी बात से बात बनेगी—ऐसा कभी ना हो सकता ,
जो आम खाना चाहेगा वो तो पेड बबूल ना बो सकता ।
सीधी-सादी खरी यह बात है, बस हाथ मे तेरे तेरी लाज है ।
धर्म की करनी मे तू है गाफिल, इधर कहे और उधर चले ,
जीवन की मजिल मिलती वहाँ पर ज्ञान का दीपक जहाँ जले ।
जब माया पे तेरा हाथ है, फिर काहे पे तुझको नाज है ?

अपनी मजिल को पहचान !

[तर्ज—तेरे दिल का मकान · ·· ·]

सुन भोले इन्सान, यह तो झूठा है जहान, अपनी मंजिल को पहचान,
क्यो लुभाया इतना ?
करता किस पर गुमान, है तू दो दिन का महमान, अपनी मजिल
को पहचान, क्यो लुभाया इतना ?
शुभ कर्मों से तूने यह इन्सानी चोला पाया ।
हीरा था अनमोल मगर कौडी के भाव गवाया ।
अरे तू बनता क्यो नादान, कहना मेरा ले तू मान, अपनी ··
काया-माया पर इतराना, एक छिछोरी बात ।
चार दिनो की चमक-चाँदनी फेर अन्धेरी रात !
दुनिया है यह दुख की खान, फिर क्यो होता परेशान, अपनी ··

जाग-जाग अब जाग बावरे ! अपनी अँखियाँ खोल !
बडे भाग्य से मिला तुझे यह समय बडा अनमोल !
होकर नींद मे गलतान, क्यो तू सोया लबी तान, अपनी …

गुरु की महिमा गाते चलो !

[तर्ज—जोत से जोत जगाते …]

गुरु की महिमा गाते चलो,
चरणो मे शीष झुकाते चलो !
जनम-जनम के सब फेरे,
गुरु-भक्ति से मिटाते चलो !
तन से, मन से और प्राणो से गुरुदेव हमे प्यारा !
गुरु चरणो की भक्ति से हो जीवन का निस्तारा !
नैया को अपनी तिराते चलो !
गुरु ही माता गुरु पिता है, गुरु ही बन्धु-भाई !
गुरु ही सब-कुछ है जीवन मे, गुरु की बडी बडाई !
नगमा यह सब को सुनाते चलो !!
गुरु ने ज्ञान की जोत जगाकर, मन का अन्धेरा मिटाया !
जीवन क्या है, मजिल क्या है—सारा ही भेद बताया !
श्रद्धा के फूल चढाते चलो !!

आ, गा ले प्रभु के गीत !

[तर्ज—आ, लौट के आ जा …]

आ, गा ले प्रभु के गीत, तेरे दिन बीते जाते हैं।
तेरा सूना पडा रे सगीत, तेरे दिन बीते जाते हैं ॥

कभी है आना, कभी है जाना, कैसा यह जीवन का फेरा।
कभी है मिलना, कभी बिछुड़ना, दुनिया है दो दिन का डेरा।
यह तो है पुरानी रीत, तेरे……

मेरा-मेरा क्यों करता है मूरख, कौन यहाँ पर है तेरा।
जिसके पीछे भूला प्रभु को, मोह-माया का ये तो घेरा।
इस जग की झूठी प्रीत, तेरे……।……

न कोई संगी न कोई साथी, अजब है दुनिया का मेला।
आए अकेला, जाए अकेला झूठा है सारा झमेला।
यहाँ कौन है किसका मीत, तेरे……

क्यों इस यौवन पे इतराए, देख-देख मुसकराए।
हँसा जो गुलशन मे फूल इक दिन, माटी मे वो मिल जाए।
तेरी जाए उमरिया बीत, तेरे……

दुनिया की माया से दिल लगा कर, पगले क्यों जीवन को हारे?
मिला तुझे अनमोल यह हीरा, इस को न यूं ही गंवा रे।
ले जीवन की बाजी जीत, तेरे……

खेल अधूरा छूटे ना

[तर्ज—जीत ही लेंगे बाजी हम तुम ……]

जब तक तेरे मन से पगले, माया-जाल यह छूटे ना।
जन्म के बन्धन, कर्म के बन्धन, कर्म के बन्धन टूटे ना।
जनम के बन्धन टूटे ना……

तू कौन है आया कहा से यहा, इतना तो पता लगा ले।
ज्ञान की ज्योति दिल में जला, अपनी मंजिल को पा ले।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे, रस्ते मे कहीं लूटे ना……

लगाले प्रभु से सच्ची लगन, तेरा सकट सभी मिट जाए ।
इस तन के लिए, इस मन के लिए, क्यो तू पाप कमाए ?
छोड हलाहल विप का प्याला, अमृत-रस क्यो घूटे ना ......
हीरा जन्म मिला यह तुझे, क्यो मुफ्त मे इस को गवाए ?
कुछ धर्म कमा, कुछ नेकी कमा, फिर ना कंगाल कहाए ।
हारी बाजी जीत ले अब तू खेल अधूरा छूटे ना . .

कर्मो का फल तो पाना पड़ेगा

[तर्ज—जो वादा किया वो ..

यह कर्मो का फल तो पाना पडेगा ।
चादी लुटा ले चाहे सोना बहाले, किस्मत का लिखा दुख तो उठाना पडेगा ।
कभी धूप यहाँ पे, कभी यहा पे छाया,
समझ ले यह कर्मों की सारी है माया,
धूप-छाव के इस खेल मे तो हरदम तुझ को मुसकाना पडेगा ....
न रहती कभी एक जैसी यह दुनिया,
कभी कोई सुखिया, कभी कोई दुखिया,
सिर पर चढा ये अपना कर्जा तो सब को चुकाना पडेगा ......
न कर्मो के आगे कोई पेश चलती,
कर्मों की रेखा टाले न टलती,
यह हिसाब तो हँस के या रो के सब को भुगताना पडेगा .
जो चाहे यहा पर खुशिया मनाया,
न हर्गिज किसी का दिल तू दुखाना,
नही तो तुझे इक दिन यहाँ खुद भी आंसू बहाना पड़ेगा......

गीत प्रभु के अब तू गा रे !

[तर्ज—इन हवाओ मे, इन फिजाओ मे···· ··· ··········]

इन वहारो मे, इन नजारो मे, जीवन अपना यू न लुटा रे।
आ जा, आ जा रे, गीत प्रभु के अव तू गा रे ।
इस चमन की झूठी वहारे देख-देख कर जी न लुभा रे·· ····

लौट नही सकते हैं कभी भी, वीते दिन और वीती राते ।
अकड-अकड कर चलने वाले, अकड की सारी झूठी बाते ।
चार दिनो का जीवन तेरा, इस पर इतना मत इतरा रे ····

इल्म नही है, इस जीवन का दीपक कव, कहा पर बुझ जाए ?
सास-सास पर मौत का पहरा, न जाने कब वन्द हो जाए।
फिर भी तुझ को होश नही है, सोया पडा क्यो पैर पसारे

सास के सग दुनिया का रग, सास रुका तो खत्म फसाने।
सगी साथी कोई न तेरा, देश पराया लोग बेगाने ।
पल-पल प्रभू का सुमरण कर ले, जो तेरे सव काज सवारे···

गीत प्रभू के गाए जा

[तर्ज—जीत ही लेंगे बाजी हम तुम · ···· ·]

झूम-झूम कर मस्त दीवाने, गीत प्रभू के गाए जा।
इस जीवन मे, अन्तर्मन में, ज्ञान की जोत जगाए जा ।
जीवन सफल बनाए जा ······

प्रभु-भक्ति मे होके मगन, क्यो न खुद मे ही खो जाए ?
जीने की खुशी न मरने का ग़म, ऐसी मस्ती छा जाए ।
अपने जीवन की वीणा पर, चैन की तान उड़ाए जा ·· ····

ककर चुन चुन महल बनाया, कहता है घर मेरा ।
ना घर तेरा ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा ।
इस माया-छाया से अपना, तन-मन दूर हटाए जा ·······
बीच भवर मे डोले नैया, इस को अब तो बचा ले ।
बनकर अपना आप खिवैया, हिम्मत को अपनाले ।
धर्म का ले के हाथ मे चप्पू, नैया पार लगाए जा · · ·

इन्सान, कितना नादान ?

[तर्ज—तेरी प्यारी-प्यारी सूरत]

इस जग की भूल-भुलैया मे, उलझा कैसा इन्सान—बना अनजान।
अपनी मजिल का पता नही, खुद की भी नही पहचान—बना अनजान।।
जहर हलाहल खाता है, फिर भी जीना चाहता है ।
अमृत पीने आया था, पर अब उसको ठुकराता है ।
अकल का ठेकेदार बना देखो कितना नादान—बना ···
अज्ञान अन्धेरा छाया है, अपना भी होश भुलाया है ।
झूठ का जाल बिछा कर उस मे औरो को भी फसाया है ।
पत्थर की शिला पर बैठा है, तरने का लिये अरमान—बना ·
चाद पै नजर लगायी है, कैसा यह सौदाई है ।
इस दुनिया को समझा नही, इक ख्याल की दुनिया बसाई है !
धरती पर चलना सीखा ना, आकाश मे भरे उडान—बना ··
एटम-बम दिखलाता है, शान्ति का राग सुनाता है ।
जाना था पूरब को और पच्छिम को बढता जाता है ।
बारूद के ढेर पे बैठा है, शान्ति की सुनाए तान—बना ·
झूठी शान दिखाता है, अभिमान मे अकड़ा जाता है !
खुद तो आग मे जलता ही है औरो को भी जलाता है !
सूरत से इन्सान मगर सीरत से है शैतान—बना ···

नैया को अब क्यों डुबोए ?

[तर्ज-मोहब्बत की झूठी]

अनमोल जीवन क्यो पापो मे खोए ?
जाग-जाग अब क्यो गफलत मे सोए ?
डग-मग डोले तेरी यह नैया, बन जा अपना आप खिवैया !
जीवन की नैया को अब क्यो डुबोए ?
सत्सग का अमृत पीले ऐ प्राणी, सफल बने तेरी जिन्दगानी।
क्यो जीवन की चादर के दाग न धोए ?
झूठी है माया की सारी यह महफिल, मुसाफिर बडी दूर तेरी है मजिल !
हिम्मत से बेडा पार यहाँ होए !!
दुनिया मे कुछ तो नेकी कमा ले, अपनी बिगडी आप बना ले।
कुछ तदबीर कर क्यो किस्मत पे रोए ?

यह डूबती किश्ती किनारे लगा ले !

[तर्ज—तेरे प्यार का आसरा]

इस माया से तन-मन को अब तो हटा ले।
यह डूबती किश्ती किनारे लगा ले !!
लाख चौरासी घूमके आया,
कष्ट घनेरा तूने उठाया !
बडी मुश्किल से नर-तन है पाया—
जनम-जनम के दुखडे मिटा ले !!
चार दिनो की यह जिन्दगानी,
दुनिया है सब आनी-जानी !
पाप और पुण्य हैं दो ही निशानी—
जीवन को अपने उजला बना ले !!

जाग-जाग क्यो वक्त गवाए ?
गया समय फिर लौट न आए !
अव भी तुझे क्यो होश न आए—
ज्ञान की ज्योति मन में जगा ले !!
झूठी वहारो पे क्यो फूला है ?
माया के झूले पर झूला है !
अपनी मजिल को क्यो भूला है ?
माया से अपना पिंड छुडा ले !!

कुछ करके यहां दिखलाना जा !

[तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर "]

ओ दुनिया से जाने वाले, कुछ करके यहा दिखलाता जा !
इस बागे-जहा मे नेकी का कोई खुशरग फूल खिलाता जा !!
अहिंसा का ध्वज लहरा दे तू, हिंसा का निशान मिटा दे तू ।
इस भूली-भटकी दुनिया को शाति का पथ दिखला दे तू ।
गुमराह इन्सान को जिन्दगी की मजिल का पता वताता जा !!
इन्सान की जिन्दगी का दामन गर नेकी के फूलो से भर जाए ।
धरती पर स्वर्ग उतर आए, हर बिगडा काज सवर जाए ।
खुदगर्जो के दीवानो को यह जीवन-राग सुनाता जा !!
इन्सान के दिल मे नफरत है, वहशत है उसकी निगाहो मे ।
यह कैसा जहर तैरता है दुनिया की पाक हवाओ मे !
तू श्याम मुरारी वनके यहाँ, इक प्रेम की वंसी वजाता जा !!
जिनकी जिन्दगी पे मुसीवत के काले वादल मडराते हैं !
सहारे के लिये जो तरसते हैं, आँसू की धार वहाते हैं !
निराशा के भँवर से तू उन की नैया को पार लगाता जा !!

अगर दिल किसी का—

[तर्ज—अगर दिल किसी से …]

अगर दिल किसी का दुखाया न होता !
जमाने ने तुझ को सताया न होता !!
न आते तेरी आँख मे आज आँसू !
किसी हँसते को गर रुलाया न होता !!
न मिलते कदम-दर-कदम तुझको काँटे !
जो काँटा किसी को चुभाया न होता !!
न घर मे अँधेरा तेरे आज होता !
जो दीपक किसी का बुझाया न होता !!
क्यो लुटती खुशी की तेरी आज दुनिया !
जो खंजर किसी पे चलाया न होता !!
गर बेसहारो का तू बनता सहारा !
तो दिल पे तेरे गम का साया न होता !!

दुनिया है यह इक बाजार !

[तर्ज—तेरे दिल का मकान "]

दुनिया है यह इक बाजार, सौदा हर इक है तैयार,
तू ने करके यहाँ व्यापार, है कमाया कितना ?
होता दिल मे क्यो बेताब, कर ले अपना हिसाब,
बोलो बोलो जी जनाब, है कमाया कितना ?
इन्सानी जिन्दगी का चांस यह बार-बार नही मिलता ।
हर व्यापारी इक दिन यहाँ से गठरी बाँध के चलता ।
करले अब भी विचार, आ जाए जीवन मे बहार, तूने …

ऐसा कर व्यापार यहाँ पर मालामाल हो जाए ।
जनम-जनम की मिटे गरीबी, ना कगाल कहाए !
कमा तू सैंकडो हजार, बन जा सच्चा साहूकार, तूने····
इस दुनिया मे कदम-कदम पर लाखो फिरे लुटेरे !
लूट न ले कही धोखा दे कर जान-माल को तेरे ।
आँखे रखना अपनी चार, रहना हरदम ही हुशियार, तूने····

काँटों को फूल बनाता जा

[तर्ज—अब प्यार किया तो····]

कुछ करके यहाँ दिखलाता जा ।
खुद जी औरो को जीने दे, काँटो को फूल बनाता जा !!
जग मे छाया घोर अन्धेरा !
चारो तरफ माया का घेरा !
अपने जीवन की ज्योति से, दूसरे दीप जलाता जा ।।
भटकतों को जो दे दे सहारा ।
मिल जाए उन को कहीं किनारा ।
गुमराह इन्साँ को उसकी मंजिल का पता बताता जा ।।
मुरझाये फूलो को जो खिला दे !
उजडे गुलशन फिर से बसा दे !
अपनी जीवन—वीणा से कोई ऐसा राग सुनाता जा ।।

कही दिन का उजेला है !

[तर्ज—इक वो भी दिवाली थी ... ...]

कही दिन का उजेला है, कही रातें काली हैं !
जलती है कही होली, कही मनती दिवाली है !!
हँसता है यहाँ एक तो दूसरा है रोता !
पाता है कोई माल तो कोई है खोता !
कर्मों की जगत मे यह लीला ही निराली है !!
गद्दी पे कोई बैठा यहाँ बन कर दाता !
दिन-रात जो सुख-चैन की बंसी है बजाता !
कोई ठोकरें खाता यहाँ दर-दर का सवाली है !!
लेता है कोई मौज से पखे की हवाएँ !
तनहाई मे भरता है कोई ठण्डी आहे ?
किसी घर खुशहाली है, किसी घर कंगाली है !!

दुखिया संसार !

[तर्ज—जाने वो कैसे लोग थे जिन के ...]

जिधर भी देखा उधर ही दुखिया यह संसार मिला !
इस दुनिया के मेले मे हर कोई बेजार मिला !
कही महफिल का शिकवा, कही मातम तनहाई का !
कही मिलन का रोना है, कही गम है जुदाई का !
जिन्दगी के हर साज पे या गम का ही भार मिला !
कही बेवा के बहते आँसू, कही मासूमो के !
अश्क गरीबो के हैं कही तो कही पर सूमो के !
छुपा हुआ हर फूल के पीछे तीखा इक खार मिला !

निर्धन के घर जवान बेटी किस्मत को रोए !
बूढा बाबुल नीर बहा कर दो अँखियाँ खोए ।
साहिल ढूँढा किश्ती ने लेकिन मझधार मिला ।
फूट-फूट रोए कोई, कोई आहे भरता है !
गम का है इजहार कही, कोई घुट-घुट मरता है !
दुनिया है काँटों की बाडी, न कही गुलजार मिला !
दुःख के दरिया मे यह दुनिया बहती जाती है !
दर्द-भरी आवाज यह उसकी कहती जाती है ।
सुख के सारे मीत मिले, ना कोई गमख्वार मिला !

अब करले भजन भगवान का !

[तर्ज—तेरी राहो मे खड़े हैं दिल ··]

तुझे चोला यह मिला है इन्सान का,
अब करले भजन भगवान का।
करता किस पर गरूर, है यह जग मे मशहूर, चलना इक दिन जरूर,
पाले दिल का सरूर ॥

लाख चौरासी घूम के आया, बडी मुश्किल से नर-तन पाया।
फिर भी तुझ को होश न आया, तुझे········
इस यौवन पर क्यो तू फूला, माया के झूले पर झूला।
अपनी मंजिल को भी भूला, तुझे············
दो दिन की तेरी जिन्दगानी, दुनिया है यह आनी-जानी।
फिर क्यो करता है मन-मानी, तुझे············
सीधे पथ पर अब तो हो ले, पाप-कालिमा अपनी धो ले।
सयाना वोही, जो बन्धन खोले, तुझे···········

अब यों आहें भरना क्या ?

[तर्ज—जब प्यार किया तो डरना ·]

जब कर्म किया तो डरना क्या ?
जुल्म किया, सीना जोरी की, अब यों आहें भरना क्या ?
कायर बन कर रोता क्या है ?
अब रोने से होता क्या है ?
हंस-हस जीना, हस-हस मरना, और तुझे अब करना क्या ?
इतना ही है गम का फसाना।
जैसा किया वैसा फल पाना।
कर्म की रेखा मिट नही सकती, फिर घबरा कर करना क्या ?
हिम्मत का अब ले ले सहारा।
मिल जाएगा कही किनारा।
जीवन मे जो हिम्मत हारे, उसका या फिर उभरना क्या ?
दर्द मे भी जो मुस्काता है।
वीर-पुरुष वो कहलाता है।
काटो से जो हँस-हँस खेले, उसका मुशकिल तरना क्या ?

माया की झूठी कहानी पे रोए।

[तर्ज—मुहब्बत की झूठी ······ ··]

माया की झूठी कहानी पे रोए।
बडी चोट खाई, नादानी पे रोए॥
न सोचा, न समझा, न देखा न भाला,
झूठी आशा ने हमे मार डाला,
होश भी सब जिन्दगानी के खोए।

जवानी मे ऐसे कदम लडखडाए,
मजिल को अपनी समझ भी न पाए,
जवानी की उस रवानी पे रोए ।

माया ने ऐसा रूप दिखाया,
दिल दीवाना जिसने बनाया,
दिल की उस परेशानी पे रोए ।

मोह-ममता ने ऐसा घेरा,
छाया चारो ओर अन्धेरा,
जीवन की चादर के दाग न धोए।

जग में जीना है दिन चार ।

[तर्ज—तेरी दुनिया से दूर, होके चले]

जग मे जीना है दिन चार, कर ले प्रभू से प्यार-सदा याद रखना ।
ले ले भक्ति की-पतवार, बेडा होवे तेरा पार-सदा याद रखना ।।
मिला नर चोला, रतन अनमोला, न इसको गवा ।
बागे-जिन्दगी मे कोई तो नेकी का ले फल खिला ।
कर ले पर-उपकार, अपना आप ले सवार, सदा ·······

अरे जाने वाले ! क्या तूने कभी सोचा कि जाना है कहा ?
जिस के रंग-रूप पे बना है दीवाना—यह झूठा है जहाँ ।
अपनी मजिल को पहचान, क्यो तू बनता है अनजान, सदा ·······

जिन मे दिल उलझा है तेरा- ये तो सारे ही झूठे सपने ।
इन रस्ते के मुसाफिरो को समझा है तूने अपने ।
धोखा देंगे आखिरकार, रहना जरा हुशियार, सदा········

मोह मे अन्धा वन कर क्यों जिन्दगी का होश भुलाया पगले ।
देख-देख माया क्यो दिल ललचाया है तूने पगले ।
यह जो खिली गुलजार, है सव दो दिन की बहार, सदा… …

तेरा असली कहां ठिकाना है ?

[तर्ज—ओ लूटने वाले जादूगर… …]

ओ भोले पछी ! सोच जरा, तेरा असली कहा ठिकाना है ?
इस दुनिया की रंगीनी पर, क्यो दिल तेरा दीवाना है ?
तू इन माया के फूलो को, क्यो देख-देख कर फूला है ?
इस चमन की मस्त वहारो मे खुद अपने को भी भूला है।
जो फूल खिले हैं आज यहा, कल उनको भी मुरझाना है ॥
यह जीवन एक कहानी है, यहा दो दिन की जिन्दगानी है।
यहा टिक कर कोई रहा नही, यह दुनिया आनी जानी है।
इस वात को भूलना मत पगले ! तुझको भी इक दिन जाना है ॥
ये जितने सगी-साथी हैं, जिन को तेरी सूरत भाती है।
जिनकी मीठी-मीठी वातें, तेरे दिल को आज लुभाती हैं ॥
सव धोखा देंगे आखिर मे, यह मतलव का ही जमाना है !
अव भी सभल, नादान न वन गफलत मे पडा क्यो सोता है ?
जो जागता है वो पाता है, जो सोता है सो खोता है।
अपनी मंजिल को जो समझा, वो राही वडा सयाना है ॥

झूठी दुनिया की झूठी कहानी।

[तर्ज—इक वो भी दीवाली थी]

इस झूठी दुनिया की सब झूठी कहानी है।
तू प्यार करे किस से, हर चीज यहा फानी है॥
हर सास पे बजती है यहा काल की भेरी।
मिटने मे बुलबुले को क्या लगती है यहा देरी ?
खतरे से घिरी हरदम तेरी जिन्दगानी है॥
रस्ते के राहियों से क्यो दिल अपना लगाता ?
जीवन की इन राहो मे न कोई साथ निभाता।
गैरो को कहे अपना, यह तेरी नादानी है॥
इन माया के सपनो मे बना क्यो तू दीवाना ?
पल-पल मे बदलता है यहा रग जमाना।
यह चमक-दमक सारी, इक बहता पानी है॥
समझा है उजाला जिसे, यह तो है अन्धेरा।
खुशियो की इन लहरो मे छिपा गम का बसेरा।
इस राज को जो समझा, वही सच्चा ज्ञानी है॥

अब होश में आ मन मेरे।

[तर्ज—तेरा जादू न चलेगा ""]

अब होश मे आ मन मेरे,
बिगडे काम बनेंगे सब तेरे
करले वन्दगी तू सांझ-सवेरे,
कट जाए चौरासी के फेरे॥

गफलत मे क्यो डूवा यहाँ, लम्बी तान के सोया ?
जन्म मिला अनमोल तुझे, पापो मे ही खोया ।
ओ, तुझे लुट-लुट खा गए लुटेरे ।
इस जग की झूठी माया को, क्यो देख-देख ललचाए ?
झूठी आशा-तृष्णा मे, क्यो पगले भरमाए ?
भूला फिरता क्यो चार-चफेरे ?
इस दुनिया का भरोसा क्या, यह तो है एक सराए ।
लगा यहाँ आना-जाना, कोई न रहने पाए ।
हरदम मौत खडी है तुझे घेरे ।
अव तू अपनी विगडी वना, गीत प्रभू के गा ले ।
धर्म की सच्ची पूजी कमा, जीवन सफल वना ले ।
होगे मुक्ति मे फिर तेरे डेरे ।

हंस-हंस जग में जिए जा !

[तर्ज—रुक जा ओ जाने वाले " · · · "]

जिए जा, ओ जीने वाले जिए जा,
तू तो हस-हस जग मे जिए जा ।
दुनिया के गम के ये घट भी ।
तू अमृत समझ कर पिए जा ॥
इन गम की हवाओ मे तेरे आसू ना छलक आएं ।
और छलक-छलक कर वे, नीचे ना ढलक जाए ॥
होठो के सिये जा तू, अश्को को पिए जा तू ।
ठोकर पे लगे ठोकर, और फिर भी जिए जा तू !!
सुख-दुख का जीवन मे, है साथ-साथ डेरा ।
ओ वन्दे ! सोच ले तू, धूप छाव का यह फेरा ॥
जीवन की राहो मे, तू हसता-हसता चल !
काटे भी मिले तुझको, उन्हे फूल वनाता चल ॥

क्यों आंख न तेरी खुले ?

[तर्ज—तेरी प्यारी-प्यारी सूरत]

ओ माटी के पुतले, अब भी क्यो आँख न तेरी खुले, समझ पगले !
यहाँ कूच की भेरी बजती है, नही काल किसी से टले, समझ पगले !
जग की झूठी कहानी है, दो दिन की जिन्दगानी है ।
जिस जीवन पर रीझ रहा है, यह तो बुलबुला पानी है ।
यह जग की रीत पुरानी है, जो आया यहाँ से चले, समझ····
सोच किधर को जाना है, तेरा कहाँ ठिकाना है ?
जो अपनी मंजिल ना समझे वो राही नही दीवाना है ।
इन भूली-भटकी राहो मे, बिरला ही कोई सभले, समझ····
यह जग रैन बसेरा है, तेरा है ना मेरा है ।
चढता सूरज ढलती छाया, जोगी वाला फेरा है ।
क्यो करता है मेरी-मेरी, तेरे साथ न कुछ भी चले, समझ ···
यो न आवारा फिरा करो, पाप-करम से डरा करो ।
इस दुनिया की गलियो मे तुम चाल सभल के चला करो ।
इस मन को हटा लो पापो से, जीवन यह फूले-फूले, समझ ··

तेरे लब पे प्रभु का नाम हो

[तर्ज—चाहे पास हो, चाहे दूर हो···········]

चाहे सुबह हो, चाहे शाम हो।
तेरे लब पे प्रभू का नाम हो ॥
नाम प्रभू का है अति प्यारा, मन-मन्दिर मे करे उजारा ।
भव-जल से है तारन हारा, कर ले अपना वारा-न्यारा ॥

दुनिया है एक रैन-बसेरा, क्यो करता है मेरा-मेरा ।
पगले, जग मे कौन है तेरा मोह-माया ने तुझ को घेरा ॥

क्रोध-मान को दूर हटाले, माया-मोह से पिण्ड छुडाले ।
सोये अपने भाग्य जगा ले, डूबती किश्ती पार लगा ले ॥

पल-पल बीती जाए उमरिया, जाग-जाग अब भी बावरिया ।
दूर बडी है तेरी नगरिया, फेंक दे सिर से पाप-गठरिया ॥

हम है दीवाने तेरे नाम के !

[तर्ज—तेरी राहों मे खड़े हैं]

पुजारी बने हैं तेरे पैगाम के,
वीर ! हम हैं दीवाने तेरे नाम के ।
मेरी अखियो के नूर, मेरे दिल के सरूर, चाहे कितनी हो दूर—
तुझे पाना है जरूर ।

लब पे तेरा ही है तराना, आंखो मे तेरा अफसाना ।
तुझ को ही मैं अपना माना, पुजारी ··

पी कर तेरे प्रेम का प्याला, दिल मेरा हो गया मतवाला ।
मन-मंदिर मे हुआ उजाला, पुजारी ·

जब से दिल मे तुझको बसाया, धर्म अहिंसा मुझको भाया ।
भूल गया मैं अपना-पराया, पुजारी ··

मेहर की नजर हुई जब तेरी, जाग गयी तकदीर है मेरी ।
कट गई चौरासी की फेरी, पुजारी··· ·

ओ राही मतवाले !

[तर्ज—नींद न मुझ को आए,··· ····]

ओ राही मतवाले ! ज्ञान का दीप जला ले ।
चलता चल तू, बढता चल तू, अपनी मजिल पा ले ।

अज्ञान का अन्धकार है, अज्ञान का अन्धकार ।
अब ज्योति जगा, भ्रम दूर भगा, जीवन को जगमगा ले ॥
माया का यह ससार है, माया का यह ससार ।
फिर क्यो उलझा यहा, तुझे जाना कहा, इतना तो ध्यान लगा ले ॥
यह जिन्दगी दिन चार है, यह जिन्दगी दिन चार ।
फिर क्यो इतना गुमा, है यह झूठा जहा, अब अपना-आप बचा ले ॥
तेरी नगरिया दूर है, तेरी नगरिया दूर ।
नही रस्ता आसा, चल बन के तूफा, आफत मे भी मुस्करा ले ॥

बैठा डाल पे पंछी अकेला

[तर्ज—तेरा जादू न चलेगा ··· ··· ···]

बैठा डाल पे पछी अकेला,
मस्त राग वोह गाए अलबेला ।
यहाँ कौन गुरु है कौन चेला,
जग दो दिन का है यह मेला ॥
आया तू पहले भी यहाँ, याद कहाँ है तेरी ?
इक दुनिया बसाई थी तूने, करता था मेरी-मेरी ।
तूने जीवन यो ही ठेला ॥

क्यों करता मेरा-मेरा, कौन यहाँ है तेरा ?
भूल-भुलैया मे फस कर, वन गया माया का चेरा ?
यह खेल तो पहले भी खेला ॥

मात-पिता नारी भ्राता, झूठा रिश्ता-नाता ।
धर्म ही सच्चा साथी है, जो यहाँ-वहा साथ निभाता ।
बाकी झूठा है सारा झमेला ।

जोड-जोड कर माया का, पगले क्यो पाप कमाए ।
अन्त समय पर यह धन भी, तेरे काम न आए ।
साथ जाए न एक भी धेला ।

अपनी मंजिल भूल न जाना ?

[तर्ज—देख हमें आवाज न देना ... ..]

अपनी मजिल भूल न जाना, ओ राही दीवाने !
इस माया-नगरी को पगले, क्यो तू अपनी माने ॥

पल-पल वीती जाए उमरिया, सोच वावरिया ।
इस दुनिया से दूर कही है तेरी नगरिया ।
दिल मे जिसके ज्ञान-उजेला, वोह मंजिल पहचाने ॥

दुनिया सारी जान यह फानी, झूठी कहानी ।
मोह मे अन्धा वन कर क्यो करता मनमानी ?
आखें वन्द होते ही होगे, सारे खत्म फसाने ।

अव भी क्यो ना होश सभाले, मन समझा ले ।
धर्म अहिंसा को अपना के अव तो अपनी विगडी वना ले ।
जो जीवन की राहो में सभले, वे ही लोग सयाने ॥

बीत रहे दिन तेरे

[तर्ज—तेरे प्यार का आसरा............]

बीत रहे दिन पगले ये तेरे।
रट ले प्रभू को तू सांझ-सवेरे॥
विषयो मे काहे जीवन गवाए,
मृग-तृष्णा मे मन भटकाए,
गया वक्त तेरे हाथ न आए—
करले चाहे तू जतन घनेरे—रट ले ...
संगी-साथी कोई न तेरा,
मोह-ममता ने तुझ को घेरा,
दिल मे जिस के ज्ञान-उजेरा—
कट जाए उसके चौरासी के फेरे—रट ले ..
गीत प्रभू के अब तो गा ले।
अपनी बिगडी आप बना ले।
डूबती किश्ती पार लगा ले।
मुक्ति मे होगे फिर तेरे डेरे—रट ले

तू तो राही है दूर नगर का ?

[तर्ज—रुक जा, रुक जा ओ.......]

सुन ले, सुन ले ओ जाने वाले सुनले,
तू तो राही है दूर नगर का।
बड़ी दूर तेरी मंजिल है,
तुझे पता नही अपनी डगर का॥

अपने को नही देखा, मजिल भी न पहचानी।
गफलत मे ही खो दी, यह जिन्दगी लासानी ॥
इस दुनिया की माया पर, क्यो दिल ललचाया है ?
यह तो चलती-फिरती, बादल की-सी छाया है ॥
क्यो इधर-उधर अपनी, भटकाए नजरिया है।
इस फानी दुनिया से, तेरी दूर नगरिया ॥
जीवन की राहो मे, हिम्मत का सहारा ले।
"हिम्मत ही साथी है" इस गीत को दोहरा ले ॥

यह जगत मुसाफिरखाना है ?

[तर्ज—हमे उन राहो पर चलना......]

यह जगत मुसाफिरखाना है, जहा आना और जाना है।
हर इक इन्सा महमा है यहा, होना सब को ही रवाना है ?
ये जितनी मस्त बहारें है, ये जितनी ऊँची मीनारे हैं।
सब माया है, इक छाया है, क्यो दिल तेरा दीवाना है ?
डाली पर पछी बोल रहा, जिन्दगी का राज वो खोल रहा।
जैसी करनी वैसी भरनी, फिर काहे को पाप कमाना है ?
माँ-बाप पति पत्नी भ्राता, सब झूठा है रिश्ता-नाता।
कोई यार नही, गमख्वार नही, मतलब का सारा जमाना है ?
कोई हसता है, कोई रोता है, कोई पाता है कोई खोता है।
कही गम है यहा, कही हैं खुशियाँ, दुनिया का यही फ़साना है ॥

उठ, होश में आ ?

[तर्ज ओ लूटने वाले जादूगर ·········]

उठ, होश मे आ अब तू पगले ! क्यो माया मे भरमाया है ?
हीरा अनमोल मिला तुझ को, क्यो कौडी बदले गवाया है ॥
ओ भूले जीवन के राही, है दूर कही तेरी मजिल ।
यह सजी-धजी रह जाएगी, दुनिया की सब झूठी महफिल ।
इस महफिल की रगीनी पर, क्यो दिल अपना ललचाया है ॥
तू अपनी आँखे खोल जरा और जल्दी अपना माल बचा ।
मोह लोभ लुटेरो ने तेरे पीछे हे कैसा जाल रचा ?
जो इनके धोखे मे आया, उस ने सब-कुछ ही लुटाया है ॥
क्यों करता है मेरी-मेरी, यहाँ कोई भी चीज नही तेरी ।
यह कचन-जैसी काया भी, बन जाय मिट्टी की ढेरी ।
इस नश्वर काया-माया पर, फिर क्यो इतना इतराया है ॥
इस मानव-जीवन मे भी जो कोई ज्ञान का दीप जला न सका ।
और मन-मन्दिर के अन्दर से अज्ञान अन्धेरा भगा न सका ।
तलिया मल-मल कर पीछे से, वोह रोया और पछताया है ॥

अपनी बिगड़ी बना ले !

[तर्ज—मुझे प्यार की जिन्दगी······]

ओ इन्सान की जिन्दगी पाने वाले ।
यह मौका मिला अपनी बिगडी बना ले ॥
यहा चन्द रोजा तेरी जिन्दगानी ।
झूठी दुनिया की झूठी कहानी ।
इस माया की दुनिया से दिल को हटाले ॥

डग-मग डोले तेरी यह नैया ।
वन जा अपना आप खिवैया ।
नैया को अपनी किनारे लगा ले ।।
तेरी जिन्दगानी तेरे हाथ मे है ।
तेरी खुद की करनी तेरे साथ मे है ।
सोयी अपनी किस्मत अव तो जगा ले !!
ऐ राही ! क्यो वनता यहा पे दीवाना !
कही दूर दुनिया से तेरा ठिकाना ।
मजिल पे जल्दी कदम अव वढा ले !!

आखिर जाना ही होगा !

तर्ज—रग दिल की धडकन भी······ ······]

एक दिन दुनिया से तुझको जाना ही होगा ।
महमाँ वनके आया जो, रवाना ही होगा !
ये वहारें, ये समा वस कुछ ही दम के है ।
दौर फिर चलते यहा मातम और गम के है ।
वहार के वाद खिजा को भी आना ही होगा !!
यह चढता सूरज भी, है शाम को ढल जाना ।
यह अकड-अकड चलना, है खाक मे मिल जाना !
मिट्टी मे इस मिट्टी को मिलाना ही होगा !!
सास-सास पर वज रही यहा काल की भेरी !
क्या पता कव आ जाए पगले ! वारी तेरी !
मौतकी इस कहानी को दुहराना ही होगा !!
वक्त है अव भी सभल जीवन की राहो मे !,
फूल वन कर तू समा दुनिया की निगाहो मे !
हर जवा पर फिर तेरा फ़साना ही होगा !!

यह मेला तो बस दिन चार है ?

[तर्ज—चाहे पास हो चाहे दूर हो ....]

झूठा संसार है, झूठी बहार है।
यह तो मेला हा बस दिन चार है।।
ओ परदेसी! भूल न जाना, दूर कही है तेरा ठिकाना।
राग-रग मे हो दीवाना, मत न यहाँ पर दिल को फसाना।।
दुनिया है यह मुसाफिरखाना, लगा यहाँ पर आना जाना।
कोई भी यहाँ टिक के रहा ना, सिर पर गूँजे काल तराना।।
बडे-बडे योधा अभिमानी, रही न उन की नाम निशानी।
खत्म हुई सब ही की कहानी, जिन्दगी है इक बुलबुला पानी।।
बीत गए दिन हुए वो पराए, लौट के अब वो कभी न आएँ।
बाकी को भी तू क्यो गँवाए, इधर-उधर मन को भटकाए।।
इस फानी जग पर जो लुभाते, तलिया मल-मल वो पछताते।
जीवन अपना व्यर्थ लुटाते, खुद रोते और जग को हसाते।।

तेरी नैया डगमग डोले !

[तर्ज—तेरा जादू न चलेगा ....]

सुन मनवा तू मेरे भोले !
तेरी नैया डग-मग डोले।
सीधे पथ पर अब तू होले।
काहे झूलता पाप-हिंडोले।।
कहाँ से चल कर आया तू, और कहाँ है जाना ?
इस मायावी दुनिया मे, कहाँ तेरा ठौर-ठिकाना।
पगले! क्यो न तू अँखियाँ खोले !

वधन मे तू पडा रहा, कष्ट अनेक उठाए।
दर्द-भरा अफसाना तेरा, फिर भी होश न आए।
सयाना वो ही जो वन्धन खोले।।
मौका मिला नायाब तुझे, कुछ तो लाभ उठा ले!
अपने अन्दर बाहर का, सारा मैल मिटा ले।
जिन्दगी के दाग सब धोले।
छोड दे झूठ बुराई को, और नेकी को अपना ले।
मन-मन्दिर के अन्दर अव, ज्ञान की जोत जगा ले।
क्यो न जीवन मे मधु घोले।।

तो कितना अच्छा होता!

तर्ज—अपनी उलफत पे जमाने का ···]

अपनी जिन्दगी पे गर इन्सान का पहरा होता,
तो कितना अच्छा होता?
इसकी दुनिया मे भी सुख-चैन का सवेरा होता,
तो कितना अच्छा होता?
तन मिले, कदम मिले, पर मन न मिलने पाए।
दिल की वगिया मे कभी फूल न खिलने पाए।
इसकी मजिल को जो काटो ने न घेरा होता—तो ·······
अजव लोग है कैसे ये दुनिया वाले।
ऊपर से तो उजले है मगर अन्दर काले।
इन के दिल मे न जो नफरत का अन्धेरा होता—तो······
पास रह कर भी वहुत दूर-वहुत दूर हैं ये।
पाके दौलत को यॉं कितने मगरूर हैं ये।
इनके जीवन मे जो ज्ञान का उजेरा होता—तो······

नादान ! क्यों अब भी सोता है ?

[तर्ज—जब प्यार किया तो···· ·]

नादान ! क्यो अब भी सोता है ?
मौका मिला नायाव तुझे, क्यो हाथ से इसको खोता है ?
दूर वडी तेरी मजिल है ?
फिर भी क्यो इतना गाफिल है ?
कदम बढा अपनी मजिल पर, किस्मत को क्यो रोता है ?
तूफानो से जो हरदम खेले ।
हँस–हँस कर सव सकट झेले !
इस दुनिया मे सच्चा वोह जीवन का राही होता है ।।
काम, क्रोध, मद, लोभ लुटेरे ।
हरदम रहते तुझको घेरे ।
अपने जीवन की चादर के, दाग न क्यो तू धोता है ?

जरा खुद को पहचान ले बन्दे !

[तर्ज—जरा सामने तो आ ·]

जरा खुद को पहचान ले बन्दे ! तेरा असली कहा पे मुकाम है ?
क्या करने को आया था यहा और करता यहा क्या काम है ?
दुनिया की उलझन मे मन को उलझा, भूल गया अपना-आप है ।
अपने-आप को भूल यहा पर, वढ-वढ के करता क्यो पाप है ?
तेरे जीवन मे दु ख का जो राज है, तेरे पापो का ही यह अजाम है ।।
धर्म का सौदा कर ले मुसाफिर । जीवन यह माला-माल वने ।
यहाँ भी सुखी आगे भी सुखी हो, दोनो जगह खुशहाल वने !
भली-बुरी करे जो तू आज है, वस किस्मत इसी का नाम है !।

अपनी करनी पार उतरनी-निश्चय यह दिल मे तू धार ले।
जीवन चाहे आज बना ले, अपने को चाहे विगार ले।
बस हाथ मे तेरे तेरी लाज है, फिर होता यहा क्यो वदनाम है !!

देख, किसी का दिल न दुखाना !

[तर्ज—देख हमे आवाज न देना ' '']

देख किसी का दिल न दुखाना,
ओ दौलत के दीवाने !
नही तो इक दिन तुझे भी पगले।
पडे गे आँसू वहाने ।।

माया है यह आनी-जानी,
जैसे नदिया का वहता पानी,
फिर क्यो करता है मनमानी
चेत जा अव भी सयाने ।।

दुखिया दिल की आह वुरी है,
तेरे लिए एक पैनी छुरी है,
फिर क्यो जुल्म पे नियत धरी है,
खेले खेल मनमाने ।।

वड़े-वडे धनवान यहाँ आए,
आखिर सब मिट्टी मे समाए,
फिर किस पर तू अकड दिखाए,
सुन ले मेरे तराने !!

देखो कर्मो की यह तसवीर !

[तर्ज—आ लौट के आ जा]

देखो, कर्मों की यह तसवीर, मुनि-जन तुम्हे दिखाते हैं।
चाहे कह लो इसे तकदीर, ऋषि-जन यह बतलाते हैं !।

कर्मो की गति कही ना जाए करमन की गति न्यारी।
वन-वन भटके राम-से राजा, बिछुडी जनक दुलारी।
कुछ कर न सके रघुवीर, मुनि ··· ···

कदम-कदम पर कर्म का छलिया, कैसा छल दिखलाए।
पल मे तो सर ताज सजाए, पल मे भीख मगाए।
मिटे कर्मो की ना तहरीर, मुनि ······

कर्मो के आगे इस दुनिया मे चलता न कोई उपाए।
कागज हो तो हर कोई बाटे, कर्म न बाटा यह जाये !
चाहे लाख करो तदवीर, मुनि ····

काहे को तू धीरज खोए, इत-उत मन भटकाये।
मन का सोचा कभी न होता, कर्म यह नाच नचाए।
फिर क्यो तू बहावे नीर, मुनि ···

मैं क्या चाहता हूँ ?

[तर्ज—अगर दिल किसी से···· ····]

महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूँ ?
तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ ।।

तेरे ज्ञान-अमृत का पीकर मैं प्याला !
तेरी भक्ति मे डूबना चाहता हूँ ।।

किसी की खुशी मे खुशी मुझ को होवे ।
मैं सारे जहां का भला चाहता हूँ ।।
जनम-जनम का मैं दुखियारा ।
कि चैन से अब तो जिया चाहता हूँ ।।
मेरे कर्मो ने मुझ को नाच नचाया !
कि कर्मो से होना रिहा चाहता हूँ ।।
तमन्ना यही है, यही आरजू है ।
ऐ भगवन ! तुम्हे देखना चाहता हूँ ।।

प्रेम का प्याला पी ले !

[तर्ज—बडा बेदर्द जहा है ...]

प्रेम का प्याला पीके, जहा मे खुशी से जीके;
अरे ओ जीने वाले, प्रभु-गीत गा ले ।।
हीरा जनम अमोल यह, मिले न बारम्बार ।
पाप-मैल को साफ कर, ले अपना-आप सवार—
तू अपना भाग्य-विधाता, और जीवन-निर्माता, अरे ...
सास-सास मे प्रभु भज, वृथा सास मत खोय ।
न जाने इस सास का आवन होय न होय ।
पगले ! तेरी जिन्दगानी, है एक बुलबुला पानी, अरे ... ...
भक्ति, ज्ञान और प्रेम से, मिलता दिल को चैन ।
सब से हिल-मिल चालिए, बोलिए मीठे बैन ।
यही जीवन की निशानी, बाकी सब खत्म कहानी, अरे ...
हारी बाजी जीतले, सब-कुछ तेरे हाथ ।
भजन-वन्दगी से तेरी, बन जाए बिगडी बात ।
मिटे जनम-जनम के फेरे, होगे मुक्ति मे डेरे, अरे ....

केवल मुनि

मुनि श्री केवलचन्द्रजी 'केवल'

'केवल मुनि' जी जैन-समाज के उदीयमान कवि हैं। आप जैन-जगत् के लब्ध-प्रतिष्ठ, महान् सन्त जैन-धर्म दिवाकर श्री चौथमल्ल जी महाराज के अन्यतम शिष्य हैं। आपका जन्म ओसवाल कुल मे हुआ।

'केवल मुनि' प्रयाग विश्व-विद्यालय की 'साहित्यरत्न' हिन्दी-परीक्षा उत्तीर्ण हैं। वैसे तो आपको काव्य-रचना के प्रति बचपन से ही अनुराग रहा है और स्वत स्फूर्ति से प्रेरित होकर ही आपने कविता-रचना प्रारम्भ की है। परन्तु, "साहित्यरत्न" परीक्षा पास होने के बाद आपकी कविताएँ चमक उठी हैं। काव्य-शैली ने भी एक नई अगडाई ली है और एक नई करवट बदली है। जिससे आपकी रचनाएँ जन-मन का आकर्षण-केन्द्र बनती जा रही हैं।

थोडे समय मे ही आपने काव्य-सृष्टि की दिशा मे अच्छी गति-प्रगति की है। आपकी कविता-शैली पर विशुद्ध आधुनिक ढग का निखरा हुआ रग है। भविष्य मे आप कवि-समाज मे विशेष गौरव तथा आदर का स्थान प्राप्त कर सकेंगे—ऐसी आशा है।

आपकी काव्य-धारा मे साहित्यकता और सरसता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। आपकी कविता मे प्रवाह है, जो इस बात की ओर इगित करता है कि कविता और कविता की शब्द योजना हृदय के स्पन्दन से उत्पन्न हुई है और वह निर्झर की तरह अकृत्रिम धारा के रूप मे वह रही है।

आपकी 'भजन-माला' 'जयन्ती-गीत' 'नई भेंट' 'गीतावली', 'नये गीत', 'सरस-संगीत' 'गीत-सौरभ' आदि अनेक कविता-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन सबका समाज मे बडा आदर हुआ है। 'नई भेट' मे आपकी काव्य-धारा और कल्पना-स्रोत का सबसे निखरा हुआ रूप है।

उसी को मिलते है भगवान !

[तर्ज—कितना बदल गया इन्सान ······ ···]

सच्ची श्रद्धा, सच्चा चारित्र, सच्चा होवे ज्ञान,
उसी को मिलते है भगवान ।
चाँद-सा निर्मल, फूल-सा कोमल, उज्ज्वल सूर्य-समान ।।

डसे न जिसको क्रोध का काला, पिये नही जो मद का प्याला !
मन पर नही माया का जाला, जले न जिसके लोभ की ज्वाला ।
शाँत-धीर हो, नम्र-सरल हो, निर्लोभी गुणवान ।।

ईश्वर मिले न गगा न्हाए, ईश्वर मिले न तीरथ जाए ।
ईश्वर मिले न राख लगाए, ईश्वर मिले न धूनी रमाए !
भक्ति तीर्थ हो, ज्ञान का जल हो, सदाचार का स्नान ।।

जिसका करुणा-निर्भर मन हो, जिसके अमृत-सने वचन हो ।
जिसके निश्चल-शात नयन हो, सत्य-प्रेम ही जिस का धन हो ।
'केवल मुनि' बस आत्म-ज्योति का, पाए वही वरदान ।।

गरीब दीन को ठोकर न लगाओ !

[तर्ज—गरीब जान के ठोकर न··· ··]

गरीब दीन को ठोकर न तुम लगा देना !
द्वार पे आये को खाली न तुम भगा देना ,!

जहाँ मे जिनका कही ठौर न ठिकाना है !
जिन्दगी है क्या ? नही जिन्होंने अभी जाना है ।
ऐसे बेसहारो को कभी तो आसरा देना ।।

तडप जाती हैं कभी बुलबुले चमन के लिए !
तरस जाते है कभी शहशाह कफन के लिए !
मस्त बहार मे, खिजा को न तुम भुला देना !!

चोट पे चोट जिन्हे लग रही गरीबी की'
कदम-कदम पे ठोकरे हैं बदनसीबी की !
उन पे करके दया, दु ख उनका मिटा देना !!

जो है छोटे कभी उन पे भी तुम नजर करना !
कर सको तो जरा 'केवल मुनि' मेहर करना !
अपनी हसी के लिए उन को न तुम रुला देना !!

सच्ची भक्ति

[तर्ज—कहीं पे निगाहें, कहींपे........]

कही फिरे मनुआ कहीं फिरे माला,
प्रभु ऐसी भक्ति से नही मिलने वाला ।।

आशा के तृष्णा के मन मे खयाल हैं !
मकडी के तार-जैसे बिछ रहे जाल हैं !
हाथो मे घूम रही गट-गट माला····

वगुले की तरह ये जो भक्त बन जाते हैं !
कर्म-कथा करें, माला निन्दा की घुमाते है !
राम करे ऐसो से पडे नही पाला·······

भक्ति की शक्ति से स्वर्ग झुक जाते हैं !
भक्ति से ही प्रभु जी घर बैठे आते हैं !
भक्ति की ज्योति से करले उजाला·······

प्रीत मेरी कभी न छूटे !

[तर्ज—मैंनें देखी जग की रीत······]

मेरी लगी चरण से प्रीत, प्रीत मेरी कभी न छूटे ।
मैं गाऊ तुम्हारे गीत, गीत प्रभु मीठे-मीठे ।।

प्राणो के आधार प्रभु नयनो के तारे हो,
आशा की उज्ज्वल ज्योति, जीवन सहारे हो,
मेरे तुम ही सच्चे मीत, मीत दुनिया के झूठे ।।

तारन तरन भव - सागर तिराइये,
पतित - पावन नाथ पावन बनाइए,
है यही कामना देव । पिऊ प्रेमामृत घूटे ।

भाग्य से ही, पुण्य से ही प्रभु तुम्हे पाया है,
'केवल मुनि' चरणो की शरण मे आया है,
मैं लू कर्मों को जीत, जीत भव-वन्धन टूटे ।।

पहले तो खूब दृढ आसन लगाइए !
वाणी की वीणा पे फिर प्रभु गीत गाइए !
"केवल" पीओ तुम प्रेम का प्याला·······

मैं क्या चाहता हूं ?

[तर्ज—भगवान तेरे घर का सिंगार जा रहा है·········· ···]

छाया चरण कमल की भगवान चाहता हूँ,
भक्ति मे खुश रहूँ मैं वरदान चाहता हूँ !
जागें करोड़ों जिसकी, सगीत-माधुरी से ,
जीवन-सितार मे मैं वह तान चाहता हूँ !
जव नाम लूँ तुम्हारा, जव तुम मे लीन होऊँ,
डोले न मन जरा भी, वह ध्यान चाहता हूँ !
भव-भव के ताप नाशे, हृदय मे ज्योति जागे ,
वाणी-सुधा का मीठा, रस-पान चाहता हूँ !
ओठो की मुस्कराहट, पल भर न दूर होवे,
खिलती रहे खिजा मे, वह शान चाहता हूँ !
आशा है, आसरा है, 'केवल मुनि' तुम्हारा ,
सव वन्धनो से छूटू , कल्याण चाहता हूँ !

गौतम-स्तुति

[नज—जव तुम्हीं चले परदेश · ·· ···· ··]

माता पृथ्वी के नंद, करें आनन्द, मदा मुख पावे ,
जो गौतम गणपति ध्यावे !

जय २ गणेश जय गण-नायक, जय २ गणधर जय शिवनायक,
लाखो नर-नारी देवी-देव गुण गावें।
दुर्भाग्य मिटे दारिद्रय नशे, सौभाग्य बढ़े सम्पति विलसें,
नूपुर रणकाती लक्ष्मी रानी आवें।
हैं विघ्न-विनाशक जग-नामी, लब्धि-सम्पन्न निधि-स्वामी,
आशा,तरु मे नव-नव पल्लव प्रकटावे।
दुर्मति-वारक सकट-हर्त्ता, शरणागत के पालन-कर्त्ता,
शत्रु भी मित्र बन सादर शीश नमावे।
"केवल मुनि' मगलाचार करें, दें ऋद्धि-सिद्धि भडार भरें,
मकरद-गध-सा दिग्दिगंत यश छावे।

युवकों का नयी प्रतिज्ञा

[तर्जः—तुम मुझको भूल जाओ........]

हम सब करें प्रतिज्ञा, अब से नही लडेगे,
सच्चे हृदय से कहते, हम प्रेम से रहेगे।
हम सब है भाई-भाई, जैसे है दोनो आखें,
पक्षी को जैसे प्यारी, होती है दोनो पाखें,
डाली पै फूल खिलते, हम इस तरह खिलेंगे।
इक रङ्ग-ढङ्ग होंगे, एक धारा एक किनारा,
रेखाएं टूट करके, इक होगा रूप प्यारा,
मिलती है गगा-यमुना, ऐसे गले मिलेंगे।
होगा न मेरा तेरा, जो होगा सब हमारा,
गू जेगा सब दिशा मे 'हम एक हैं' का नारा,
बू दों के मेल से ही जीवन हिलोर लेंगे।

'केवल' समाज के हित, सब-कुछ करे समर्पण,
शिव-सुख तभी मिलेगा, कहता है जैन-दर्शन ;
जो राग-द्वेष त्यागे, वे ही सुखी बनेंगे।

प्रभु गीत गा ले

[तर्ज—रिमझिम बरसे बादरवा...... ......]

पल-पल बीते उमरिया, मस्त जवानी जाए,
प्रभु गीत गा ले, गा ले प्रभु........

प्यारा-प्यारा बचपन पीछे खो गया, खो गया,
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया, हो गया,
बार बार नहि पावे रे!
बहती गगा है प्यारे, मौका है न्हाले—गा ले........

कैसे—कैसे बाके जग मे हो गए, हो गए,
खेल खेलकर अन्त जमी पर सो गए, सो गए,
कोई अमर नही आया रे!
पछी ये फूल रंगीले, मुर्झाने वाले, गा ले........

तेरे घर मे माल मसाले होते है, होते है,
भूख के मारे कई बिचारे रोते है, रोते हैं;
उनकी कौन खबर ले रे!
जिनके नहि तन पै कपडा, रोटी के लाले, गा ले........

गोरा—गोरा देख वदन क्यो फूला है, फूला है,
चार दिनो की जिन्दगानी पर भूला है, भूला है,
जीवन सफल बना ले रे!
'केवल मुनि' समझाए, ओ जाने वाले, गा ले........

जम्बू का वैराग्य-रग

[तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश ··· ·······]

संसार-भोग को त्याग, लिया वैराग्य, हुए व्रत धारी,
धन-धन जम्बू ब्रह्मचारी।
दोगन्दुक देव-सा वैभव था, मतवाला यौवन अभिनव था,
आठो काता थी सुन्दर देवकुमारी।
जो नजर पार्थ का तीर बने, जिससे घायल रणधीर बने,
वह नजर भी उनकी नजर के सम्मुख हारी।
फूलो-सी हँसी रिझाने को, रोई रिमझिम-सी लुभाने को,
नारियो ने मोहने को बातें की प्यारी।
ससार स्वप्न को माया-सा, समझा बादल की छाया-सा,
मुँह मोड लिया सयम ले ममता मारी।
कुल तार दिया भव-पार हुए, जिन-शासन के शृगार हुए,
'केवल मुनि' गुण गावे सब ही नरनारी।

दुनिया का बाजार

[तर्ज—जीया बेकरार है······· ····]

दुनिया इक बाजार है, सौदे सब तैयार हैं,
जी चाहे सो लीजिए, नही इनकार है।
दुनिया के बाजार मे प्यारे लाखो लोग ठगाए जी,
ऐसी वस्तु लेना मित्र तू यहाँ वहाँ सुख पाए जी।
लिया किसी ने रत्न-जवाहर, किसी ने सोना-चाँदी जी;
किसी ने मादक वस्तुत जहर मे, पूँजी सभी गँवादी जी।

राम ने अपना जन्म सफल कर जग मे, नाम कमायाजी,
जीवन-रत्न के वदले मूरख रावण अपयश पायाजी।
शेर शिवा राणा प्रताप ने शौर्य तेज अपनाया जी,
पन्ना ने स्वामी भक्ति में प्यारा लाल कटायाजी।
शूल भी हैं, और फूल भी है, यह दुनिया एक वगीचाजी,
'केवल' आनन्द पाया जिसने पुष्प का पौधा सींचाजी।

चार भावनएं

[तर्ज—अफसाना लिख रही हूँ..........]

भावना चार हैं चारो ही अपना रग दिखाती हैं,
यह किस टाइप का प्राणी है, भावनाएं वताती है।
"जो मेरा है सो मेरा है, और तेरा भी मेरा है,"
दानवी भावना संसार मे विप्लव मचाती है!
"जो मेरा है सो मेरा है, और तेरा सो तेरा है,"
मानवी भावना जग में रहें कैसे सिखाती हैं!
"जो तेरा है सो तेरा है और मेरा भी तेरा है।"
ये दैवी भावनएँ प्रेम की गंगा वहाती हैं!
"न तेरा है न मेरा है, इसे ब्रह्म भावना कहते।"
यही शुद्ध भावना भगवान के पथ पर विठाती है!
"कौरव और पाण्डव, राम प्रभु महावीर चारो ही"
प्रतिनिधि चार ही भावो के हैं नीति सिखाती है!
वनो भगवान 'मुनि केवल' देवता या फिर मानव ही।
स्व-पर कल्याणकारी भावना जग मे पुजाती है!

भक्ति का महत्व

[तर्जः—अफसाना लिख रही हूं..........]

महावीर के चरणो मे जिसका सच्चा प्यार है,
भव-सिंधु के भवर से नैया उसकी पार है।
लाखो मे कह सकता हूँ यह दावे के साथ मैं,
भगवान की भक्ति ही इस जीवन का सार है।
बन जाओ मस्त ध्यान मे दुनिया को भूल कर,
करुणा-सिंधु हैं दुखियो की सुनते पुकार हैं।
इस द्वार से कोई कभी खाली नही गया,
इस नाम की इस मन्त्र की महिमा अपार है।
एक बार जाप तो जपो चाहो सो पाओगे,
वर्धमान प्रभु "केवल मुनि" भरते भण्डार हैं।

शाद किया

[तर्ज—तकदीर बनी बनकर]

सुख चैन मिला, दिल शाद हुआ तूने जो किसी को शाद किया।
बरबाद हुआ बरबाद किया, आबाद हुआ आबाद किया ॥
अरमान तडपते हैं उसके, आशाओ में उसके आग लगी।
जिसने हँसते को रुलाया है, दिल तोड दिया नाशाद किया ॥
बाधा हो किसी को गर जिसने बधन मे पडा वो सडता है।
आजाद हुआ बंधन टूटा जिसने पहले आजाद किया ॥
भव-भ्रमण मिटा, आनन्द हुआ 'केवल मुनि' मन चाहा पाया।
सर्वस्व समर्पण कर दिल से जिसने उस प्रभु को याद किया ॥

ओ सोने वाले

[तर्ज —कोई रोके उसे और यह कह दे ··· ··]

ओ सोने वाले जाग जरा, तू देख उजाला आया है।
काली अँधयारी मे तू ने, जीवन का लाल गँवाया है॥
दुनिया के भोले-भाले ठग, हँस-हँस कर तुझको लूटते हैं।
मोह की मदिरा पीकर, तूने अपना भी भान भुलाया है॥
सोने ही सोने मे तेरा, सोना मिट्टी बनता जाता।
सोने वालो ने खोया है जगने वालो ने पाया है॥
तू अपनी आँखें खोल जरा, 'केवल मुनि' अपना माल बचा।
उठ बैठ जा-आगे- जाना है, क्यो स्वप्नो-मे भरमाया है॥

संप कीजिए

[तर्जः—चुप चुप खडे हो जरूर कोई बात है ······ ····]

मेरे मित्रो फूट को विदा कर दीजिए,
अब प्रेम कीजिए जी अब प्रेम कीजिए।
सच बोलो कब तक ऐसे बने रहोगे,
कब तक इसी तरह तने तने रहोगे,
तानने से टूटती है तान मत कीजिए!
दस रुपये में लाये एक तश्तरी नई,
मुफ्त मे न लेवे यदि टूक-टूक हो गई,
बुद्धिमानो इस न्याय पर ध्यान दीजिए।
पति-पत्नी लड गए एक कुत्ता आ गया,
दोनो नही बोले सारी रोटियाँ वो खा गया,
किसका बिगाड हुआ इन्साफ कीजिए।

जागिए ! जागिए !! अब मत सोइए,
दिल साफ कीजिए निर्मल होइए,
मानना पडेगा तुम्हे आज मान लीजिए !

बीती बातें भूलिए, काटे न चुभोइए,
खो चुके हो बहुत कुछ अब मत खोइए,
उन्नति समाज की हो 'केवल' ऐसा कीजिए !

कोई द्वार तेरे आए

[तर्ज—बचपन की मोहब्बत को........]

दुनिया की मोहब्बत मे, जीवन न गवा देना,
भगवान् की भक्ति को दिल से न भुला देना।

आशा की ले के प्याली कोई द्वार तेरे आए,
सहारे के लिए कोई छाया मे आना चाहे,
तू आशा तोड उसकी ठोकर न लगा देना।

धनवान है तो देना, देना भी खुशी से देना,
देने को नही हो तो मीठे ही वचन कहना,
कड़वी सुनाके बातें काटे न चुभा देना।

ससार के सागर मे नैया न भटक जाए,
तूफानी तरगो मे फँसकर न अटक जाए,
विषयो के भवँर से तू नैया को बचा लेना।

मरने के बाद प्राणी कोई नही है तेरा,
'केवल मुनि' बता फिर करता क्यो मेरा-मेरा,
सासो की नकद पूँजी यूँ ही न लुटा देना।

तकदीर को न रो

[तर्ज—सावन के बादलो........]

हिम्मत न वीर खो, दिलगीर तू न हो ;
तदबीर भी तो कर कुछ, तकदीर को न रो ।
आँसू न बहा रे, मोती न लुटा रे,
बेवक्त की रिम-झिम से, जीवन हरा न हो ।
गैरो को क्या तकता है, क्या खुद नही कर सकता है ;
तू शक्ति-पुञ्ज होकर, मत मित्र दीन हो ।
निराशा को हटा दे, कदम को तू आगे बढ़ा दे ;
कुछ करके दिखा दे, तो संसार साथ हो ।
'केवल' प्रभु-गुण गाके, मन को यह तू समझा दे ;
ये दिन भी ना रहेंगे, जब दिन रहे न वो ।

उठ होश मे आ

[तर्ज—आ जाओ तड़पते हैं........]

उठ जाग मुसाफिर होश मे आ, अब रात गुजरने वाली है;
अलसाई आँखें खोल जरा, अब रात गुजरने वाली है ।
प्राची मे लाली फूट रही, उषा अंगडाई ले जागी ;
कलियाँ चटकी तू भी मुस्का, अब रात गुजरने वाली है ।
क्यो रैन बसेरे मे भूला, मंजिल है तेरी दूर अभी ;
साहस करके तू कदम बढ़ा, अब रात गुजरने वाली है ।
यह मीठे ठगो की नगरी है, लुट गए करोडो परदेशी ,
चक्कर मे फस मत, माल बचा, अब रात गुजरने वाली है ।

तेरे कुछ साथी माल लिए, कुछ साथी खाली हाथ चले,
दुनिया से खाली हाथ न जा, अब रात गुजरने वाली है।
जो सोता है सो खोता है, जो जागता है सो पाता है;
"केवल मुनि" इस पर ध्यान लगा, अब रात गुजरने वाली है।

धर्म का पालन

[तर्ज—मार कटारी मर जाना ... ...]

सब कुछ भेट चढाना, धर्म को अपने गँवाना ना;
जीवन सफल बनाना, धर्म को अपने गँवाना ना।
किसी देवी के कोई नर गर हाथ डाले धर्म पर,
दुष्ट पूरे बल से जब हो तुल गया कुकर्म पर,
उस समय "ए धारिणी रानी" क्या करना चाहिए?
प्राण की रक्षा करे या प्रण पे मरना चाहिए?
जीभ काट मर जाना।

दशानन-जैसे बली योद्धा की भी परवाह न की,
सोने की लंका के वैभव पर भी ठोकर मार दी;
राम बिन आराम में भी उसको नही आराम था,
एक बार नही अनेको बार उसने यह कहा,
पतिव्रत—धर्म निभाना।

इक तरफ हो स्वर्ग का सुख एक तरफ भगवान हो,
एक पलडे मे हो दुनिया एक मे ईमान हो,
"पद्मिनी" तब क्या करे इसका तू कुछ दे जवाब,
एक क्षण भी बिना ठहरे कहा उसने ये सिताब,
जौहर कर जल जाना।

आर्य-पुत्री पूज्य देवी गुणवती विद्यावती,
धर्म पर बलिदान होती हैं सदा लज्जावती,
देश का जाति का कुल का मान दुनिया मेवढा-,
अमर कर जाती है अपना नाम सदियो तक सती,
'केवल मुनि' सुख पाना।

जीने की कला

[तर्ज—भगवान दो घड़ी जरा ....]

इन्सान जी सके तो तू इन्सान बन के जी;
धरती का भार बन के न हैवान बनके जी !
है जिन का पेट खाली, कभी उन की ले खबर,
ओ मौज करने वाले गरीबो पे कर नजर;
गिरतो को दे सहारा तू इन्सान बन के जी !
नैया भवर मे हो किसी की तो पार लगा दे,
आफत मे कोई दब रहा हो उस को उठा दे;
रोते हुए चेहरो की तू मुस्कान बनके जी।
अन्धो के लिए लाठी निराशो की आश बन,
अधियारे मे भटकते हुओ का प्रकाश बन;
'केवल मुनि' तू विश्व की इक शान बन के जी !

मान सनेही

[तर्ज—चले जाना नहीं ....]

खाली जाना नही, दुनिया मे आके, मान सनेही,
मेरी मान सनेही ।

छोटी-सी जिन्दगी है, हँसी खुशी से रहना,
कडवी जवान नही, कभी किसी से कहना,
दिल दुखाना नही, गालियाँ सुनाके, मेरी ....

एक भी पैसा तेरे सग मे जाना नही,
झूठी दुनिया के लिए पाप कमाना नही,
नर्क पाना नहीं, दीनो को सता के, मेरी० ....

नाम अमर रहता, मानव तो चला जाता,
सारा जमाना 'केवल' सुयश के गीत गाता,
यह भुलाना नही, घमड मे आके, मेरी० ....

जीवन की अस्थिरता

[तर्ज—हवा मे उडता जाए....]

दिन दिन वीती जायें, तेरी अमूल्य घडियाँ जीवन की,
लौट न पीछे आए, तेरी अमूल्य घडियाँ जीवन की ।

फर-फर फर फर हवा से काँपे जैसे पीपल पाती,
थर थर काँपे मौत से ऐसी तेरी जीवन वाती ।
टप टप टप टप खाली होवे ज्यो अजली का पानी,
फक फक फक फक रेल जाए ज्यो जावे मित्र जवानी ।

टन टन टन टन घडी बोलकर शिक्षा देवे प्यारी,
अभी-अभी तूने जीवन की घडी एक और हारी।
कांच की शीशी जैसे तेरे तन का होगा नाश,
'मुनि केवल' जीवन फुलडे की जग मे रहे सुवास।

जिन्दगी का खेल

[तर्ज—घर आया मेरा परदेशी ......]

क्यो अभिमान करे प्राणी, थोड़े दिन की जिन्दगानी।
झूठी काया माया है, बादल की-सी छाया है,
छाया हुई किसकी रानी ?
सब-कुछ छोड के जाना है, प्रीती तोड के जाना है,
भूल न जाना प्रभु वानी।
जो आता है जाता है, फूल खिले मुर्झाता है,
दुनिया है आनी जानी।
'केवल' प्रभू-गुण गा लेना, जीवन सफल बना लेना,
प्रभू-भक्ति है सुख दानी।

कड़वा न बोल

[तर्ज—पापी पपीहा रे ......]

जिया दुखेगा रे ! कडवा न बोल पछी, कडवा न बोल !
छोटी—सी जिन्दगी है, अमृत मे विष ना घोल !!

वशीकरण इक मन्त्र है, बोली प्यारी—प्यारी रे,
तीखा वचन तीर है भाई, कडवा वचन कटारी रे,
बोले तो बोल पहले, मन के काँटे पर तौल !

भूल करके भी कभी दे न किसी को गाली रे,
सबको पिला सदा खुश होकर, वचन सुधारस प्याली रे;
आनन्द बढाने वाला, वचन अमोल बोल !

एक वचन महा—भारत करवाने वाला,
एक वचन है प्यारे, शान्ति पहुँचाने वाला,
फूल बरसाता हुआ, 'केवल' तू मुखड़ा खोल !

माखन चोर

[तर्ज—चुप चुप खड़े हो.........]

छुप–छुप आते हो, माखन चुराते हो,
अब कहाँ जाते हो जी ?
पानी लेने को मैं नित्य जमना जी जाती हूँ,
पीछे आके देखती हूँ माखन न पाती हूँ;
दरवाजे बद होते, फिर कैसे आते हो ?

छोटे–छोटे हाथो से कैसे खोली साँकली,
छीके से उतारी कैसे माखन की माटली,
बोलो जी जवाब दो कैसे मुस्काते हो ?
पकड लिया है तुम्हे अब कहाँ जाओगे,
बोलो मेरे श्याम अब किसको बुलाओगे,
खूब जानती हूँ तुम बातो मे भुलाते हो ।

'केवल' यशोदा जी के पास मे ले जाऊँगी,
दो इधर दो उधर चपत दिलाऊँगी,
अच्छा, लो माखन खा लो, आँसू क्यो वहाते हो ?

गजब किया

[तर्ज—'आए भी वह गए भी' ·······]

नर तन रतन गँवा दिया, गजव किया सितम किया,
कुछ भी नही भला किया, गजव किया सितम किया।
जिस घर का तू चिराग है, करनी थी उसमे रोशनी,
लेकिन उसे जला दिया, गजव किया सितम किया।
वागे जहाँ मे महकना, तुझको था फूल की तरह,
काँटा वना चुभा किया, गजव किया सितम किया।
तुझको समझ के योग्य कुछ, आया जो तेरे पास मे,
तू ने उसे रुला दिया, गजव किया सितम किया।
दया, परोपकार, और भक्ति कभी करी नही,
भोगो मे सव भुला दिया, गजव किया सितम किया।
"केवल" समाज, धर्म में, चन्दा कभी नही दिया,
ऐशो मे धन लुटा दिया, गजव किया सितम किया।

वहनों से

[तर्ज—छोड़ गए वालम·····················]

भूल रही वहनो! तुम नाम प्रभु का भूल रही,
फूल रही वहनो! तुम माया-मोह मे फूल रही।

पूर्व-जन्म के पुण्योदय से सब-कुछ सम्पत्ति पाई,
खाली हाथ न जाना यहां से, खो कर पूर्व कमाई।
रूप जवानी आनी जानी, गर्व न इस का करना,
केसर काया राख बनेगी, एक दिन सबको मरना।
किस का पति है, किस की पत्नी, पुत्र-पुत्री है किस के,
जेवर कपडे भवन और धन, सब हैं जीते जी के।
नही किसी को कडवा कहना, नही किसी से लडना,
सब की सदा भलाई करना, दो दिन जग मे रहना।
गृहस्थ-धर्म का पालन करना, जीवन सफल बनाना,
सुयश फैलाना 'केवल मुनि', नाम अमर कर जाना।

व्यापारी से

[तर्ज—मोहन हमारे मधुवन मे...............]

व्यापारियो ! कर्त्तव्य को भूलाया ना करो;
साहूकार होकर शान को गवाया ना करो।
वन वेट और वन रेट ही बिजनेस का मूल है,
छल से कपट से धन मिले यह कोरी भूल है,
धोखे से भी धोखे मे कभी आया ना करो,
सौ के सवा सौ लिख लिए फिर व्याज अलग है
दो तीन रुपये सैंकडा लेना भी जुल्म है,
हर फसल पर फिर आंकडा बढाया ना करो।
आर्थिक अवस्था अच्छी है, वह देश सुखी है,
चीजो की कीमत बढ रही वह देश दुःखी है,
जलती होली मे लकडिया सरकाया ना करो।

महंगाई से लाखो करोडो दुखिया हो रहे,
मैले फटे कपडो मे आधे भूखे सो रहे,
सट्टे कर करके भाव तुम वढाया ना करो।

'सत्यमेव जयते नानृत" स्मृति यह कह रही,
असत्य: हारता है यह दुहाई दे रही;
किसी ने नाजायज नफा उठाया ना करो।

व्यापारी खुश थे देश के कष्टों को मिटाकर,
'केवल मुनि' धन-धान्य के भण्डार लुटा कर,
सपूतो, उनकी आन को मिटाया ना करो।

कुछ नहीं

[तर्ज—चाँदनी रात है.....................]

अखिया वंद हुईं, फिर कुछ नही,
जिसको अपना कहे वह कही तू कही।

भोले पंछी तू सोच कहाँ है,
वोल सज्जन। तेरा कौन यहाँ है, वोल सज्जन!
दुनिया मे मतलव की यारी, कोई किसी का नही।

आया था जव आया अकेला,
चार दिनो का है यहाँ मेला, चार दिनो;
जायेगा तव देखना प्यारे, कोई भी सगी नही।

धन-यौवन पै फूला फिरता,
माया—मोह मे भूला फिरता, माया—मोह;
कव तलक तेरी वनी रहेगी, अव तक है किसकी रही?

महावीर प्रभु के गुण गाले,
'केवल मुनि' निजानन्द पाले, केवल मुनि,
जिसने करी भलाई जग मे, याद उसी की रही।

मान करना नही

[तर्ज—छोड बाबुल का घर · ·]

स्वप्न ससार है, रहना दिन चार है,
मान करना नही—मान करना नही।
फूल फूला कि भवरे भी आने लगे,
तूटने के लिए गीत गाने लगे,
फूल था भूल मे, मिल गया धूल मे, मान करना नही
रूप यौवन की सन्ध्या मे ढल जाएगा,
और यौवन नशा भी उतर जाएगा,
इनमे मतवाला बन, मेरे भोले सज्जन ! मान करना नही
आज शादी करी कल को तलाक दी,
लक्ष्मी तितली—सी है यह नही एक की,
कहाँ चक्री का धन, कहाँ चौदह रतन, मान करना नही
सरसराता फुव्वारे का जल जो चढा,
मैंने देखा कि वोह सर के बल गिर पडा,
नेचर देती है दण्ड, रहा किसका घमड, मान करना नही
धर्म करणी किए बिन वहाँ पछताओगे,
अच्छे काम करोगे तो सुख पाओगे,
कहता 'केवल मुनि', शिक्षा मानो गुनी, मान करना नही

दो किनारे

[तर्ज—न यह चाद होगा न तारे················]

सदा न ये दिलकश नजारे रहेगे,
नही तुम, न साथी तुम्हारे रहेगे।

चले जाते हैं जो घडी भर कही ;
तो जिनके बिना चैन पडता नही ,
न यह प्यार होगा, न प्यारे रहेगे !

चमन नही रहेगा, नही गुल रहेगे,
नही चहचाहते ये बुलबुल रहेगे ,
हमेशा नही चाँद तारे रहेगे !

नई दुनिया होगी नया आशियाना ,
नए दोस्त दुश्मन नया आवोदाना ,
नही याद फिर ये विचारे रहेगे ।

रहा है, रहेगा यह वनना विगडना,
यह मिलना विछुडना वनना उजडना ,
यह दुनिया के वस दो किनारे रहेगे ।

प्रभु-भक्ति को 'केवल' मन मे वसा ले ,
दया प्रेम से अपना जीवन सजाले ,
यही सव वहा के सहारे रहेगे ।

जीवन के दो पहलू

[तर्ज—चुप चुप खडे हो ... ...]

सुख-दु ख दु ख-सुख दोनो साथ साथ है ,
दोनो आत जात हैं जी ।
दिनकर डूब गया अँधियारा छा गया ,
उपा मुस्काई फिर उजियाला आ गया ,
किसी वक्त दिन है, किसी वक्त रात है !

सूखा-सूखा पेड हुआ रँग-रूप खो गया ,
मधु-ऋतु आई फिर हरा-भरा हो गया ,
पतझड-मधु ऋतु दोनो न ठहरात है।
सयोग-गिरि से बहती वियोग-तरग है ,
दुनिया मे फूल और काँटे सग-सग हैं ,
मातम कभी है, कभी आ रही बारात है।
सागर मे कभी भाटा और कभी ज्वार है,
सुख-दु ख दोनो मानो बिजली के तार हैं ,
इन दोनो मे बडी गहरी मुलाकात है।
सुख-दु ख मे ही जीवन गतिमान है ,
दोनो के अस्तित्व से ही जीवन की शान है ,
पुण्य-पाप इन्ही के मात और तात है।
सुख के हिंडोले झूल मद मे न फूलना ,
दु ख के झोके मे प्रभु नाम को न भूलना ,
'केवल मुनि' समता ही बडी अच्छी बात है।

बदलती हुई दुनिया

[तर्ज—कभी सुख है कभी दु ख है……]

बिगडते और बनते हैं उजडते और बसते हैं,
हजारो वर्ष से दुनिया है, युँही तख्ते पलटते हैं।
जमीं ही की नही हालत, यही है आसमाँ की भी,
कभी सूरज चमकता है, कभी तारे निकलते है।
कभी जिन मे हवा तक भी पाँव धरती हुई डरती,
उन्हीं महलो मे चमगीदड व उल्लू राज करते है।

कभी जिन की निगाहो से काँपते मुकुट रत्नो के,
उन्ही आँखो मे कव्वे बेधड़क हो चोंच भरते है।
कही आशाएँ वर आती कही अरमाँ तड़पते है
कही पर फूल झड़ते है, कही मोती वरसते है।
कटे जजीर कर्मो की, मिटे तव खेल ये सारे,
मिले आनन्द 'मुनि केवल', मोक्ष के द्वार खुलते है।

मेरा न बोल

[तर्ज—पापी पपीहा रे]

कौन है तेरा रे! मेरा न बोल पछी! मेरा न बोल
कोई किसी का नही, अन्तर की आँखें खोल!!
झूठी माया मे फँस कर के बनता है, क्यो दीवाना,
कोई अमर नही है यहाँ पर, लगा है आना जाना,
तू ही रहेगा कैसे, इतना तो दिल मे तौल!
धन के और यौवन के मद मे, फिरता है फूला-फूला,
नश्वर भोगो के पीछे, अनश्वर प्रभु को तू भूला,
चेत अज्ञानी! अव तो सुख का मारग टटोल!
तुझको यह घमड है यह मेरा यह मेरा रे,
चार दिनो का खेल है प्यारे दुनिया रैन वसेरा रे,
'केवल मुनि' की शिक्षा मान ले वडी अमोल!

हित की बात

[तर्ज—मेरा दिल तोडने वाले]

दिया था पहले तूने कुछ, मिला है अव भी तू देना,
अरे मानव तू अपना दिल, न पत्थर-सा वना लेना।

ए परदेशी ! न इतराना, यहाँ चन्द रोज है रहना,
समझ कर अपने-सा सबको, किसी को दु ख नही देना।
मिली किस्मत से दौलत है, भलाई कर मजा लेना,
स्वाँस वीना बजे जब तक, प्रभु के गीत गा लेना।
मूर्खता की निशानी है, यहाँ की यहाँ उडा देना,
जहा जाना है कुछ वहाँ के लिए भी साथ मे लेना।
तेरे हित की सुनाते है, सज्जन ! तू मानले कहना,
'मुनि केवल' सुखी होगा, दुखी दिल की दुआ लेना।

प्रभु-विनय

[तर्ज—चुप चुप खडे हो· ·]

डग-मग डग-मग नाव मझधार है,
तेरा ही आधार प्रभु तेरा।
झझा के झकोरे प्रभु झूलने-सी झूलती,
छोटी-वडी लहरियो पे उतराती डूबती।
आशा की किरन तूही तूही पतवार है।
करुण क्रन्दन सुन चन्दना को तार दी,
अर्जुनमाली की नाथ बिगडी सुधार दी,
दयाशील देव ! क्यों देर मेरी बार है।
माता तू ही पिता तू ही तू ही मेरा प्राण है,
तेरे हाथ लाज अब मेरे भगवान है,
दीनवन्धु ! दीन की छोटी सी पुकार है।
मगल-करन तू ही तारन तरन है,
पतित-पावन 'मुनि केवल' शरण है,
तेरी दया-दृष्टि से मेरा बेडा पार है।

भामाशाह की महाराणा से प्रार्थना

[तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश ……]

अब कहाँ चले परदेश, छोड निज देश,
ओ प्रिय महाराणा ! इतना तो मुझे बताना ॥
यह क्या करते हो अन्नदाना ! कुछ नही समझ मे है आता,
भामा को अपना समझ न भेद छुपाना ॥
क्या गुनाह हुआ जो छोड रहे, क्यो प्यारा नाता तोड रहे,
मेरी घोली दाढी पर करुणा लाना ॥
यवनो की सेना आएगी, मेवाड मे धूम मचाएगी,
उस समय करेगा रक्षा कौन मर्दाना ?
मैं कभी नही जाने दूंगा, मैं प्रेम से तुमको रोकूंगा
जाओ तो मेरे पर पग देकर जाना ॥
घर-बार की भेट स्वीकार करो, और मान पूर्ण सत्कार करो,
सेवा का मौका देकर धन्य बनाना ॥
पच्चीस हजार सैनिको को, हथियार, वस्त्र और भोजन दो,
नही बारह वर्ष तक खाली होय खजाना ॥
ओ दानवीर ओ ! भामाशाह! 'केवल' तू धन्य वाह वा वाह:
सोई है तेरी जाति इसे जगाना ॥

भक्ति की रीति

[तर्ज—इक दिल के टुकडे……]

भक्ति की यह तो रीत नहीं, मन और कहीं तन और कही ॥
मोह-ममता ने परदा डाला, लहराती आँखो मे माया ,
तू हाथ मे माला ले बैठा, मन मे भगवान् की प्रीत नही ॥
मनवा विषयों मे झूम रहा, मनवा पापो मे घूम रहा ;
'केवल मुनि' कैसे समझाये, इस दाव मे तेरी जीत नहीं ॥
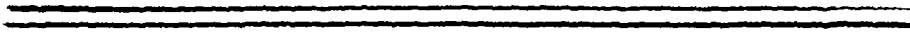
चन्दन मुनि

मुनि श्री चन्दनलालजी 'चन्दन'

श्री 'चन्दन' मुनिजी जैन समाज के युवक-हृदय कवियो मे से एक है। आप का जन्म स० १९७१ मे पजाब प्रान्त फीरोजपुर जिले के अन्तर्गत निओना गाँव मे ओसवाल कुल मे हुआ। आपके पिता का नाम रामामल और माता का नाम लक्ष्मी बाई था। बाल्य-काल से ही आपके सस्कार और विचार धार्मिक थे। उठते हुए तारुण्य के साथ धार्मिक विचारो पर ही तरुणाई का रग निखरता गया। तन और मन की जवानी का ऐसा मेल बैठा कि आप ससार की लीला से सर्वथा विरक्त हो गये।

वैराग्यावस्था मे आप कुछ वर्षो तक "सेठिया जैन विद्यालय, बीकानेर" के विद्यार्थी रहे। ज्ञान के प्रकाश से इनका वैराग्य और भी प्रदीप्त हो उठा। आखिर, स०१९८८ बसन्त पचमी के दिन आपने तपस्वी श्री पन्नालालजी महाराज के चरण-कमलो मे जैनेन्द्री दीक्षा धारण करके सयम के जलते हुए महामर्ग पर अपने मुस्तैदी कदम बढ़ाये।

श्री 'चन्दन' मुनिजी प्रारम्भ से ही अध्ययनशील रहे है। आपने अपनी बलवती ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिए कोई भी कमी उठा नही रखी। स्थानकवासी समाज के मनीषी विद्वान् सन्त उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज के निरन्तर एक वर्ष तक अन्तेवासी बन कर आपने शास्त्रीय चिन्तन किया, प्राकृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया और जीवन की नव्य एव स्फूर्त दृष्टि प्राप्त की। उसके बाद जैनाचार्य श्री आत्माराम जी महाराज के चरणो मे बैठ कर आपने जैन-आगमो का अच्छा वाचन तथा अध्ययन किया।

आपकी प्रकृति एव विचार बडे ही उदार है। आप समाज के प्रतिष्ठित सन्त है। आप की भाषण-शैली ऐसी सरस एव मनोरजक

है कि क्या वच्चे, क्या तरुण, क्या वूढे, क्या पुरुप और क्या नारी—सव मत्र-मुग्ध हो जाते हैं। आपके भापण का काव्यमय स्वर जनता के मन को मस्त बना देता है।

कविता की ओर आपका निसर्गज झुकाव है। आपकी 'खुशवूए चन्दन' 'महके चन्दन' 'मनहर माला' 'चन्दन गीताजलि' 'चन्दन पुष्पाजलि' "गीतो की दुनिया" आदि लगभग एक दर्जन कविता-पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने कविता की भापा मे 'देवकी दा लाल गज सुकमाल' 'सयनि राजर्पि' 'निर्मोही राजा चट्टान और लहरे आदि कुछ महापुरुपो के जीवन-चित्र भी प्रस्तुत किए हैं, जो समाज मे वडे ही समादृत हुए हैं। पजावी भापा मे भी आप अच्छी रचना करते है। "चन्दन दे चन्द चरचरे छन्द" और 'चटकीले छन्द' इन दो कृतियो मे आपकी पजावी भापा और छन्द मे वडी ही सरस एव मधुर कविताएँ है।

जाति-सुधार और सामाजिक-क्रान्ति के लिए आपकी कविताएँ वरदान सिद्ध हुई है। जन-मानस मे धार्मिक भावनाओ तथा सामाजिक चेतना को प्रोत्साहित करने के लिए भी आपकी काव्य-धारा ने अच्छा काम किया है। साहित्यिक मूल्य की अपेक्षा उनका धार्मिक तथा सामाजिक मूल्य अधिक है—ऐसा कह दूँ, तो सत्य के अधिक निकट होगा।

भविष्य मे समाज को 'चन्दन' मुनिजी से वहुत-कुछ आशाएँ हैं।

ओ परदेशी ! ओ दीवाने !

ओ परदेसी । ओ दीवाने ।
दुनिया को क्यो अपना जाने
कौन यहा पर मीत है तेरा
देश पराया लोग बेगाने
दूर पडी है तेरी मंजिल
लेटा क्यों तू लम्बी ताने
बीती रात उडा तू निंदिया
आया सूरज देख जगाने
एक रोज थी जिनकी चर्चा
आज बने वे सब अफसाने
वक्त कहा महावीर प्रभु का
राम-कृष्ण के कहा जमाने
आने का इक अर्थ है जाना
कहते गए सब पुरुष पुराने
कदम बढा तू मुक्ति-मग पर
'चन्दन' के सुन मस्त तराने

खुद को भुलाए चले गए

[तर्ज—हम बेखुदी मे तुम को ...]

हम बेखुदी मे खुद को, भुलाए चले गए
दुनिया मे जिन्दगी को, गवाए चले गए ...
आ के किया हमे यौवन से दीवाना
भूल गए हम असली ठिकाना
आगे को पाव यो ही बढाए चले गए ...
पाई नही हम ने वह नगरी सुहानी
मिटती है जहा पे दुःख की निशानी
नर्को मे आप को हाजी ! गिराए चले गए ...
कुछ तो कहो कि हम, खुद ही को पाए
भूले हुए यो ही हम, बदी को कमाएं
'चन्दन' तो गीत को ही, गुजाए चले गए ...

तरना होगा कि नही !

[तर्ज—मेरे मन की गगा और तेरे मन की जमना ...]

ज्ञान, गुणो की गगा और तप जप की जमना मे,
बोल बन्दे ! बोल, तरना होगा कि नही ।
मेरा जैसा कोई भी न, जन्मा और जमाने मे ।
रहा मनाता खुशिया निश दिन, जुलम सितम के ढाने मे ।
यम की महा मार से, टरना होगा कि नही ।
बोल बन्दे ! बोल, तरना होगा कि नही ।
गया भूल भगवान् दया को, दागा सुन की की महफिल मे ।
किया दीवाना दौलत ने यो, कभी न सोचा अपने दिल मे ।

अन्त समय धन जन का शरणा होगा कि नही।
बोल बन्दे! बोल, तरना होगा कि नही।

धर्म कर्म को और शम को, बेच सर्वथा खाया है।
'चन्दन मुनि' नर्क का तुझ को, खौफ जरा ना आया है।

पापो का फल आखिर भरना होगा कि नही।
बोल बन्दे! बोल, तरना होगा कि नही।

जाना होगा कि नहीं?

[तर्ज—मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमना '']

मात पिता सुत नारी, और तज कर दौलत प्यारी को,
सोच बन्दे! सोच, जाना होगा कि नही।

लाख चौरासी भटक भटक कर पाया मानव के तन को।
धर्म भुला कर पाप कमा कर, खोता है क्यो जीवन को।

अन्त समय तुझ को, पछताना होगा कि नही।
सोच बन्दे! सोच, जाना होगा कि नही।

कौन भला नादान अरे! है, तुझ सा और जमाने मे।
नही जरा भी नफरत जिसको, सुरा मास के खाने मे।

किए कर्मो का फल, पाना होगा कि नही।
सोच बन्दे! सोच, जाना होगा कि नही।

दया हया का जो तू 'चन्दन' आज मजाक उडाता है।
दीन दुखी के सिर पर हस हस, खट२ छुरी चलाता है।

अपना भी यो सीस, कटाना होगा कि नही।
सोच बन्दे! सोच, जाना होगा कि नही।

दिखादे जमाने को भगवान वन के

[तर्ज—आवाज देके हमे तुम ” ” ”]

न कर पाप दुनियाँ मे इनमान वनके ।
दिखादे जमाने को भगवान वनके ।
मिली चार दिन की तुझे जिन्दगी है ।
भुलाई क्यो प्यारी प्रभु–वन्दगी है ?
पडा है क्यो गफलत मे नादान वनके ।
दिखादे जमाने को भगवान वनके ।

नही पुरुष–तन–सा कोई और तन है ।
कि हर सांस लाखो करोडो का धन है ।
गवाता है हीरा क्यो धनवान वनके ।
दिखादे जमाने को भगवान वनके ।

कभी जो हसाए कभी जो रुलाए ।
कभी जो गिराए कभी जो उठाए ।
लगा 'मन' को भक्ति मे वलवान वनके ।
दिखादे जमाने को भगवान वनके ।

मिला है सुनहरी समय न गवा तू !
अहिंसा, सचाई की दौलत कमा तू !
पडा क्यो है गफलत मे अनजान वनके ?
दिखादे जमाने को भगवान वनके !

नही कान तक भी उन्होने हिलाए !
गए अपनी गर्दन को “चन्दन झुकाए !
जो आए थे दुनिया मे तूफान वनके !
दिखादे जमाने को भगवान वनके !

हिम्मत होगी कि नहीं ?

[तर्ज—मेरे मन की गगा और तेरे मन की जमना ···]

गीत प्रभू के गाने, और अपने पन को पाने मे,
मानव बोल मानव ! बोल, हिम्मत होगी कि नही ?
क्या करता तू मेरा मेरा, कौन यहा पर तेरा है ?
मोह-ममता का यह तो पगले ! एक भयानक घेरा है ।
झूठी इस दुनियाँ से, नफरत होगी कि नही ?
बोल मानव ! बोल, हिम्मत होगी कि नही ?
लोभ, कपट, मद, काम, क्रोध ये, सारे जानी दुशमन हैं ।
तेरे आत्म-धन को जोकि, हरते रहते निश दिन है !
दूर कभी यह गहरी गफलत, होगी कि नही ?
बोल मानव ! बोल, हिम्मत होगी कि नही ?
इस यौवन का नशा हमेशा, नही किसी का रहता है ?
मिलता फूल धूल मे आखिर, 'चन्दन' सच यह कहता है ।
कम काया से तेरी उल्फत, होगी कि नही ?
बोल मानव ! बोल, हिम्मत होगी कि नही ?

छलावा !

[तर्ज—दिल लूटने वाले ··· ··]

तू जिसको मोहब्बत कहता है
वह केवल एक छलावा है
जल नही है यह तो रेता है
मन—मृग का इक बहलावा है···· ·······

अधखिली रंगीली-कलियों को
ललचाई निगाह से क्यों ताके
ये कलियां नहीं हैं ! कांटे हैं
सब झूठा उनका दावा है
मोह माया के इस सागर को
मतवाले ! तरना सहज कहां
तू बैठा जिस पर काठ समझ
वह पत्थर की इक नावा है
इस लोभ कपट की दुनिया में
सब मतलब के ही बन्दे हैं
इक चाय की प्याली बिस्कुट से
हो जाता प्रीत दिखावा है···
हर रोज हजारों हसरत को
मन बीच लिए ही जन जाते
रह सकता 'चन्दन' कौन यहाँ
जब आता अन्त बुलावा है

परदेसी से

[तर्ज—इक परदेसी···········]

उठ परदेशी ! प्रभात हो गई
सोते सोते तुझे सारी रात हो गई·····
सोया क्यों तू निंदिया में, पांवों को पसार के
देख जरा एक वार अंखियां उघाड़ के
विदा तेरे साथ की जमात हो गई···········

झूमते हैं फूल यह जो, खिली गुलजार है
चन्द रोज दुनिया की, रौनक बहार है
कह के रवाना बरसात हो गई ....
रात को ईशारो मे ही, कहा यों सितारो ने
मिटना है फौरन ही सुन्दर नजारो ने
होते ही उजाला सच्ची बात हो गई .....
दूर तू हटाके झूठे मोह अभिमान को
जपा कर दिन रात, प्यारे भगवान को
'चन्दन' से तेरी मुलाकात हो गई..........

खाते-खाते चल दिए

[तर्ज—कव्वाली]

आने वाले आ रहे थे, आते आते चल दिए
जनम इस मशान मे बस, पाते पाते चल दिए
बज रहे थे साज मीठे, गाने वाले थे मगन
आ अजल पहुँची बेचारे, गाते गाते चल दिए
एक मिस्टर घर से दफ्तर जा रहे थे दौड कर
बस से जो टक्कर लगी बस, जाते जाते चल दिए
सेठ जी के सामने था, थाल ताजा माल का
ग्रास इक मुँह में था डाला, खाते खाते चल दिए
है कहा चगेज नादर, जो न्हाए रक्त मे
बस सितम ससार पर वे, ढाते ढाते चल दिए
अय 'मुनि चन्दन' पडे बीमार इक जो ताजदार
दे हजारो फीस डाक्टर, लाते लाते चल दिए

सन्त सुनाए रे

[तर्ज—सारी सारी रात तेरी ...]

मीठे-मीठे बोल प्यारे सन्त सुनाए
सन्त सुनाएँ तेरी नींद उडाएँ रे। ....

इक तो तुरत प्यारा ज्ञान सिखाएँ
दूजे सीधी राह चलाएँ
राह चलाएँ बन्दे! नेक बनाएँ रे! .. ..

आ के निकट, कभी सीख बाँवरिया
तेरी बीती जाती उमरिया
जाती उमर तोहे सदा बतलाये रे! . . ...

जाना अगर तुझे मोक्ष—नगरिया
पापों की तज भारी गठरिया
भारी गठरिया तेरा यहीं पटकाएँ रे! .. ....

पाँव फैलाता अरे! बन के दीवाना
अन्त यहाँ से कूच ठिकाना
कूच ठिकाना 'चन्दन' यह समझाए रे! ... ...

मुझे प्यारी भक्ति

किसी को है हलवा, किसी को मिठाई
मुझे प्यारी भक्ति, अहिंसा, सचाई .. ....

किसी को है प्यारा जलेबी—बेदाना
किसी को मिश्री, मलाई, मखाना
किसी को बताशा, बरफ, साबू दाना
किसी को कचौरी, समोसे उडाना
किसी को है बिस्कुट, किसी को खटाई... ....

किसी को करेला, किसी को टमाटर
किसी को है मूलो, किसी को है गाजर
किसी को खुमानी, नरगी, घिया, तर
किसी को कचालू, सभी से है बढकर
किसी को अलीची बगीची की जाई ....

किसी को तमाशा, किसी को तराना
किसी को है प्यारा, रिकार्डों का गाना
किसी को है सरकस, सिनेमा मे जाना
किसी को है प्यारा, दुतारा बजाना
किसी को सरगी, किसी को शहनाई.......

किसी को सुधाकर, किसी को सितारे
किसी को हैं प्यारे, पहाडी नजारे
किसी को सरोवर के 'चन्दन' किनारे
किसी को हैं प्यारे नदी नद के धारे
किसी को है घाटी की शीतल तराई........

ना दारू पीना जी !

[तर्ज—घूट नीर पिलादे नी ....]

न दारू पीना जी, प्यारयो ! नर्कों ए पहुँचावे
जल जादा सीना जी, प्यारयो ! खुश्की खग सतावे........
रोन नियाने मुक्कन दाने, हो जावे घर खाली
फड फड वखियाँ भर भर आखियाँ, रोवे ओ घर वाली
न कोई महीना जी, प्यारो ! विन रोया दे जावे........

चढे खुमारी जिस दम भारी, गलियाँ विच डिग पैंदे
भुक्खे नगे पए लफगे, देखन वाले कहन्दे
ए जनम नगीना जी, प्यारयो ! कौडा मुल्ल विकावे ...

क्यों न कहों सतावे सर्दी, होई कुर्क रजाई,
जेठ हाड विच घर दे अन्दर, वने किमे सरदाई ?
न रुके पसीना जी, प्यारयो ! गर्मी गम दिखलावे

पी के दारू बाग वतारू, टप्पन वन सौदाई
नाम न जपया तप न तपया, ऐवे उमर विताई
ए काहदा जीनाजी, प्यारयो ! 'चन्दन मुनि' सुनावे

निंदिया को त्याग अरे !

[तर्ज—तेरे नयना हैं जादू भरे]

हो वन्दे ! क्यो न भगवन का ध्यान धरे
डट के छुप छुप पाप करे ...

मौत खडी सर देख न पाए, कपट भण्डार भरे
सन्त तुझे सन्मार्ग वताएँ, काहे तू दूर टरे
हो वन्दे ! क्यो न ...

वीर वहादुर दुनिया उजागर, छाती पे तीर जरे
अचला कपाते व्योम हिलाते, वे भी तो अन्त मरे
हो वन्दे ! क्यों न ...

हिंसा भुला के धर्म कमा के, लाखों ही लोग तरे
'चन्दन' सुनाए, तुझ को जगाए, निंदिया को त्याग अरे
हो वन्दे ! क्यो न ... ...

ज्ञानी उसको कहते है !

[तर्ज—कभी सुख है कभी दुख हैं ······]

जिसे हो आप की पहचान, ज्ञानी उसको कहते हैं।
वसाए दिल मे जो भगवान, ध्यानी उस को कहते हैं ॥
किसी को जो सताती ही रही वह जिन्दगी क्या है।
कटे उपकार मे जो जिन्दगानी उसको कहते हैं ॥
जवानी वह नहीं साहव ! मिटे जो रग रागो मे।
लुटे जो धर्म की राह मे, जवानी उस को कहते हैं ॥
दुखी दर्दी का दुख सुन कर, उसे जो प्रेम से झट पट।
कलेजे से लगाए मेहरवानी उसको कहते है ॥
है केवल काम किस्से का, सिखाना झूठ, छल, झगडा।
वदल दे जिन्दगी को जो, कहानी उसको कहते है ॥
बुराई तज भलाई का, भरे हरदम जो दम 'चन्दन'।
सही अर्थो मे हम हिन्दोस्तानी उस को कहते हैं ॥

मजा लूट बन्दे प्रभु बन्दगी का

[तर्ज—तेरे प्यार का आसरा ·····]

नही है भरोसा जरा जिन्दगी का
मजा लूट वन्दे ! प्रभु वन्दगी का ···
निकलता है सडको पै फैसन लगा कर
अकडता है तन को वडा तू सजा कर
पिटारा है इक ये भरा गन्दगी का

लगाए मुहब्बत मे सुन्दर बगीचे
सजाए भवन जो बिछा कर गलीचे
मदा साथ देते नही आदमी का…
चलाकर के दिल मे दया का फव्वारा
दिया दीन दुखियो को जिमने सहारा
उसी का है जीवन हसी का—खुशी का…
उमर देख पल पल घटी जा रही है
निकट मौत छिन छिन चली आ रही है
समझले तू 'चन्दन' ईशारा घडी का…

जन्म-हीरा पाकर जो

[तर्ज—रग दिल की धडकन की………]

जन्म हीरा पाकर जो खोया न होता !
हाथ मुख मे बिल्कुल भी धोया न होता !!
दया की खुशबू जहाँ आती थी अन्दर से ।
मन तो तेरा है नही कुछ कमती बन्दर से ।
पौधा पापों वाला यों बोया न होता !!
कर्म तू करता कमरिया कसके क्यो गन्दे ।
हो बुरा तेरा-सभी बस कहते है बन्दे ।
आखिर आँसू भर-भरके रोया न होता !!
दूर है मंजिल, जहाँ पर तुझ को है जाना ।
लौट के हर्गिज यहाँ फिर होगा न आना ।
बोझा सर पे पापो का ढोया न होता !!
जाग ओ पगले पडे न तुझ को पछताना ।
हो भला तेरा 'मुनि चन्दन' का सुन गाना ।
काश ! गाफिल बन कर तू सोया न होता !!

होश में कब तू आएगा ?

[वर्ज—नगरी नगरी द्वारे द्वारे ‥ ·]

ओ दुनिया के लोभी बन्दे ! होश मे कब तू आएगा ?
जीवन-हीरा कौडी बदले क्या तू मुफ्त लुटाएगा ?
छन-छन की झनकार मधुर सुन, भूला दीन-ईमान को !
शादी का ले नाम बेचता प्यारी तू सन्तान को !
मरने पर क्या साथ मे तेरे धेला एक भी जाएगा ?
जन्मेगी जब कन्या तेरे—करले जरा विचार तू !
उसकी शादी पर फिर कितने देगा नकद हजार तू !
आएगी तब याद रे ! नानी, कभी तू कतराएगा !!
देखो गीता साफ पुकारे—लोभ नरक का द्वार है !
फिर भी ठगनी माया से क्यो, तेरा इतना प्यार है ?
निकलेंगे जब प्राण बदन से रोएगा पछताएगा ?
देख सिकन्दर ने क्या पाया, इतने जुल्म गुजार कर ?
अब गया ससार से खाली दोनो हाथ पसार कर !
'चन्दन' बन सन्तोषी सुख तू भारी जिससे पाएगा !!

तोहे चैन न आए रे !

[तर्ज—सारी सारी रात तेरी ‥ ‥‥]

भोले भाले जीव ! तोहे पाप सताए !
पाप सताए तोहे चैन न आए रे !
इक तो जनम प्यारा व्यर्थ लुटाए,
दूजे बैठा, बदी कमाए,
बदी कमाए नेकी दूर हटाए रे !

होके मगन गया भूल बावरिया,
बीती जाती तेरी उमरिया,
प्यारी उमर तेरी चली यह जाए रे !
पाप हमेशा अरे ! खुश हो कमाए,
गीत प्रभु के किन्तु ना गाए,
किन्तु न गाए यों ही मन भटकाए रे !
गीत बना के 'मुनि चन्दन' सुनाए,
नींद सदा की आज उड़ाए,
आज उड़ाए सीधी राह दिखलाए रे !

नर है दीवाना !

[तर्ज — सब कुछ सीखा हमने ......]

सीखा जिसने न रे ! धर्म का निभाना ;
कहना चाहिये उसको, कि नर है दीवाना !!

दुनिया में किसने सुख पाया,
कौन है जिसका अन्त न आया,
फिर भी मन में मान बसाकर,
अपने आप को और गिराया,
मद में मरते देखा सदा ही जमाना ......

वन में पुष्प महकते देखा
मान का रंग उतरते देखा
हमने हर गोरे काले को
बस आखिर में मरते देखा
जग में आके कोई हमेशा रहा ना ......

लाखो ऐसे वन्दे देखे
दिल के बिलकुल गन्दे देखे
विषयो-पापो के जो पीछे
पूरे पूरे अन्धे देखे
ऐसो का है 'चन्दन' नरक मे ठिकाना "

करो तुम

[तर्ज—अगर दिल किसी से …]

न पापो मे जीवन गुजारा करो तुम
प्रभु नाम पल, पल उचारा करो तुम
खुले श्राख जिसदम सवेरे सवेरे
निरन्तर उसे ही पुकारा करो तुम
मुहब्बत मे श्राकर लगाकर समाधि
समुज्वल वह ज्योति निहारा करो तुम
कभी लोभ छल को, निकट श्राने मत दो
बुराईयो से बिल्कुल किनारा करो तुम
दिलाए जो गुस्सा, कभी जोश तुमको
क्षमा वल से फौरन निवारा करो तुम
भुला करके 'चन्दन' जगत के झमेले
सदा रूप अपना, निहारा करो तुम

तरना है अच्छा

[तर्ज—रंग दिल की धडकन भी ....]

मग सत्पुरषो का जी । करना है अच्छा ।
पाप करने वालो से, डरना है अच्छा ।।
झूठ का झगडा, जगत वालो मे चलता है ।
धोके लालच का, यहा पे पौधा फलता है ।
पाव धरते रखते भी, डरना है अच्छा ।।
खुशी की खुशबू, सदा फिर दिल से निकलेगी ।
सारे लोगो की, तबियत उस पे मचलेगी ।
नेकी वाले मग पे पग, धरना है अच्छा ।।
पाप की गठडी, पटक जल्दी से अय प्यारे ।
होके हलका तू, जगत-सागर को तर जा रे ।
नाम-नैया चढ करके, तरना है अच्छा ।।
आ, रे ! ओ प्यारे ! नगरिया मुक्ति जो जाना ।
हो भला तेरा, दया न दिल से विसराना ।
एक 'चन्दन' इसका ही, शरणा है अच्छा ।।

जाना ही होगा

[तर्ज—रग दिल की धडकन भी ... .]

छोड दुनिया फानी को जाना ही होगा ।
पाप-कर्मो का फल तो पाना ही होगा ।।
खार है इनमे अरे ! उलझे क्यो कलियो से ?
नज के जाना जब मोहब्बत कैसी गलियो से ?
पाँव पीछे इन से तो हटाना ही होगा ।।

प्यारी यह अपनी उमरिया नाहक न खोना।
है मिला तुझको समय शुभ बीजो को बोना।
वर्ना कडवे तुम्बो को खाना ही होगा॥

भूला क्यो खुद को जगत की फँस के उलझन मे।
पा नही सकता कभी सुख भोगी जीवन मे।
नाम प्यारे जिनवर का ध्याना ही होगा॥

खोल रे! आँखे जरा अब उठ तू बिस्तर से।
हो गया प्रात-मधुर बस अपने इक स्वर से।
गीत तुझ को 'चन्दन' का गाना ही होगा॥

बहुत अच्छी बात है!

[तर्ज—चुप चुप खडे हो—...."]

चुप चुप बैठने की, बहुत अच्छी बात है
पहली यह जमात है जी! पहली यह जमात है

बाकी बातें सीखियेगा, बन्धुवर! बाद मे
रखनी जबान काबू, आप को है याद मे
बोलती कलम यही, बोलती दवात है....

जब तक कोई न बुलाए, मत बोलो जी
मतलब बिना कभी, मुखडा न खोलो जी
मूर्ख ही बोलता, हमेशा दिन रात है...

मौन की कदर जो, मनुष्य नही जानता
बात कोई दुनिया मे, उसकी न मानता
अपनी कदर खुद, आदमी के हाथ है

गाली के जवाब मे न, गाली भूल दीजिये
लडे कोई आप मे तो, मौन कर लीजिये
शान्ति है पास तो, जमाना सारा साथ है....

सुनने मे देख लो, कहावत ये जाती है
इक चुप पल मे हजार को हराती है
अदभुत ऐसी और, कहा करामात है....

हास उपहास मे भी, दिलन दुखाओ जी!
द्रोपदी की बोली पर, नजर दौडाओ जी!
हुआ महाभारत का, भारी उत्पात है....

बोलता है 'वर' कम, बहुत ही बरात मे
इस लिए ताकत है, उस ही के हाथ मे
फीकी सब उस आगे, 'चन्दन' बरात है....

कमाना किस को आता है ?

[तर्ज—यहां दिल का लगाना]

यहा लेकर जनम जीवन, बिताना किस को आता है ?
पुजारी सत्य का बनकर, दिखाना किस को आता है ..
कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन है
मगर ईमानदारी से, कमाना किस को आता है ...
मिटाते गैर की हस्ती, हजारो हमने देखे हैं
अहिंसा, सत्य पर खुद को, मिटाना किस को आता है ...
अरे! मनके पे मनके तो, गिराते है बहुत बन्दे
महा चचल मगर, मन का, टिकाना किस को आता है ..

हजारो हमने देखे है, मोहब्बत करते मतलब से
बिना मतलब मोहब्बत का, लगाना किस को आता है
खिलाने के लिए छत्ती, पदार्थ भी खिला देते
विदुर बन प्रेम से किन्तु खिलाना किस को आता है
गिरी दुख के गिरा कर सब, गरीबो को रुलाते हैं
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन' हसाना किस को आता है

चली है सवारी

[तर्ज—सब कुछ सीखा हमने "]

पल पल बीते आयु, अरे ! यह तुम्हारी
धर्म कमा लो बन कर दया के पुजारी
दुर्लभ नर का चोला पाया
पापो मे क्यो मन उलझाया
भारी वह पछताया आखिर
जिसने ने भी यह लाल लुटाया
हीरे मोती पाकर, बनो न भिखारी ...
सन्त सदा यह ज्ञान सुनाते
नेक पुरुष ही मौज उडाते
स्वर्गो मे सुख पाते जा कर
लालच छल जो दूर हटाते
बेईमानी जैसी, नही है बीमारी ...
सुन्दर बाग उजड़ते देखे
यौवन नशे उतरते देखे
हीरो के संग तुलने वाले
'चन्दन' आहे भरते देखे
खाली हाथो उनकी, चली है सवारी........

यह क्या चाहते हो ?

[तर्ज—तेरे प्यार का आसरा ...]

अरे लोभी बन्दो ! ये क्या चाहते हो ।
जफा कर रहे हो, वफ़ा चाहते हो ......

धरा नाम मिलनी का, कैसा निराला ।
निकाला है मिलने का, हाय ! दीवाला ।
फसाया मुसीबत मे, हर बेटी वाला ।
सुखी आप इस पर, बना चाहते हो .

इसी वास्ते क्या था, बेटा पढाया ?
नीलामी पे घर आते, उसको चढाया ?
हया और दया धर्म का कर सफाया ?
प्रभु की मधुर फिर, दया चाहते हो ....

सुनो ओ अमीरो ! जरा दिल टिका कर !
बने बाप बेटी के तुम जबकि जाकर ।
चबायगा तुम को चने कोई आ कर ।
समय है बचो, जो बचा चाहते हो ...

रहे नाच निश-दिन हो जिसके सहारे ।
चले संग पाई न इक भी तुम्हारे ।
बचाता है 'चन्दन मुनि' कर इशारे !
भलाई करो जो भला चाहते है .

मास्टर विद्यारतन

मास्टर विद्यारतन 'रतन'

मस्टर विद्यारतन 'रतन' जैन समाज के पुराने जाने-माने कवियो मे से है। पंजाव प्रान्त मे फरीद कोट स्टेट आपकी जन्म-भूमि है। आपका जन्म ५ अप्रैल १९०० मे ओसवाल जाति मे हुआ। आपके पिता का नाम चौधरी मुन्शीराम वोथरा है।

आप अंगरेजी मे वी० ए० हैं और उर्दू भाषा के अच्छे विद्वान हैं। पजाव की 'ज्ञानी' परीक्षा भी आपने उत्तीर्ण की है। स्थानीय हाई स्कूल मे आप अध्यापन कार्य कराते रहे हैं, इस लिए आप 'मास्टर' के नाम से विख्यात है।

स्थानीय ओसवाल समाज मे भी आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। सामाजिक प्रवृत्तियो मे आप खूब दिलचस्पी लेते हैं। १९५०-५१ मे आप जैन कन्या महाविद्यालय फरीदकोट के शिक्षा मत्री भी रह चुके हैं। परन्तु नालागढ स्टेट मे स्थानान्तरण [तबादला] हो जाने के कारण इस पद से आपने त्याग-पत्र दे दिया है।

'रतन' की कविता-भाषा उर्दू है। आपकी कविताएँ ओज-पूर्ण और शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ पाठको के मन को छूती हुई चलती है। भाषा में प्रवाह है और भावो मे स्पष्टता। आपकी अपनी एक शैली है जिसमे स्वाभाविकता है और सरसता भी। इनकी बडी खूबी यह है कि विषय के अनुसार भाषा का सुगम या गहन प्रयोग करते हैं, जो स्वाभाविक प्रतीत होती है।

कवि का कार्य समाज के जीवन मे प्रवेश करके उसको साथ लेकर, उसे आगे बढाना है। 'रतन' ने समाज और धर्म मे सुधार के लिए धार्मिक, सास्कृतिक और आध्यात्मिक भावो को लेकर भाव-प्रवण कविताएँ लिखी और समाज के नये भावो को वाणी दी। आपकी कविता मे ससार की अस्थिरता और जीवन को विनश्वरता की हल की छाप है।

वैसे तो आपने बहुत कम कविताएँ लिखी है। पर, जो लिखी है, उनमे अपने मजे और निखरे हुए विचारो का रस उडेल दिया है। आपकी सचोट कविताओ ने जैन समाज के इस छोर से उस छोर तक प्रचुर प्रचार पाया है। कविता-क्षेत्र मे आपकी दो पुस्तके 'गंजीन एरतन' और 'तरानए रतन' काफी प्रसार पा चुकी है।

कुछ वर्षो से दिमागी कमजोरी के कारण आपने प्राय कविता-ससार से सन्यास-सा ही ले लिया है। आज कल आप नालागढ स्टेट मे अध्यापन कार्य के साथ-साथ स्थानीय समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियो मे भी अच्छा रस ले रहे हैं।

समाज 'रतन' मे और कविता-क्रान्ति की आशा रखता है। सभव है यह आशा सफलता का मूर्त रूप ले ले।

जालिम से

[तर्ज—कव्वाली—आ गयी जब वो घड़ी " "]

दर्द काटे का अगर तुझ से सहा जाता नही ?
बेजबानो बकसो पर क्यों तरस खाता नही ?

एक काटे ने तेरी रग-रग को ढीला कर दिया ।
क्या छुरी का दर्द मजलूमो को तड़पाता नही ?

चाहते हैं सब कि उनकी जिन्दगी सुख से कटे ।
कौन-सा है जीव जो मरने से घबराता नही ?

ऐ बशर ! तेरी तरह हैं दूसरे भी अहले-दिल !
रज-ओ-राहत कौन-से दिल पे असर लाता नही ?

चन्द रोज जिन्दगी है, कर न इतनी सख्तियाँ ।
खिलखिला कर कौन-सा है गुल जो मुरझाता नही ?

धरके अपना हाथ सीने पर तू कह इन्साफ से ।
है कोई जालिम जो दोजख की हवा खाता नही ?

गम न दे औरो को गर उस गम से घबराता है तू !
चाह गैरो के लिए मत जो तुझे भाता नही ?

ऐ 'रतन' है फूलता-फलता जहाँ मे वाहि बशर !
घर मे औरो के कभी जो आग बरसाता नही ?

इन्सान

[तर्ज —आजा मेरी वर्बाद]

नही आसान है इन्सान के घर मे जनम पाना ।
जनम लेने से भी मुश्किल है फिर इन्सान कहलाना ।।
पशूतर नीच योनि मे भटकने हम रहे अब तक ।
खुली किस्मत तो हासिल होगया इन्सान का बाना ।।
गति इन्सान की सब से है, उत्तम इस लिए मानी ।
कि शक्ति है फकत इन्सान की मुक्ति को पा जाना ।।
यह वोह इन्सान है जिसको झुकाया सर है देवो ने ।
यही इन्सान सीखा है जो ईश्वर बन के दिखलाया ।।
तपस्या से इसी ने जाल कर्मो का जला डाला ।
धर्म पर 'वीर' बनकर जल गया यह मिस्ले परवाना ।।
इसी ने राम बन कर बन मे चौदह साल काटे थे ।
यही इन्सान था गावी है भारत जिस पर दीवाना ।।
इसी ने वीर भामा बन के वोह राणा की खिदमत की ।
है गाता गीत जिसके आज तक सब राजपूताना ।।
'रतन' पाकर भी बदकिस्मत जो मिट्टी मे मिला बैठे ।
न उसको गर कहे मूरख कहे क्या आप फरमाना ।।

उद्‌बोधन

[तर्ज—सुनाऊँ किसको मन की बात • ••]

अय प्राणी । काहे मचावत शोर ?
चार दिनन की चमक चाँदनी, अन्त घटा घन घोर ।
प्रेम बढाले धर्म कमा ले, बोल न वचन कठोर ।।

खप-खप उत्तम जन्म मिला है, कर-कर तप अति घोर।
फिर भी नेक कमाई भूला, बणज करें बन चोर ॥
रावण-बल का मान वढाया, और मचाया शोर।
कालबली जब आन दबाया, काम न आया जोर!।
आतम रूप गगन मे गुडिया, डोलत हैं चहुँ ओर।
'रतन' कर्म की काट हुई जब, भागी तज कर डोर ॥

मुशाफिर से

उठ जाग मुसाफिर क्यो सोया !

कुछ काम धर्म के भी करले, करना जो शीघ्र ही करले।
अब तक है व्यर्थ समय खोया, उठ जाग..........
चन्द रोज की यह जिन्दगानी है, फिर काल ने ताल वजानी है;
छोडेंगे न यम गर तू रोया, उठ जाग..........
यह जगत मुशाफिरखाना है, क्या इसको अधिक सजाना है;
रह जायगा यह धुनका धोया, उठ जाग..........
कर नेक अमल गरदाना है, कर भक्ति जो मोक्ष को पाना है;
अब छोड दे सब लेकिन गोया, उठ जाग..........
जैसा जो कर्म कमाता है, वैसा ही 'रतन' फल पाता है,
मिलता है वही जैसा वोया, उठ जाग..........

मुक्ति दा मारग पाले

[तर्ज—पंजाबी, शाला जवानियाँ माणें.........]

धर्म तू मीत वना के, मुखं प्रेम पियाला ला लै !
दुनिया दी पीड वटा के, दुखियाँ दा दर्द मिटाके,
विगडी तकदीर वना ले, मन-मन्दिर खूब सजाले।

पाले, मुक्ति दा मारग पाले, पाले—धर्म नू ....
यह जोवन और जवानी, मुड-मुड के हत्थ नहीं आनी;
बेना हे धर्म कमाले, सतगुरु दे दर्शन पाले !
पाले, मुक्ति दा मारग पाले, पाले—धर्म नू ..
धन दौलत महल मिनारे, एत्थे रह जावरण सारे;
ममता और मान हटाले, जीवन एह 'रतन' बना ले !
पाले, मुक्ति दा मारग पाले, पाले—धर्म नू ..

मनदा मनका

[तर्ज—पंजाबी]

फिरा मूरख मन दा मनका !
काठ दी माला सब जग फेरे, फेरन हारा फिरे चौफेरे !
मन दे विच नहीं लांदा डेरे, चंचल मन समझा, फिरा ..
इक सौ अट्ठ मनके हत्थ पाया, मनके वाला हत्थ नहीं आया !
इक मनदा जे मनका फिरदा, फिरदा क्यों रुलदा, फिरा ......
जिस विच आतम-ज्ञान समाया, वोह मनका काबू नहीं आया !
उस मनके नूं जे फड लेन्दा, भव-जल तर जान्दा, फिरा .
मन के फिर-फिर हुए दीवाने, घिस घिस कर हो गए पुराने !
राम बुलावे मुट-मुट दाने, रत्ती न 'रतन' हया फिरा...

भारत की दशा

क्या कोई खेले होली दशा भारत की डोली !
मात पिता पुत्रों की खातिर—सौ-सौ कष्ट उठावें,
व्याह के बाद बने पुत्र वैरी नारियां ऐसी नारियां घर मे आवें;
ससुर को मारे बोली—क्या कोई खेले होली

एक उदर से दो जन्मे भ्राता—नित-नित करत लड़ाई,
भाईका भाई है खून का प्यासा मस्त ' ऐसी सख्ती दिलो पर आई,
चले सीनो पर गोली—क्या कोई ' ····
बाप के मरने पै रोना तो पीछे—पहले फोलम फोली,
बंद किवाड करे और ढूढे धनकी छन-छन की भरी हुई थैली,
करे धरती का पोली—क्या कोई '
गर्मी से मरते हैं दादा जी तो—बाबू जी फिरै कमौलो,
बाप को समझे है बेटा नौकर मासू हाँजी सासू बहू की गोलो;
फटी वोह पहने चोली—क्या कोई ·· ···
'रतन' करें पितु-मात की सेवा—भरत न जब तक झोली,
धन-दौलत जब बाँट दिया सब माया ' हाँजी माया बुड्ढे से बोली,
जग स्वारथ की टोली—क्या कोई·······

भक्ति का फल

[तर्ज—तेरे पूजन को भगवान ']

तेरे सुमरण से भगवान, मिले भक्तो को पद निर्वाण ।
नाम जिनेश्वर है अति प्यारा, भव-जल से है तारन हारा;
अन्धकार मे करे उजारा, चमके सूरज-चन्द्र-समान !
जो नर नाम प्रभु दा ध्यावे, सो नर सदा अमर-फल खावे,
जन्म-मरण दा भय मिट जावे, वोह नर पावे शुभ स्थान !
बार अनन्त जगत विच आया, जग-छाना जगदीश न पाया,
दर-दर भरमत फिरा भराया ! इस विध हुआ बहुत हैरान !
मनुष्य जन्म दा लाभ उठा ले, देर न कर कुछ धर्म कमा ले,
यम हैं सर पर आने वाले, तेरा करने को भुगतान !
जिस जिनदेव प्रभू को ध्याया, दया-धर्म जिन दे मन भाया;
जीवन उसने 'रतन' बनाया, करके आतम को बलवान !

जिन-वाणी

[तर्ज—शिक्षा दे रही जी ··]

शिक्षा दे रही जी, हमको जिन देवो की वानी।
सेठ सुदर्शन धर्म न छोडा, पच-पच हारी रानी।
सूल वन गई राज-सिंहासन यह है धर्म निशानी।
सच्चा प्रेम करो तुम जग मे, सुख पावे सब प्राणी;
दुनिया मे मशहूर है जैसे, मित्र दूध और पानी।
जैसा बोये वैसा काटे, बात यह सबने मानी;
नेक कर्म का फल है मीठा, कह गये केवल ज्ञानी।
अभय दान-सा दान न कोई, जैनधर्म—मम वानी;
मुक्ति-सा कोई धाम नही और, क्षमा जैसी कुर्बानी।
धन-दौलत सब धरा रहेगा, संग न पाई जानी,
धर्म छोड धन पर ललचावे, होगी सख्त हैरानी;
धन के पीछे फिरे भटकती, है दुनिया दीवानी,
दया-धर्म बिन सफल न होगी, कभी 'रतन' जिंदगानी।

मंगल कामना

[तर्ज—मोहब्बत के धोके मे]

प्रभु के चरण मे मेरा ध्यान होवे;
कि जिससे सदा मेरा कल्याण होवे।
हो मेरा दया-भाव सब प्राणियो पर,
कोई जीव मुझसे न हैरान होवे।
मुसीबत जो आए न घबराये यह दिल,
मेरी आत्मा ऐसी बलवान होवे।

न दौलत की धुन हो मेरे मन समाई,
कभी ऊँचे पद का न अभिमान होवे।
बनूँ मै हकीकत न छोड धर्म को,
अगर मेरा सर भी बलिदान होवे।
बनूँ सेवा-भक्ति मे मैं वीर भामा,
लखन राम-सा प्रेम हर आन होवे।
न मन मे कभी ईर्ष्या-भाव रखूँ,
न मुझसे किसी का भी नुकसान होवे।
जबा पर हो मत्र नमोकार हरदम,
सदा उसके रट की लगी तान होवे।
पतग आके जलता है दीपक पै जैसे,
धर्म पै मेरी जान कुर्बान होवे।
दिखा जाऊँ वोह काम करके जगत को,
कि जिससे 'रतन' कौम की शान होवे।

वीर का सन्देश

[तर्ज —अब हम न मिल सकेंगे तुम ....]

तुम सीख लो धर्म पर, अब अपना सर कटाना,
सब प्राणियो की खातिर, जानो जिगर लडाना।
सदेश वीर का है, कुछ वीरता दिखाना,
बदले में गालियो के, मीठे बचन सुनाना।
सच्चे धर्म की खातिर, जीवन निसार करना,
फूलो के तज बिछौनें, काँटो पे लेट जाना।

होगी सफल कमाई, गर सीख लो ऐ भाई,
भूखे को अन्न देना, प्यासे को जल पिलाना।
जाते हैं प्राण जाएँ, वादा शिकन न होना,
जो कह दिया जबाँ से, पूरा वो कर दिखाना।
भोजन मे सादापन हो, सादा लिबास तन हो,
मीठा सखुन 'रतन' हो, मुक्ति मे हो ठिकाना।

परमात्मा होता

[तर्ज—कही सुख है कही दुख है]

अगर कुछ काम दानाई से ऐ नादा! लिया होता,
तो सिर तेरा श्री जिनराज के आगे झुका होता।
धर्म की लौ के ऊपर गर तू जलता बन के परवाना!
मुसीबत मे धर्म आकर तेरा रहनुमाँ होता,
जलाता कर्म फन्दे को अगर तू तप की ज्वाला से,
तो इक दिन तू भी ऐ इन्सा! हकीकत मे खुदा होता।
हयात जाबदानी के मजे क्या गर मुमकिन थे,
अगर तू बेकसो पर दिल से और जा से फिदा होता।
तू अपने से ही बाहिर ढूँढता फिरता है ईश्वर को,
इसी कारण तेरा हासिल नही कुछ मुद्दआ होता।
'रतन' जिन-धर्म की खातिर जो तू कुर्बान हो जाता,
बदल कर नाम आतम से तेरा परमात्मा होता।

मर्दे वफा बन जाना

[तर्ज—नाव मझधार पडी पार]

मीख लो दुनिया मे तुम मर्दे वफा बन जाना,
कौम के वास्ते दर-दर का गदा बन जाना।
दीन-दुखियो की दुआ लेना महारा देकर,
वेमहारो के लिये मिस्ले असा बन जाना।
किए बर्बाद है गुलशन जो स्याहबख्ती ने,
ऐसे वीरानो मे तुम वादेसबा बन जाना।
बेनवाओ के जिगर सोज मिटाना गम को,
दर्दमन्दो के लिए दस्ते सफा बन जाना।
जिन मरीजो के कोई हाल का पुरसा भी नही,
ऐसे लाचार मरीजो की दवा बन जाना।
काटना कर्म के बन्धन को बँधा कर खुद को,
छोड कर दिल से खुदी खुद से खुदा बन जाना।
बद नसीबो के अँधेरे से जो हैं घर तारीक,
ऐसे बदबख्त घरानो का दिया बन जाना।
मिस्ले परवाना जला करके धर्म पै जीवन,
खाक मे मिल के 'रतन' बूए वफा बन जाना।

वीर का सन्देश

[तर्जः—मन साफ तेरा है या नहीं · ·· ··]

भगवान ने फरमाया था इक राजे हकीकत,
मिल जाए तुम्हे मोक्ष गति ज्ञान की दोलत,
गर छोडे कदूरत।

कर दे ऐ बशर ! दूर अदावत को दुई को,
और दिल से मिटा टाल तकव्वुर को, खुदी को,
हर दिल मे समझ अपने ही प्राणो-सी मुहब्बत।
तू देख यतीमो को उन्हे प्यार किया कर,
नादार गरीबो की तू इमदाद किया कर,
कम होती नही दान से इन्सान की दौलत।
इन्सान है तू सब से फजीलत मे बडा है,
कमजोरो पे बेदर्द ! नही करता दया है,
भगवान हैं खुश देख दयावान की मूरत।
सत्य-धर्म का गर पास तेरे पास नही है,
फिर नर्क से बचने की कोई आस नही हैं,
यम लेंगे न रिश्वत, न करेंगे वो रिआयत।
तरना है जो ससार से स्वारथ को हटा ले,
चरणो मे गुरुदेव के मस्तक को झुका ले,
और सीख ले उन से तू 'रतन' तर्जे इबादत।

खरी बात

[तर्ज—गाँधी तू आज हिन्द की इक शान ....]

वह दिल ही क्या है प्रेम का जिसमे असर नही,
गूँगी जबा है जिस पै कि तेरा जिकर नही।
क्यो सत्य छोडकर बदमस्त हो रहा,
दोजख की आग की तुझे कोई खतर नही।
दिल मे दगा फरेब है भाइयो से दुश्मनी,
माला के फेरने मे कोई असर नही।

ऐ फूट ! तूने सैकडो खाने किये खराव,
वह कौन—सा है घर जहाँ तेरा गुजर नही।
दिल मे तो आरजू है भगवान् को देख लूँ,
आँखें हुई तो क्या हुआ काविल नजर नही।
यो तेरे—मेरे दिल तो हैं लाखो 'रतन' मगर,
वीरान है वोह दिल जहाँ वूए महर नही।

असली कुर्बानी

[तर्ज—तुम हमको भूल जाओ]

होजा फिदा धर्म पर परवाना वार वन कर,
कुर्वान जान कर दे तू जाँ—निसार बनकर।
कर्मों को जीतना है ऐमाल नेक करले,
इस धर्म—युद्ध मे तू ि-खला सवार वनकर।
हस्ती मिटा दे अपनी गर तू धर्म की खातिर,
पूजा की जा वनेगी तेरा मजार वनकर।
सुख-दु ख न नव रहेगे जब मोक्ष-रूप होगा,
उड जाएगी हविम सब गर्दो गुवार वनकर।
जव तक न कर्म टूटे तू टूटता रहेगा,
मिट्टी का यह खिलौना तू वार-वार वनकर।
दुनिया की दोस्ती पै यह दिल फिदा न करना,
रहना 'रतन' जहाँ मे तुम होशियार वनकर।

वीर-स्तुति

[तर्ज—पंजाबी]

वीर भगवान ने, हाँ वर्धमान ने, किनी दया खलाकत सारी ते,
हाँ स्वामी हाँ।
भारत माता जदो विलख रही सी,
जुल्म कटारी जदो झलक रही सी,
आया सीना तान के, विचता 'मैदान दे, कीता उपकार माता प्यारी ते,
हाँ स्वामी हाँ।
दुनिया दा दुखड़ा आन मिटाया,
प्रेम दा सागर आन पिलाया,
इक सच्चे ज्ञानी ने, अमरख वानी ने, पाया जादू प्रेम पुजारी ते,
हाँ स्वामी हाँ।
पर-हित कारण निज सुख छोड़ा,
सुख के साधन से मुख मोड़ा,
जीवन सुधारिये, तन-मन वारिये, त्रिशला दे लाल ब्रह्मचारी ते,
हाँ स्वामी हाँ।
कहे 'रतन' तू सब दा प्यारा।
तू ही सी जग दा तारन हारा,
तेरा यश गाईदा, तैनूँ ही धियाईदा, अज तक खलकत सारी ते,
हाँ स्वामी हाँ।

स्वर्णिम अतीत की याद

[तर्ज—मेरे लिये जहान मे ·· ···· ·· · ·]

सुनते हैं वीरता की हम, गुजरी हुई कहानियाँ,
अब तो रगो मे बन्द हैं, खून की वोह रवानियाँ।

अर्जुन-से वीर अब किधर, अभिमन्यु से बली कहाँ,

देश से सब रवाँ हुई, वीरो की कुल निशानियाँ।

गोविन्दसिंह के लाडले, जिन्दा दीवार में चिने,

यह भी थे उनके हौसले करदी फिदा जवानियाँ।

हिन्द को जिस पै नाज था, घर था वही मेवाड का,

राणा बबर से कम न थे, शेरनी उनकी रानियाँ।

सीता सती-सी अब कहाँ, पतिव्रता वो नारियाँ,

सेवा पति की बन मे की, झेल के सब हैरानियाँ।

बाहमी होके पुरजफा, बदला यह हमने पा लिया,

जिस जा 'रतन' बाहर थी, अब हैं वहाँ वीरानियाँ।

बिखरे मोती

वीर वन्दन

[तर्ज—सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो ....]

वन्दन हम करते मगलमय महावीर स्वामी को।
सघ-शिरोमणि शासन-नायक प्रभु अन्तर्यामी को।

वर्धमान गुण-खान जिनेश्वर जीवन-प्राण सहारे,
तीर्थंकर निर्ग्रंथ हितकर सन्मति देव हमारे,

तृशला नदन त्रिभुवन-मडन सकल-श्रेय-कामी को,
वदन हम करते मगलमय महावीर स्वामी को।

जिन चरणो मे गौतमादि ने विद्या-मद बिसराया,
जिन चरणो मे सब इन्द्रो ने अपना शीश झुकाया,

उन चरणो पै बलि-बलि जाएँ, धन्य मोक्ष-गामी को,
वदन हम करते मगलमय महावीर स्वामी को।

समवशरण मे पशु-पक्षी भी सहज शत्रुता भूले,
दिव्य भव्य सुर-नर-मुनि-गण सब आत्म-गुणो मे भूले;

शरणागत हम लेकर सेवक 'सूर्यचन्द' नामी को,
वदन हम करते मगलमय महावीर स्वामी को!

अहिंसा का तराना

[तर्ज—हम दर्द का अफसाना दुनिया को]

हम राग ये मस्ताना, दुनिया को सुना देंगे,
हर दिल पै अहिंसा का, हम सिक्का बिठा देंगे।

हो जायगी जब दुनिया आबाद अहिंसा की,
गूंजेगी जमाने में आवाज अहिंसा की,
सोती हुई कौमों को, हम फिर से जगा देंगे।
बेकस बेजबानों पै यहां जुल्मो सितम क्यों हो?
जान अपनी-सी तुम उनकी क्यों बराबर ना समझो,
तुम उनपै दया करना, वो तुमको दुआ देंगे!

'शिवराम' सितम है बुरा, मत जुल्म करो प्यारो,
तुम दिल में दया धारो, अब दिल में दया धारो,
पापी से न कर नफरत, हम पाप छुड़ा देंगे।

सुन सतगुर दी बाणी!

[तर्ज—घुट नीर पिला देनी]

उठ जाग सवेरे नी जिन्दड़िए सुन सतगुर दी बाणी।
हुण सतसंग कर लैनी जिन्दड़िए मौज बहुतेरी मानी।।
इस जीवन में धरम न कीता न कोई पुन्न कमाया,
कर कर बदियां तू दिन राती हीरा जन्म गंवाया,
यम ऐसे मारनगे जिन्दड़िए पीन न दंगे पाणी।।

ना रहे छोटे ना रहे मोटे ना रहे राजे राणे,
चार दिहाडे हस्स खेड के कर गए कूच मकाणे,
तू यूँ टुर जाणा नी जिन्दडिए ज्यूँ नहरा दा पाणी !!
मैंपन दिल तो दूर हटा के कर मता दी सेवा,
सेवा करने से ही मिलदा तीन लोक का मेवा,
तूं ऐसे झुक जानी जिंदडिए ज्यो ,तूता दी टानी !!

गली-गली सौदागर वडदा !

[तर्ज—मुझ को अपने गले ··· ·······]

गली-गली सौदागर वडदा-दुनिया दी बादशाही ।
पाप खरीदे रहमत वेचे, क्या विजनेस व्यापार है ।।
ओ दुनिया दे लोको, आओ, पीर सच्ची गल्ल कहन्दा ए,
पाठ करे कोई पूजा कर लए, मन नहीं टिक के रहन्दा ए,
घर छड्ड के चाहे जगली जावें पाप न सगरो लहन्दा ए,
सुख दे साधन कर कर थक्के मुड-मुड दुखडे सहन्दा ए,
सन्ता दे चरणा चो मिलदी-दुनिया दी बादशाही
असी मुसाफिर सारे वैठे, दुनिया मुसाफिरखाना ए,
फस्ट दे डब्वे थर्ड दे डव्वे, रेल ने ते तुर जाना ए,
इस रहबर दी उगली फड लैं, ऐ दुनिया दे राही····
असी मुसाफिर कहन्दे हाँ-फिर वस्तु लो वनजारे दी,
बदल जादी तकदीर है एत्थे, वेखो किस्मत मारे दी,
सौदा दस्त बदस्ती लैं लो गल्ल नहीं कोई लारे दी,
कख गलिया दे सिफत करेन्दे, दाते बख्शनहारे दी,
सन्ता दे चरणा चो मिलदी, दुनिया दी बादशाही····

यह बिस्तर तो उठाना पड़ेगा

[तर्ज—जो वादा किया वो निभाना ... ...]

यह विस्तर तो इक दिन उठाना पडेगा ।
दुनिया चली है, चला जायरे जमाना, सब को जाना पडेगा ।

कहाँ है सिकन्दर वो पोरस कहाँ है ?
न रावण का दुनिया मे बाकी निशा है ।
जब उठ गए, इतने बडे फिर क्या घबराना-सब को ...

जिन्हे मौत अपनी न कभी याद आई ।
जिन्हो ने खुदी मे भुलादी खुदाई ।
न उन का सुना, इस मौत ने कोई बहाना-सब को ...

जो दुनिया मे चाहे सुखो का खजाना ।
उसे चाहिए प्रेम प्रभु से लगाना ।
'सोमनाथ, का बिल्कुल नया छोटा-सा गाना—
सबको गाना पडेग—यह ... .

यह दुनिया क्या है

[तर्ज—यह दुनिया क्या है ? ....]

यह दुनिया क्या है, एक धोखा है ।
अमीरो को न सुख है, फकीरो को न सुख है—अजब ये जहाँ है ।
हाथ पसारे माँग रहा कोई दो रोटी दे जाए ।
जिन के घर मे दूध और माखन रोग सदा तडपाए ।
काँटे फूल है, दोनो इस मे—ये कैसा रस्ता है २ ॥

गोये अमीर कि उस के घर मे होती नही सन्तान !
बेटे दिये गरीव के घर फिर क्या भूल गया भगवान !
सव रोते हैं, तेरे जग मे—कोई भी न सुखिया है २ !!
पलता रहे गरीव का बेटा सुवह-शाम गलियो मे !
हुआ बीमार अमीर का बालक जो कि पला कलियो मे !
कोई जीए, कोई मर जाए—यह मालिक तेरी रजा है २ !!
हर इन्सान को सुख-दुख दोनो-आते है जीवन मे !
'सोमनाथ' सुखी है वोही जो न घबराये उलझन मे !
अपने-अपने, कर्म का फल है—अच्छा चाहे बुरा है २ !!

बदलती दुनिया के बदलते नजारे !

[तर्ज—इक रात के दो-दो ... .]

दुनिया के नजारे दुनिया मे, हर आन वदलते रहते है !
इनसान की तो क्या हस्ती है, भगवान वदलते रहते हैं !
कई ढोंग रचे कई कपट किये इस चचल धन के पाने को,
कईयो के घर वर्वाद किये, इक अपना घर यह वसाने को !
कईयो को डाला विपता मे, इक अपनी मौज उडाने को,
कईयो का है अपमान किया, इक अपना मान वढाने को !
ना सोचा 'चमन' ये ऐश के सव सामान वदलते रहते है !
न रही वो सोने की लका, न रहा जलाने वाला भी,
न रहा वो दुर्योधन अर्जुन गाडीव चलाने वाला भी।
न लडने वाली फोज रही, न रहा लडाने वाला भी,
मिटने वाले तो मिट ही गये, न रहा मिटाने वाला भी !
दुनिया की सराए न वदली, महमान वदलते रहते हैं !!

तू जिनकी की खातिर मरता है, उन को तो तेरा प्यार नहीं,
तू जान निछावर कर चाहे, पर उन्हे तेरी दरकार नही !
तू तडपता आहे भरता रहे, इस से कोई सरोकार नही ,
तू लाख किसी का बनना फिर, पर तेरा कोई गमख्वार नही !
इस मतलब की दुनिया मे 'चमन' ईमान बदलते,रहते है !!

—

यह दुनिया बड़ी लुटेरी !

यह दुनिया बडी लुटेरी, ना तेरी है ना मेरी,
मुह मे इस के राम-राम और दिल मे हेरा-फेरी !!
मच्छर भी जब काटे तो पहले करे पुकार,
घूं-घू ओ सरकार आया हूँ मैं हो जा हुशयार,
लेकिन चुप चुप काटे दुनिया, जब हो रात अँधेरी !!
सुबह कबूतर को लाला जी जिस दिन दाना डाले,
मुटठी-भर दानो मे अपने धर्म का रौब जमा के,
सवा सेर का सेर तोलने मे भी करे न देरी !!
सुनते हैं कल हो गया चोरी मन्दिर मे प्रसाद !
इसीलिए तो है दुनिया मे मयखाने आबाद !
छाया मे भगवान की वाह-वाह कैसी बने री !!

गरीबो की फरियाद !

देने वाले ! किसी को गरीबी न दे !
मौत दे दे मगर बदनसीबी न दे !!

हुए पैदा हैं जो यह किस की खता ?
हम को दुनिया मे क्यो तू ने लाया बता ?
क्यूँ है चुप कुछ बता, कुछ बता, देने वाले ...
छीन ली हर खुशी और कहा कि न रो,
गम हजारो लिये दिल भी देने ये सौ,
करके हम पे सितम, खुश न हो, देने वाले.......
छोड कर यह जहाँ बोल जाएँ कहाँ ?
कोई गमख्वार है न कोई मेहरबाँ !
खुद कहे, खुद सुने, दासता दासता, देने "

गा ले प्रभु के गीत ?

[तर्ज—इन हवाओ, इन फिजाओ मे]

बीता बचपन, चली जवानी, जब तक होय न खतम कहानी,
गा ले प्रभु के गीत प्यारे,
आ जा, आजा रे—गा ले प्रभु के
रात ढले फिर होय सवेरा, यू ही उमरिया कटती जाए !
देखे है दिनरात तमाशा, कौन भला तुझ को समझाए !
जो सुमरे सो पार लगेगा, रोवेगा तू बैठ किनारे !!
ये कर्मो की भूमि प्यारे काटेगा, जो कुछ बोता है !
धन की चोरी दान मिट्टी का, अब पछताये क्या होता है ?
अपने मन मे नजर मार ले, यह जो भी है किसी की खता रे !!
यह मन मे विश्वास मान ले, जो भी उस की शरण है आता !
सकट कटे पाप मिट जाते, दुनिया मे सुख यश है पाता है !
यह बडी बात नही, उस ने तो 'सोमनाथ' के काज सवारे !!

दुनिया इक जेल है !

[तर्ज—सौ साल पहले]

सुन ले ओ मूरख बन्दे । दुनिया इक जेल है, दुनिया इक जेल है ।
सुख-दुख सभी यह कर्मों का खेल है ।।
राम लखन सीता जी को, बन मे अरे फिराया,
पर किसी देवता ने आ ना उनका हाथ बँटाया,
कर्मों के द्वारे नही मेर और तेर है—सुख ·
सत्यवादी हरिश्चन्द्र को काशी मे भगी के घर विकवाया,
और रानी तारा जी को ब्राह्मण की दासी बनाया,
भाग्य बदलते लगती न देर है—सुख ··· ·
जो जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पाएगा,
हँस-हस कर पाप करेगा तो फिर रो-रो कर भुगताएगा,
समझ ले यह सब कुछ दिनो का ही फेर है—सुख ···

होनी के हाथ का खिलौना !

सोचने को लाख बातें सोचे इनसान !
होगी वह पूरी जिसे चाहे भगवान ।।
होनी के हाथो तू एक खिलौना है,
उस ने जो सोच लिया बस वही होना है,
तुझ को गिराए वही, तुझ को उठाए वही—
बेबस है तू नादान ।।

जो-कुछ भी है सब उसी का तमाशा है,
आशा कही पे है तो कही पे निराशा है
रखे अधूरे कभी, कर भी दे पूरे कभी—
जिस के वो चाहे अरमान ।।

चले इन्सान की ना यहाँ मनमानी,
हार गये उस से बडे-बडे अभिमानी,
अब भी तू जाग प्यारे, निदरा को त्याग प्यारे—
प्रभु का किये जा गुण-गान ।।

कौन है अपना कौन है पराया ?

कौन है अपना कौन पराया ?
दुनिया का यह भेद अभी तक, कोई समझ नही पाया ।।
जीवन की नैया मे सभी हैं राही एक मंजिल के,
इन्ही मे मन के मीत मिलेंगे इन्ही मे दुश्मन दिल के,
किसी के दिल मे भरी है नफरत, किसी मे प्यार की माया
बिछुडे लोग भी मिल जाते है कभी-कभी जीवन मे,
खुशी की लहरे भी उठती हैं किसी के दुखिया मन मे,
कभी किसी ने खोया जग मे, कभी किसी ने पाया
कोई मूरख बनके बेगाना अपनो को ठुकराए,
कोई किसी की खुशी के कारण रस्ते से हट जाए,
कोई किनारा छोड के ढूढे, तूफानो का साया

प्रभु-दर्शन की उमंग !

[तर्ज—कौन जाए मथुरा कौन ... ...]

नही सोना चाहिए, नही चाँदी चाहिए,
इक दर्शन की मन मे उमग है।
मेरे जीवन के आँचल मे डाल दीजिए,
आप के पास जो प्रेम रग है।
डोल सकती नही मेरी भावना,
मै कदाचित् उठूगा न द्वार से।
हे प्रभु! यह है ससार स्वार्थी,
मेरा सम्बन्ध क्या ससार से?
ऐसी लगी है लगन, ऐसी भड़की अगन,
आज जलता मेरा अग-अग है।
आज अपनी नजर न चुराइए,
मेरे नैनो की नगरी मे आइए।
मुझे चरणो मे अपने लगाइए,
मेरा कोमल है मन न दुखाइए।
है आँखो मे नशा, हूँ कहाँ क्या पता,
उठ रही मेरे मन मे तरग है।
झझटो मे हूँ मैं उकता गया,
मुझे मुक्ति की राह पर ले चलो।
कृपा करके भगत के पास आ,
बैठा के निगाह पर ले चलो।
लुटा सुख का धन, जीना हुआ है कठिन,
ऐ 'कमल' आत्मा मेरी तग है।

जीवन का नकशा बदल दे !

[तर्ज—आवाज देके हमे तुम]

न कर पाप दुनिया मे नादान बन के ।
दिखा दे जमाने को इन्सान बन के ।।
जरा खोल आँखे अधेरा नही है,
यह धरती यह समार तेरा नही है,
यहाँ तू भी आया है मेहमान बन के ।।
जरा उठ के जीवन का नकशा बदल दे,
है मजिल की हसरत तो रस्ता बदल दे ?
चला चल सचाई का तूफान बन के ।।
तू कब तक भला हाथ मलता रहेगा,
यह किस्मत का चक्कर तो चलता रहेगा,
मिटा दे गरीबी को बलवान बन के ।।

एटमां दे दौर ते जहान खड़ा ए !

[तर्ज—इक परदेसी मेरा दिल ·· ···]

जग चन्द रोज दा महमान खडा ए ।
एटमा दे दौर ते जहान खडा ए ।।
जिन्दगी नू अग्न लान वास्ते चिनगारियाँ,
बम्मा विच बन्दे बद कीतियाँ ने सारियाँ,
कतरे च बुझिया इन्सान खडा ए ··
उडदा आकाश ते परिंदा ओनूं आखिए,
खून पीवे बदा जो दरिंदा ओनूं आखिए,
केहडी सत्ता उत्ते इन्सान खडा ए ·······

मौत आई साइस दी स्वाग सोहना धरके,
धर्म विचारा खडा मत्थे हत्थ धरके,
इक पासे हुए भगवान खडा ए
साचदा ए रब्ब अज वन्दा कित्थे जा रहा ?
मैंनू ते भुलाया हुए, खुद तू भुला रहा ?
खुदी विच फुल्लया नादान खडा ए
'नत्था सिह' रज के मचा लवो क्रान्ति,
पर धर्म ही लाएगा आखिर एत्थे शान्ति,
जिदे उत्ते जमी-अस्मान खडा ए

यह तेरा जीवन फूल है !

[तर्ज—तू मेरे प्यार का फूल है]

यह तेरा जीवन फूल है, कि रहा भूल है, विपयो के सग मे ।
फूल को रहा क्यो रौंद रे, वदियो के मग मे ।।
नेकी वदनामी तेरे साथ चलेगी,
जैसा वीज वोए वैसी खेती फलेगी,
खुले हुए हैं सब रास्ते, तेरे वास्ते, जीवन के सफर मे ।
भूल न जाना कहीं, देख तू काटो के डगर मे ।।
पूर्व पुण्य से नर देही मिली है,
चादनी यह चद रोज की खिली है,
व्यर्थ न जाए तेरी जिन्दगी, कर वदगी, कुछ लाभ उठाले ।
त्याग बुराई सदा प्रेम से, प्रभु के गुण गाले ।।
भूखे दुखियो की जो तू फरियाद सुनेगा,
जुग-जुग जग तुझे याद करेगा,
नही तो होगी शर्मिदगी, कि फैले गदगी, जब तक तू रहेगा ।
दिन मे 'अमर, सौ-सौ वार तुझे, जग बुरा ही कहेगा ।।

जिन्दगी को परखने का तरीका !

[तर्ज—आवाज दे के हमे तुम ‥]

हमे परखने का तरीका नही है ।
कोई वरना दुश्मन किसी का नही है ।।
जो है नूर मुझ मे वही और मे है,
उसी का यह परकाश सब ठौर मे है,
यह गुर दरअसल हम ने सीखा नही है ।।
जबा पर है अपनी ही नफरत के छाले,
ये मतलब-परस्ती से है हम ने पाले,
यह उल्फत का गुड वरना फीका नही है ।।
जबा वो न खोले जो दिल को दुखाए,
जिसे सुनता ही दूसरा तिलमिलाए,
यह खुश-गुफ्तगू का तरीका नही है ।।
हो दुश्मन अगर दोस्तो से जियादा,
जो हो जान लेने पे फौरन आमादा,
कोई लुत्फ फिर जिन्दगी का नही है ।।
तू क्यो बाधता, नत्था सिह' लम्बे दावे,
क्यो सपनो के महलो-मका तू बनावे,
भरोसा तेरा इक घडी का नही है ।।

सत्सग का दरिया !

[तर्ज—कभी सुख है, कभी दुःख है]

भरा सत्सग का दरिया, नहा लो जिस का जी चाहे ।
जिगर से दाग पापो का, मिटा लो जिसका जी चाहे ।।

न ऐसा और है तीरथ, जगत मे दूसरा कोई ।
गया हरद्वार जाकर आजामा लो जिसका जी चाहे ।।
ऋषि-मुनियो ने भी गाई वहुत-कुछ इसकी जो महिमा ।
लिखा है पोथियो मे भी, पढा लो जिसका जी चाहे ।।
नही इसमे जरा ताज्जुब, जो फल सन्तो ने बतलाया ।
काग से हस अपने को, बना लो जिसका जी चाहे ।।
हजारो रत्न बे कीमत भरे आला-से-आला है ।
जरा इसमे लगा गोता, उठा लो जिसका जी चाहे ।।

अजब तमाशा लकड़ी का !

जीते लकडी मरते लकडी, अजव तमाशा लकडी का !
ऐ जग वालो सच कहता हूँ, यह जग वासा लकडी का ।।
आया जब समार मे प्राणी, मिला पघूडा लकडी का ।
माँ की गोद मे जब तू खेला, मिला खिलौना लकडी का ।।
माँ ने चलना तुझे सिखाया गुड्डा वनाया तुझ लकडी का ।
बच्चो के सग खेलन लागा, गुल्ली डडा लकडी का ।।
गया स्कूल मे जब तू पढने, कलम पट्टी तेरा लकडी का ।
जिस हटर से तुझको मारा, हटर भी था लकडी का ।।
गया ससुर घर जब तू व्याहने, मिला बेदिका लकडी का ।
सास ससुर ने दहेज दीना, कुर्सी मेज तुझे लकडी का ।।
गृहस्थी वन जब घर को आया, पलग मिला तुझे लकडी का ।
बाल-बच्चे घर मे जब आये, फिक्र नून और लकडी का ।।
वृद्ध हुआ जब कम्पन लागा, सोटा मिला तुझे लकडी का !
जब ससार से जावन लागा, फट्टा मिला तुझे लकडी का ।।
चार भाई ने तुझे उठाया, चिता बनाया तेरा लकडी का ।
तोड के तिनका घर को आये, तिनका भी था लकडी का ।।

किस्मत के खेल निराले !

किस्मत के खेल निराले !
खुशियो का जल बरसाते है, गम के बादल काले !!
होनी बात बने अनहोनी—धूप बने बरसात !
पतझड मे भी फूल खिले हैं, यह किस्मत की बात !
होने वाली बात टले ना, कभी किसी के टाले !!
चाहे दुश्मन लाख किसी की राह मे कांटे बोए !
लिक्खा है तकदीर मे जो-कुछ, आखिर को वो होए !
फिर भी अपना समझे सब-कुछ, नादान ये दुनिया वाले !!

क्या प्रभु से कहेगा ?

[तर्ज—सौ साल पहले······ ······]

जनम से पहले, किया इकरार था,
भूल गया क्या प्रभु से कहेगा ?
माँ के गर्भ मे करता पुकार था, भूल गया, क्या·········

१. काल कोठरी मे इक दिन तू दोनो कान पकडता था !
सौ-सौ बार तू धरती पर रख करके नाक रगडता था !
लटका था उलटा, बडा ही लाचार था, भूल······ ···
२ पारस पथरी पा करके भी तू सदा कगाल रहा !
मिला था कितनी मेहनत से न इसका तुझे खयाल रहा !
मुक्ति का सच्चा, तू ही हकदार था—भूल ·· ···
३ लाख चौरासी काट के चक्कर पगले ! तू इन्सान बना !
लेकिन, इसकी कदर न जानी मस्ती मे गलतान रहा !
अनमोल पूँजी पे, तेरा अधिकार था, भूल ··

बीती जाए यह घड़ी !

[तर्ज—अडी वे अडी..........]

लडी वे लडी, तेरे स्वासा दी लडी, बीबा मँहगी है वडी—
कुछ कर साधना, वीती जाये यह घडी ...
चोला इन्सानी मिला बडा अनमोल वे,
विषया विकारा विच ऐवे न तू रोल वे,
उठ जाग, कर त्याग बीबा ऐवे न तूं रोल वे .
कम्म तेरा की सी कीता की है तू नकम्मया,
दया दा न पानी तेरे दिल विच थम्मया,
दर आया, ठुकराया—न पानी दिलो सिम्मयाँ, अड़ी ..
असर न हुन्दा बेजवाना दी पुकार दा,
अपने जे कडा चुभे चीका है तू मारदा,
जा प्यारी है भारी-पया चीका तू है मारदा ... ..
पढ़े तू रामायण करे पाठ ग्रन्थ साहब दा,
खावे नित्त मास प्याला पीवे तू शराब दा,
बीमारी, एह भरी प्याला पीवे तूं शराब दा ... ..
रूप दा दीवाना परवाना वन घुम्मदा,
सता दे पैरा दी धूली कदे चुम्मदा,
सुन मीता, की कीता-न धूली कदे चुम्मदा ......

जग मेला है दिन चार !

जग मेला है दिन चार ।
उड जा पछी बावरिया, यह मतलब दा संसार ।
इन्साना हत्थ, फड़या छुरिया देणगे जानो मार !!

तन दे उजले, मन दे मैले, विच नगर दे वस्सन,
दर्द किसे दा कोई न वडे, वेख के दूरो हस्सन,
सच्ची गल्ल सुणावा पँछी ! सब पैसे दे यार ···

दिन विच सौ-सौ पापड बेल्लण, बन्दा बन्दे नू ठग्गे,
उड गई शरम-हया हुण एत्थो, पई हनेरी वग्गे,
चढ बन्दे ! तू धर्म दी बेडी, लग जा सागर पार ···

भाई भाई दा वैर हो गया, आखे दास दीवाना,
लब्भे ना हुए प्यार मुहब्बत, डोले पया जमाना,
सारी दुनिया सच्च कहाँ मैं, करदी हाहाकार ···

बन्दा बन रब्ब दा !

[तर्ज—हँसदियाँ अखियाँ नू रोण ··· ···]

पापा तो आजाद होके बन्दा बन रब्ब दा !
जेहड़े कम्म आया ओसे कम्म क्यो नही लगदा !!

बदिया सी कम्म तेरा एत्थे प्रभु बन्दगी,
बदगी न कीती फसा आके विच गदगी;
गंदगी च रहणा तैनूं वड्डा चगा लगदा !!

आया सी तूँ जग विच विगडी बनान नू,
जिन्द-जान लाके दुख दिल दे मिटान नू,
दुःख दिन-रात तेरे सिर उत्ते गज्जदा !!

ऐवे टुट जावेगा तू मिट्टी दे खिलौणया,
करदा गुमान काहदा घडी दे परौहणया;
बन्दा होके मन्दा कम्म तैनू नहीओ सज्जदा !!

पंख लगा के उड़ जाए रे.......

पख लगा के उड जाए रे, तेरी उमर गाफिला।
तुझ को नजर ना आए रे, तेरी ....
दिन रात दोनो के पख लगाके, तेरे जिसम की डोलिया मजा के,
भले जिधर को ये चलती ही जाए, वापस न आए इक वार जाके,
तेरी उमर गाफिला .
खेलते हँसते वचपन को खोया, आई जवानी तो विषयो मे खोया
ऐसे ही पूरे हुए दिन उमर के, कोई भला बीज तुम ने न बोया,—
तेरी उमर गाफिला ...
जैसे रुके ना नदिया का पानी, चलती ही जाए तेरी जवानी,
पीछे से 'सोमनाथ' दुनिया कहेगी, अच्छी बुरी जो भी होगी कहानी,
तेरी उमर गाफिला ....

ये रात दिन के इशारे !

[तर्ज—गजल]

ये रात दिन के इशारे वना रहे हैं हमे।
सभी हैं झूठे नजारे वता रहे है हमे ।।
ये गुजरा हुआ पानी न मुड के आएगा।
नदी के दोनो किनारे वता रहे हैं हमे ।।
जो वना है वो तो टूटेगा लाजमी इक दिन।
जो गिर चुके वो किनारे वता रहे है हमे ।।
भरोसा मत करो दुनिया की वादशाहत का।
सुनो वो मौत के मारे वता रहे हैं हमे ।।
जो 'सोमनाथ' जपै नाम अमर होगा वही।
गगन के चाद सितारे वता रहे है हमे ।।

अगर इक बार फिर से ....

[तर्ज—चलो एक बार फिर से अजनबी बन जाए ......]

अगर इक बार फिर से सतयुगी बन जाए यह दुनिया ।।
न फिर कोई मुल्क इक-दूसरे को हड़पना चाहे,
न फिर इन्सान का इन्सान दुश्मन होने पाएगा ।
न कोई माँ रोएगी और उस की गोद हो खाली,
न फिर सुहाग सतियो का ही सिर से खोने पाएगा—अगर.......
अगर हम एक-दूजे से बढ़ा ले दोस्ती इतनी,
तो मुमकिन है कि दिल पे ये कदम कुछ असर कर जाए ।
हमे इक-दूसरे से अब जो नफरत हो रही इतनी,
तो मुमकिन है हमेशा के लिए दिल से ही मर जाए-अगर ......
अगर कोई बात कहने दो तो फिर 'सोमनाथ' कहता है—
कि कुदरत के बने दस्तूर अब तुम तोड़ते क्यो हो ?
ये खालक है खुदा की, राम की, रहीम की साझी,
तो फिर इन्सानियत पर ऐटमो को छोड़ते क्यो हो ? अगर ... ...

गुमराही राही !

[तर्ज—मुझ को अपने गले]

मंजिल पर नही पहुँच वो सकता, जो राही गुमराही ।
जिस को नही विश्वास प्रभु पर, जिसके न दिल मे प्यार है ।।
उलझ गया गोरख-धन्धे मे, सोच नही यह पाया है,
चौरासी के बाद यह मानुष-जीवन हाथ मे आया है,।
दौलत पा कर यह ना सोचा, उस की दया से आई ।
क्या-क्या मेरे फर्ज जहाँ मे, कैसे मेरा उद्धार है ।।

गर्ज के वास्ते कई लोगों के दर पर शीप झुकाता है,
पर सन्तो के दर पर आकर झुकने से शरमाता है,
आयु तेरी बीत रही है, तुझ को समझ न आई।
प्रभु नाम की नाव बिना प्राणी! डूब रहा मझधार है !!
'महेश' तू जिस जग मे है आया, यह एक मुसाफिरखाना है,
पाँच लुटेरे राह हैं घेरे, इनसे बचकर जाना है,
प्रभु के अर्पण कर तन मन धन, कर ले नेक कमाई !
नजर मेहर हो जाए उसकी तो भव-सागर मे पार है !!

ओ पिंजरे की मैना !

[तर्ज—गाए जा गीत मिलन के ···]

पिंजरे की मैना, बोल हरि बैना, तुझे उड जाना है।
तू आनन्द-स्वरूप सदा ही दुःख रहा ना तेरे पासा,
इन्द्रियन के वस मे हो करके फसी विषयन की आसा,
बन्धन कठिन कटे ना, तडप दिन रैना, सदा ही दुख पाना है।
पांच तत्त्व का पुतला तेरा, जिस मे नौ दरवाजा,
मौत बिलैया ताक लगाये, बैठ रही कर साजा,
वा से कूद बचे ना, खोल अब नैना, नही तो पछताना है।
ढीले तार उखड गई खूटी पिंजरा भया पुराना,
आज काल मे टूटन हारो, या को कौन ठिकाना,
कोई रोक सके ना, तू चौकस रहना, यही समझाना है।
यह पिंजरा बन्धन का कारण, इससे मोह न करना,
चन्द रोज का वासा करके, आखिर इस को तजना,
'गीतानद' का कहना, हृदय समझ गहना; समझ मत गाना है।

ज्योति जलाए जा !

[तर्ज—चौदवीं का चांद हो ……]

दिल में प्रभु के प्यार की ज्योति जलाए जा !
अज्ञान के अन्धेरे की हस्ती मिटाए जा !!

एक दिन जरूर तुझ पे दया कर ही देगा वोह ।
एक दिन जरूर झोली तेरी भर ही देगा वोह ।
निश्चय से उसके द्वार पे धूनी रमाए जा !!

कहते हैं उसकी मेहर से बिगडे सुधर गए ।
कहते है चण्ड-कोशिया जैसे भी तर गए ।
उस दुःख-हरण को दुःख की कहानी सुनाए जा ।।

अपने किये हुए पे 'कमल' पश्चात्ताप कर ।
नवकार मन्त्र का तू हमेशा ही जाप कर ।
जीवन को अपने धर्म के पथ पे चलाए जा ।।

यह जीवन है इक जोड़ तोड़ !

[तर्ज—इस दुनिया मे सब चोर चोर · ·]

यह जीवन है इक जोड-तोड ।
कभी इससे तोड और कभी उससे जोड-यहाँ कदम-कदम पर मोड ।।

पहले था नेह नादानी से, फिर हो गया प्यार जवानी से !
बचपन का पीछा दिया छोड, यह····

जब भर गया जोवन लाली से, फिर प्यार हुआ घर वाली से ।
मुह मित्रो मे अब लिया मोड, यह····

इक दिन वह चाह भी घटने लगी, पुत्रों में मुहब्बत बटने लगी !
मोह खाने लग गया तोड़-तोड़, यह ··

गृहस्थी जब खर्च बढ़ाने लगी, पैसे में उलफत जाने लगी !
संचे हो जाएँ कई करोड़, यह

जब इधर तवज्जो दी मारी, आ गई बुढ़ापे की बारी !
मुँह सब ने ही लिया अब मरोड़, यह ··

जब इस मंजिल पर जा पहुँचा, तब काल-सदेशा आ पहुँचा !
बोला चल सब-कुछ यहीं छोड़, यह ·

बिन प्रभु नाम के पछताया, तब जोड़-तोड़ से उकताया !
जब सब ने तिनके दिये तोड़, यह ··

'नत्थासिंह' ज्यादा या थोड़ा, गर प्रभु से नाता ना जोड़ा !
फिर रोएगा सिर फोड़-फोड़, यह ··

ओ बन्दे ! रस्ता देख के चल !

[तर्ज—आ जाओ तड़पते हैं ··· ·· ···]

ओ बन्दे रस्ता देख के चल, तैनू भाग से मिलियाँ अखिया ने !
था-था ते ठोकर खाना एँ, ए अक्खियाँ काम नू रक्खिया ने !
इक अक्ख अनमोले मुल्ल दी ए, इक अक्ख गलियाँ विच रुलदी ए !
इक अक्ख मोती सग तुलदी ए, इक अक्ख ते बेंहदीया मक्खिया ने !!
इक अक्ख दे मारे मर गये ने, इक अक्ख दे तारे तर गये ने,
इक अक्ख दे लक्खां दुश्मन ने, इक अक्ख दियाँ लक्खां सखियाँ ने !!
इक अक्ख विच राहत शादी ए, इक अक्ख विच भरी तबाही ए !
इक अक्ख विच नूर इलाही ए, इक अक्ख ने बन्नीयाँ पटियाँ ने !!

ते जगतो की ले के जाणगे

[तर्ज—मेरी लगदी किसे न देखी ' "]

जिन्हा कीती ना नेक कमाई, ओ नेक कमाई—
ते जग तो की लै के जाणगे।
जिन्हा मुत्तया ही उमर विहाई, ओ उमर विहाई—
ते जग तो की लै के जाणगे।
पिछली कमाई मुठी विच लै आवदे,
खर्च कर हत्थ झाड़ एवें टुर जावदे,
किसी दुखिया दी पीड न मिटाई, ओ '
सुखा असीं सुखिया मनुष्य देही पान नू,
आशा असीं रखिया चोरासी दे मिटान नू,
वेला आया ते कदर ना पाई, ओ "
सुन ओए जवाना! तेरा रूप ते जवानीआ,
खिड फूल वाली टहनी बाग कुमलानीआ,
कीती किसे दी न तू सेवकाई, ओ ' '

झूम-झूम जोगी मस्ताना—

झूम-झूम जोगी मस्ताना गाता जाए गली-गली।
अपनी धुन मे मस्ती का पैगाम सुनाए गली-गली॥

दुनिया वालो! यह दुनिया है, बस्ती किस के बाप की ?
आज अगर है, कल न होगी, यहाँ जरूरत आप की॥

न जाने यह मूरख दुनिया, पैसे की क्यों दास है ?
चार रोटिया, एक लँगोटी, बाकी सब बकवास है॥

आग पेट की क्या है माँगे ? रोटी के दो टुकडे ।
बडे लोग फिर क्यो करते है, नोटो के सौ टुकडे ।।
दीवाने को मस्ताने को, बात यह दिल की कहने दो ।
महलो वाला ! महल के नीचे किसी की कुटिया रहने दो ।।

इतना न कर तू गुमान !

माटी के पुतले । इतना न कर तू गुमान ।
पल-भर का तू महमान ।।
तू ने प्रभू को धन मे ढूढा ।
कभी न अपने मन मे ढूढा !
भूल गया माया के बन्दे ' तुझ मे बसे भगवान ।।
मालिक से कुछ छुपा नही है, कौन है जग मे कैसा ?
प्रभू तो है प्यार का भूखा, लोग चढावे पैसा ।
धन के लोभी यह नही जानें, क्या चाहे भगवान ।।

प्रेम-नगर अब जाना है !

छोड मुसाफिर माया-नगर को, प्रेम नगर अब जाना है ।
इस दुनिया की राह बडी है, अपना कौन ठिकाना है ।
आलम मारा जा रहा है, तेरा दिन भी आ रहा है ।
धर्म का सौदा करले मुसाफिर ! नही पीछे पछताना है ।।
पिता पुत्र कोई न अपना, माया-जग का झूठा सपना ।
चेत मुसाफिर ! कदम कदम पर, जग से फद छुटाना है ।।

ऐ मेरी तकदीर !

ऐ मेरी तकदीर !

खेल क्या दिखाए, समझ न आए,

किस को पता कल क्या हो जाए—ऐ मेरी ...

यह इन्सान का जीवन तो कठपुतला है तेरा,

रोशनी है हाथ मे तेरे, तेरे हाथ अन्धेरा,

काँटा कभी फूल हो जाए—ऐ मेरी ...

पल मे बनाए तू राजा, पल मे बनाए भिखारी,

नाच रहे है तेरे इशारे पर सब समारी;

पेश न किसी की भी चल पाए—ऐ मेरी ...

तकदीर का खेल !

मिट नही सकता कभी लिखा हुआ तकदीर का !

बस नही चलता यहाँ, इन्सान की तदबीर का !!

कौन है, जहाँ पर कभी, काली घटा छाई नही ?

राम और घनश्याम पर भी, क्या विपत आई नही ?

याद है बन-बन भटकना, जानकी रघुवीर का !!

सुख कभी और दु ख कभी, ससार की यह रीत है !

आज जिस की हार है तो, कल उसी की जीत है !

धूप-छाँही रंग है, ससार की तसवीर का !!

साथी न बने कोई !

साथी न बने कोई तक़दीर के मारों का ।
इन्सान की मजबूरी है खेल सितारों का ॥

अच्छे हों अगर दिन तो हमदर्द बने दुनिया ।
और दिन जो पलट जाएँ बेदर्द बने दुनिया ।
नगमा न सुने कोई टूटे हुए तारों का ॥

दो दिन जो बहार आए, और आके चली जाए ।
बीती हुई घड़ियों की बस याद ही रह जाए ।
दुनिया में भरोसा क्या, रंगीन बहारों का ॥

होठों को सिये जाए, अश्कों को पिए जाए ।
ठोकर पे लगे ठोकर और फिर भी जिये जाए ।
इन्सान तो कैदी है, किस्मत के इशारों का ॥

दौलत के झूठे नशे में हो चूर !

दौलत के झूठे नशे में हो चूर, गरीबों की दुनिया से रहते हो दूर ।
अजी एक दिन ऐसा आएगा-जब माटी में सब मिल जाएगा ॥
ऊँचे आसमान में भी ऊँची तेरी शान है ।
पर कभी सोचा नहीं, गिनती की तेरी सांस है ।
इन का तू हिसाब कर, अँगूठा उँगलियों पे धर—
कितना खर्च कर रहा बुराई में,
कितना तू लगा रहा भलाई में ।
भलाई का फल रह जाएगा—बाकी ......
ऊँची हवेली ये ऊँचे महल, पल-भर में जाएँगे पगले बदल ।
ले तू किसी की दुआओं का फल, बदी से तू टल और नेकी पे चल ।
जैसा बोएगा वैसा पाएगा—बाकी ...

मस्त फकीरी

[तर्ज—आ जाओ तड़पते हैं अरमाँ ·· · ·]

दे मस्त फकीरी वो जिसमे शाहो की भी परवाह न हो।
मैं भी न किसी का शाह बनू, मेरा भी कोई शाह न हो।
दुनिया दौलत मे मस्त रहे, मैं मस्त रहूँ तुम को पा कर,
निर्धनता की ज्वालाओ से, तिलभर भी मन मे दाह न हो!
घर—घर मे पाऊँ पूजा, या घर—घर मे अपमान मिले,
दोनो ही मे मुस्कान रहे, मन के अन्दर भी आह न हो।
पर-दु ख मे मैं रोऊँ जी-भर, पर अपना दु ख न रुला पाए,
पर-सुख को अपना सुख समझूँ सुखियो की मन मे दाह न हो।
हर रग रहे इस जीवन मे, पर मैल न मन मे आ पाए,
विचरे मन सयम के पथ पर, पल-भर को भी गुमराह न हो।

महावीर का नया शस्त्र

[तर्ज—बचपन की मोहब्बत को ··]

महावीर की भक्ति को दिल मे न जुदा करना,
जब कष्ट पड़े कोई तब याद उसे करना।
कुण्डल पुर नगरी मे जब कदम तेरा आया,
इक पल मे प्रभु मानो बस पलट गई काया,
प्रभु धन्य जन्म तेरा, प्रभु धन्य तेरे चरणा।
जब जान लिया दुनिया इक गोरख धधा है,
पानी का बुलबुला है जिसे कहते बन्दा है,
पानी का बुलबुला भी भूला है मगर मरना।

उपदेश अहिंसा का घर-घर मे सुना डाला,
पापो की घटाओ को प्यारा मे बदल डाला,
जो काम किया तूने किसी और ने क्या करना।

शस्त्र तो हजारो ही दुनिया मे हुए पैदा,
वह शस्त्र निराला था जिस पर तू था शैदा,
वह शस्त्र अहिंसा था जिसका कि लिया शरना।

भारत ने विजय पाई इस शस्त्र निराले से,
अहिंसा की कदर पूछो लगोटी वाले से,
इस शस्त्र को लेकर के टी, आर, कोई डरना।

वीर जो भारत मे न आते

[तर्ज—दिल साफ तेरा है कि नही ..]

भगवान महावीर जो भारत मे न आते
दुख-दर्द जमाने को कहो कौन मिटाते;
व्यथा किसको सुनाते!

पशुओ की गर्दनो पै चला करते दुधारे,
बे मौत बेगुनाह कटा करते विचारे,
गर वीर दया करके जो उनको न छुडाते।

मन्दिर-मठो मे खून की मचा करती होलियाँ,
यज्ञों मे प्राणियो की जला करती टोलियाँ,
भगवान अहिंसा का न जो डका बजाते।

भगवान महावीर ने वह ज्ञान सुनाया,
जिसने करोडो प्राणियो को इन्सान बनाया;
हम ठोकरे खाते, जो न वे रस्ता बताते।

गर वीर न होते तो हमे कौन बचाते,
स्वाधीन किस तरह से बने कौन सिखाते,
गाँधी को अहिंसा का सबक कौन पढाते !

शान्ति का था वह दूत, अहिंसा का पीर था,
शेरो मे था वह शेर, वीरो मे वीर था,
कारण यही हम सब उसे सिर अपना झुकाते !

अपने ही मन से

[तर्ज—पंछी बावरिया क्यों ना राग ....]

अरे मन मस्ताने क्यो ना जिन-गुण गाए !
कि दुनिया सपना है आख खुले मिट जाए !

यह जीवन है सरिता का जल, सुख-दुःख हसना-रोना कल-कल ।
निश-दिन बहता जाए, अरे मन

करना जो यौवन मे करले, सुकृत जल से गागर भर ले,
समय चूक पछताए, अरे मन

जो तुझ को है सबसे प्यारी, नश्वर काया माया सारी,
सग चले वो नाए, अरे मन

सबके सग मे नेकी करले, मुह से जिनवर नाम सुमर ले,
'वशी मुनि' समझाए, अरे मन .....

कितना बदल गया इन्सान

कितना बदल गया इन्सान !
देख तेरे संसार की हालत क्या होगई भगवान,
सूरज न बदला, चाँद न बदला ना बदला रे आसमान ...
आया समय बडा बेढंगा, आज आदमी बना लफंगा,
कही पै झगडा कही पे दंगा, नाच रहा नर होकर नंगा,
छल कपट के हाथो अपना बेच रहा ईमान
राम के भक्त रहीम के बन्दे, रचते आप फरेब के फन्दे,
कितने ये मक्कार ये अन्धे, देख लिये इनके भी धंधे,
इन्ही की काली करतूतो से, हुआ यह मुल्क मसान
जो हम आपस मे न झगडते, क्यो बने हुये ये खेल बिगडते
काहे लाखो घर ये उजडते, क्यो ये बच्चे मा से बिछुडते,
फूट-फूट कर क्यो रोते प्यारे बापू के ये प्राण

बोल का मोल

[तर्ज—मैने देखी जग की रीत ...]

बोलो तो मीठे बोल, बोल मत कडवे बोलो ।
कहने के पहले बोल, बोल को दिल मे तोलो ।
मनुष्य की कीमत एक, बोल मे हा होती है,
कहते हैं कि बोल यह अनमोल मोती है,
विवेक पूर्ण बोली से मोती की माला पो लो !
मन दरपण पर, पत्थर बहाओ ना,
कटु बोल बोल के, किसे कलपाओ ना,
प्रेमामृत मे मीत भूल मत जहर घो लो ।

कैकई के बोल से राम वनवास हुआ,
द्रौपदी के बोल से पूरा इतिहास हुआ,
सोचे-समझे बिना सज्जन ! मत मुँह को खोलो !
बोलो मे भी शक्ति है वचनो मे माया है,
बोली से भी प्रभु ने पुण्य बतलाया है,
'अशोक-मुनि' प्रभु बोल पाप के कलिमल धोलो !

जमाने की हवा

[तर्ज—कहीं सुख है कही दुख है ...]

जमाने की हवा क्या है, पल—पल मे बदलती है।
कभी उत्तर कभी पश्चिम कभी पूरब को चलती है।
जहाँ पर आज गाना है, वही पर कल को रोना है,
खुशी के साथ दुनिया मे गमी भी तो टहलती है।
किसी से न कभी कोई, मोहब्बत भूल कर करना;
मोहब्बत ही मोहब्बत को मोहब्बत बनके छलती है।
जिसे कहते हैं हम अपनी, वह वस्तु है नही अपनी,
पराई आग मे दुनिया, यह पड-पड के क्यो जलती है।
जो जय जय बोलते हैं आज, अपने पूर्व पुरुषो की,
उन्ही के मुँह से जय जयकार, निन्दा बन निकलती है।
'सुरेन्द्र' अपने जीवन को तू बस दुनिया मे अलग करले;
यह दुनिया तो हमेशा - दुख के अँगारे उगलती है !

अनित्यता का खेल

कौन यहाँ है तेरा बाबा ! कौन यहाँ है तेरा !
लकडी चुन-चुन महल बनाये, मूरख कह घर मेरा ,
ना घर तेरा ना घर मेरा, दुनिया रैन बसेरा !
जिस जोवन पर फूल रहा है, यह है कष्ट घनेरा ,
चाँदनी है चार दिनों की, अन्त मे फेर अंधेरा !
जिस सर को अब तेल लगा कर, चीर निकाले टढा ,
प्राण-पखेरू उड जायेंगे, काग लगाएँगे डेरा !
मोह-माया ने तुझको मूरख ! चारो तरफ से घेरा ,
जाग जा मजिल दूर बहुत है, है नजदीक सवेरा !
जब तक पछी बोल रहा है, सब राह देखे तेरा ;
आँखे बन्द हो जाएँगी जब, कौन कहेगा मेरा !

तारा का विलाप

[तर्ज—सावन के बादलो]

ऐ वन के पछियों ! यह तो बताओ !
अच्छा था मेरा रोहित, कैसे गया है सो ?
फल-फूल और वृक्षो ! चुपचाप खड़े क्यों हो ?
काले ने डसा रोहित, तुम मुझको आ डसो !
इक गम की कहानी हूँ, अपने से बेगानी हूँ ,
अब बेटा ! किधर जाऊँ तुम नीद से जगो !
फटता है जिगर गम से, यह दम था तेरे ही दम से ;
दुश्मन यह जमाना है, तुम साथ ले चलो !

खाती थी खिला करके, सोती थी सुला करके;

अब तू न रहा अपना जीवन खराब हो।

किस्मत ने तो मारा है, रोहित भी सिधारा है,

अब कौन 'मदन' अपना दुखिया की सुने जो!!

दुःख की करामात

दुःख है ज्ञान की खान मनवा!

दुःख मे ज्ञान-ध्यान बहु उपजे, सुख मे करत प्रयाण!

दुख ही शिक्षक है इस जग मे प्रभु का शुभ वरदान,

अति उत्तम यह पाठ पढावे, छुट जावे सब बान!!

जिसने जग मे दुःख नहीं देखा, वह कैसा इन्सान,

उन्नत पर कबहुँ न पहुँचे, दुनिया के दरम्यान!!

ज्यो-ज्यो स्वर्ण अग्नि मे डाले, रूप धरे छविमान,

ऐसे ही दुःख की आहो मे, तप कर हो मतिमान!

कौन बिगाना, कौन है अपना, दुख मे पडत पिछान,

दुनिया के कसने की कसौटी, खोने को अभिमान!

पूर्व-जन्म के प्रबल पुण्य से, मिलता दुःख महान,

याद दिलाता है उस घर की, क्या जाने नादान!!

जो मुझ पर हो कृपा गुरु की मागू यह वरदान;

जन्म-जन्म मोय दुःख ही देना, 'पागल' का यह गान!

समता का पाठ

सुख-दुख एक समान मनवा !
ज्ञान तराजू लेकर तोलो, मिटे सभी अज्ञान मनवा !
इक आवे अरु जावे दूजा, सूरज चन्द्र समान,
भाग्य-गगन के है दो तारे, अजब निराली शान !
जो जग मे दुख ही नही होता, सुख की क्या पहचान ?
बिछुड-मिलन का है यह जोडा, धूप-छाँह के समान !
पतझड कभी हरियाली देखो, ऋतु की गति महान,
खिला रहा है खेल खिलाडी, जीव करे अभिमान !
दुख के दरद को भूलके मूरख ! सुख मे हो गलतान,
उलट-फेर की चपत लगे तब, भूल जाय सब वान !
सुख दुख मे समभाव धरे जो, विरले है तू जान;
धन्य 'पागल' उस धीर वीर को, दुख मे भी गावे गान !

वीर का चमत्कार

[तर्ज—दम भर जो इधर मुँह फेरे..... ..]
ओ तृशला मात दुलारा, महावीरा ! दुनिया मे अगर न आता;
अन्धकार यहाँ छा जाता !
सन्देश तेरा था अहिंसा, सच्चाई तेरी शान,
कुण्डल पुर मे जन्म लिया था, नाम हुआ वर्धमान,
ओ सिद्धार्थ राजदुलारा महावीरा...... ....
जब जान लिया ससार है यह, बस चार दिनो का मेल,
झूट कपट की इस दुनिया मे रंग-विरगे खेल,
फिर झट-पट किया किनारा, महावीरा शुद्ध आत्म ध्याके.... .
जीवन के निर्माता !

थी हाथ-पाँव मे बेडियाँ और चन्दना थी बेहाल,
फिरते—फिरते जा पहुँचे वहाँ भगवन् दीनदयाल,
फिर सतीका कष्ट निवारा, महावीरा, ले उडद बाँकले खाता,
और मन ही मन मुस्काता!

फिर भारत यह आजाद हुआ था तेरा ही उपकार,
एक लंगोटी वाला आया अहिंसा का व्रत धार,
वह बापू गांधी प्यारा, ओ वीरा, गुण वीतराग के गाता,
और राम नाम को ध्याता!

अब सत्य अहिंसा अपनाओ, भारत हो स्वर्ग समान,
सब दुनिया मे ऊँचा हो फिर भारतवर्ष महान,
वह रहबर नेहरू प्यारा, महावीरा! जो गीत प्रेम के गाता,
और सबसे मेल बढाता!

ओ भारत माँ के लाल तेरी है सत्य अहिंसा जान,
इक दिन तू इन्सान मे उठकर बन बैठा भगवान,
टी० आर० को तेरा सहारा, महावीरा ·········

क्षण-भंगुर जीवन

[तर्ज—बचपन की मोहब्बत ·········]

दो दिन का अरे जीवन, दुनिया सब फानी है!
अभिमान न कर बन्दे! यह झूठी कहानी है!
इठला कर हँसती थीं, जो बाग में कल कलियाँ,
मस्तानी हो भँवरो से करती थीं अठखेलियाँ;
मुरझा कर खाक बनी मिलती न निशानी है!

यह सूर्य दुपहरें का है शाम को छुप जाना,
यह अकड़-अकड चलना, है खाक मे मिल जाना,
फिर घोर अँधकारमयी, रात्रि छा जानी है!

फिर मान यह कैसा है, पल-भर की जवानी का,
सब रूप और रंग फीका तू बुलबला पानी का,
यह शान तेरी प्यारे मिट्टी बन जानी है,

इस छोटे-से जीवन मे कुछ नेक कमाई कर,
पापो को तू कर हलका, कुछ पल्ले भलाई कर,
बस धर्म ही वह साथी जिसे साथी निभानी है,

विचार करो

[तर्ज—आये भी वोह गये भी ..]

प्यारे जरा विचार ले, तूने आके क्या लिया?
नर-तन रतन अमोल को, तूने पाके क्या किया?
आठ पहर रात-दिन भोगों मे तू रहा मगन;
सुमरण किया न जिनेश को, यों जिया तो क्या जिया?
भूखा पडौसी मर रहा, भाई सगा दुखी तेरा;
लाखो को दान भी अगर, तूने दिया तो क्या दिया?
द्वारे पै तेरे आनके प्यासे को जल नही मिला;
सोडा बरफ वो लेमिनिट, तू ने पिया तो क्या पिया?
जख्मी - पड़ा है - राह मे देख के जो तू चल दिया,
ठेका अहिंसा-धर्म का तूने लिया तो क्या लिया?
धर्म समाज देश की सेवा करी नही जरा,
स्व-अर्थ 'राम' काम को, तूने किया तो क्या किया?

क्या सीखा ?

[तर्ज—आजा मेरी बर्बाद········]

प्रेम की धार मे बहना नही सीखा तो क्या सीखा ?
परस्पर प्रेम मे रहना नही सीखा तो क्या सीखा ?

अगम है प्रेम का मारग, कठिन है शान्ति की मजिल,
राह की आफते सहना नही सीखा तो क्या सीखा ?

तप्त व्याकुल कलेजो पर, लगा कर शान्ति की मरहम ,
प्रेम के चुटकले कहना नही सीखा तो क्या सीखा ?

भूल कर भूल औरो की भूल को जानकर अपनी ;
जगत मे ज्ञान गुण गहना नही सीखा तो क्या सीखा ?

चेतवनी

[तर्ज—गाए जा गीत मिलन के ···········]

गाएजा गीत जिनन्द के, हो आनन्द-कन्द के, अगर सुख पाना है ।
किस पै लुभाया है रे ओ मानव ! झूठा यह ससार ,
तन-धन-यौवन सुपने की माया, पाहुणो है दिन चार—
आया था महमान बनके यहाँ बन-ठन के, क्यो हो रहा दीवाना है ?
कितने ही आये जिनने जमाई, जग मे अपनी धाक ;
वज्र-सी देही, विश्व-विजयी, उनकी भी होगई खाक—
रावण बलि कंस का, बताओ कौरव-वश का, कहाँ पर ठिकाना है ?
वर्षो गुजारे माया के लारे, पोसा कुटुम्ब परिवार ,
पापो की गठरी खुद ही के सर पर, जावे न कोई साथ—
बाधे हैं कर्म हँस-हँसके, भोगो मे फँस-फँसके, न जिनका ठिकाना है ?

दान शील तप भावना भाले, करले कमाई दिन चार—
जब तक है किश्ती तेरे यह वश मे, होले भवोदधि पार—
इक रोज प्रभू-चरणन के, हो नारण-तरण के, शरण माही जाना है ?
उत्तम नरतन सतगुरु—सेवा, जैन—धर्म अनुराग;
'जीत' ले वाजी हाथो मे तेरे, जाग प्रमादी अव जाग—
गाए जा गीत जिनन्द के, हो आनन्द-कद के, अगर सुख पाना है ?

रंगीली दुनिया

खोटी दुनिया बडी रगीली, देख न धोखा खाना रे बाबा !
फूल मे काँटा लगा हुआ है, मुमकिन है चुभ जाना रे बाबा !
इस जीने का क्या भरोसा, यह जीना भी क्या जीना,
चलती साँस हवा का झोका यह आया वह जाना रे बाबा !
न थे जिन जालिमो के जुल्म के अरमान बाकी,
न रहे खुद वो न उनका कोई भी निशान बाकी;
सुख में सुख है दुःख दुःख मे है, जो देना सो पाना रे बाबा !
लम्बा रस्ता कोस कडे है और अकेले जाना,
खाई कुए से बचते रहना, सभल के पाँव बढाना रे बाबा !
जाने वाले आय के नये रग चमन दिखला गये,
चार दिन मे चार गुल महके खिले मुरझा गये;
दो दिन का है हेरा-फेरा, आज रहे कल जाना रे बाबा !

इन से भी सीखिए

[तर्ज—देश के ओ नौजवां.............]

फूलों से तुम हँसना सीखो, भँवरों से नित गाना,
वृक्षों की डाली से सीखो, फल आए झुक जाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना,
महँदी के पत्तों से सीखो, पिस कर रंग चढ़ाना।
दूध और पानी से सीखो, मिल कर प्रेम बढ़ाना,
सूई और धागे से सीखो, बिछुड़े भाई मिलाना।
परवानों से सीखो धर्म पर हँस हँस प्राण चढ़ाना,
वायु के झोंके से सीखो, आगे बढ़ते जाना।

नेक सलाह

नेकी के कर्म कमा जा रे दुनिया से जाने वाले।
यह धन-यौवन संसारी, है दो दिन की फुलवारी।
कोई खुशरंग फूल खिला जा रे दुनिया .
यह तन तेरा तरवर है, नेकी इक मीठी समर है।
इस तरवर का फल खा जा रे दुनिया .. ..
तुझमें धन अन्त छुटेगा, जाने किस हाथ लुटेगा।
इसे पर-हित-हेत लगा जा रे दुनिया ....
कर दीन-दुःखी की सेवा, यह सेवा जग-यश देवा।
यश पाना है तो पा जा रे दुनिया
यह सुन्दर-सी देह तेरी आखिर, हो खाक की ढेरी।
जो इस में बने बना जा रे दुनिया .

गरीबों की जिन्दगी

हमारी जिन्दगी क्या है, अमीरो का खिलौना है।
न अपने वश मे हँसना है न अपने वश मे रोना है।
अमीरो को जो देखा, रोके यूँ गुरबत पुकार उठी।
तुम्हे आबाद होना है, हमे बरबाद होना है।
हमारे पास दिल है, दर्द है, अश्को के मोती है।
हमे क्या गर्ज तुम्हारे पास चाँदी है या सोना है।
यह पूछे कोई उस से, जिसने यह दुनिया बनाई है।
गरीबो के लिए दुनिया मे क्या रोना ही रोना है।

माया है बहता पानी

[तर्ज—साँचो तेरो नाम राम, साचो तेरो नाम]

धेला लगे न पाई तेरा ओ मूर्ख नादान,
फिर भी बन्दे! क्यो नही जपना वीर प्रभु भगवान।
क्या लेके तुम आए थे, और क्या लेके तुम जाओगे,
मुट्ठी बाँधे आए जगत मे, और हाथ पसारे जाओगे,
चार दिनो की चमक चाँदनी झूठी तेरी शान, फिर भी
माता पिता सुत नारी भ्राता मोह माया का है सब नाता,
यह दुनिया दिन चार का मेला इक आता इक जाता,
काहे को तो तू बदी कमावे अपने को पहचान, फिर भी
यह माया है आनी जानी, यह माया है बहता पानी,
इस माया की खातिर पगले क्यो करता बेईमानी?
लाखो इस माटी ने खाए, कैसा अभिमान, फिर भी

जिसको ढूंढे गुरुद्वारे मे, जिसको ढूंढे मन्दिर मे,
जिसको तू ढूंढे है बाहिर वह है तेरे अन्दर मे।
टी आर साफ अगर मन तेरा तो, तू ही भगवान, फिर भी

अजब है जमाना

किसी को बनाना किसी को मिटाना,
अजब है ये दुनिया अजब ये जमाना।
है दोनो ही इन्सां पले इक चमन मे,
वही एक—सी जान दोनो के तन मे,
मगर कोई ओढ़े है फूलो की चादर,
है मुश्किल किसी के लिए सर झुकाना।
है सर पर किसी के बहारो के साये,
किसी पर बलाओ के बादल है छाये,
किसी के लिए सिर्फ आंसुओ की बूंदे,
किसी के लिए मोतियो का खजाना।
कोई चैन मे है तरसता है कोई,
किसी के उजड़ने से बसता है कोई,
न जाने यह अन्धेर कब तक रहेगा,
जमी एक की दूसरे का ठिकाना।

मनुष्य किस लिए आया

[तर्ज—महफिल मे जल उठी शमा]

आया है दुनिया मे प्रभू गुण गाने के लिए।
मानुष-जन्म मिला है तुझे कुछ पाने के लिए।

काम, क्रोध, मद, लोभ मोह इन पाँचो का हो रहा शिकार,
कभी न सोचा मन मे पगले ! कैसे होगा बेडा पार,
जितने साथी मिले तुझे बहकाने के लिए।
चार दिनो की चमक चाँदनी, फिर अन्धेरी रात यहाँ,
कभी न सोचा मन मे पगले ! क्या तेरी औकात यहाँ,
बना है चोला आखिर को मिट जाने के लिए।
किसी के दुःख को दुःख न जाना सब को ही तू सताता रहा,
काटे गले गरीबो के और अपने महल बनाता रहा,
आए ये यहाँ वीर प्रभु समझाने के लिए।

घबरा न किसी से

मन साफ तेरा है कि नही पूछ ले जी से,
फिर जो कुछ भी करना है तुझे कर वह खुशी से, घबरा न किसी से।
शर्बत के जो धोखे मे तुझे जहर पिलाए,
रोने पै जो हँसता रहे हँस-हँस के रुलाए,
ले जाना जो चाहे तुझे काँटो की गली मे, फिर ...
तू लोगो की आँखो मे बला हो तो बला हो,
अच्छी वह बुराई है जो दुनिया का भला हो,
कटता है गला गर तेरा कुन्द छुरी से, फिर ...
जिस काम से जिन्दा तू सुबह-शाम रहेगा,
गर तू भी नही तो तेरा नाम रहेगा,
सच्चे नही डरते है जमाने मे किसी से, फिर.......

चोले नू दाग लगायी ना !

बन जोगी मन भटकायी ना ।
चोले नू दाग लगायी ना ।।
मन्न कहना गुरु सन्यासी दा,
कर भजन रोज अविनासी दा ।
तेरा कट जाए चक्कर चौरासी दा,
जद जायी मुड़के आयी ना ।
यह झूठा जगत नजारा ए,
सब दिस्सदा कूड़ पसारा ए !
सिर बजदा मौत नगारा ए,
मन माया विच भरमायी ना ।
तूं कल्ला ठग बहुतेरे ने,
तूं कहन्दा यार ये मेरे ने ।
एह सारे दुश्मन तेरे ने,
तूं मौंझ किसे नाल पायी ना ।
मोह छड्ड दे लहू दी जोका दा,
कर सौदा रोक बरोबा दा ।
मन्न कहना आरफ लोका दा,
तू चेतन जड़ बन जायी ना ।

करलै सन्तां दी सेवा !

[तर्ज—तेरा जादू न चलेगा ओ..........]

कर लै सन्ता दी सेवा ओ मन मेरे ।
मूक जाएगे चौरासी वाले फेरे ।

तेरे सग ता यमाँ ने लाए घेरे,
हुण कर लै कोई जतन चगेरे ।।
कलियुग दी है राह टेढी, टेढा इस दा पेडा,
माया ठगनी पई ठगदी, विषयाँ दा सागर वेहदा,
आ, वन्दे गोते पया खावे विन बेडे ।।
नरक, स्वर्ग दे दो वेडे, इक तारे इक डोबे ।
पाप-पुण्य दो कर्म भइया । मोह विच दल दल खावे ।
ओ, रब्ब वसदा स्वर्ग द नेटे
चोला मनुष्य दा धार लया, चोले नू दाग न लावी,
दान दया उपकार करीं, प्रभु दी न याद भुलावी,
ओ होने अमला ते आखिर नबेडे ।
मिट्टी दा पुतला नचदा फिरै, आतम-ज्ञान न जाना,
खोल भरम दी गड वन्दे, ऐ आखे दास दिवाना,
ओ, झूठे दुनिया दे झगडे-झेडे ।।

सन्तों की सीख

चेठे जन्मा दे वाद चोला पाया,
कि देखी किते दाग न लगे ।
मिली तैनू अमोलक काय,
कि देखी किते दाग न लगे ।।टेक ।
चोला जो पाया एहनू रखी समाल के,
कागज दे वाग एहनू जाई ना गाल के,
सब सन्तो ने एसे गाया कि देखी · "

चोले दी कदर कोई विरलाँ ही जानदा,
जेहड़ा कदर जानदा ए ओहो मौजा मारदा
हीरा रतन तेरे है हत्थ आया कि देखी...

चोला जो पाया एहनूं रग विच रग लैं,
प्रेम वाला रग तू प्रेमिया तो मंग लैं,
एहनू चढ जाए रग सवाया कि देखी

इन्सान वही बड़ भागी

[तर्ज—तेरे द्वार खडा इक जोगी]

इन्सान वही वडभागी ।
जिसकी वृत्ति जग मे रहकर, जगदीश्वर से लागी ।।
वन मे न जाए चाहे धूनी न रमाए पर मन को इतना साधे ।
जागते या सोये इक सास भी न खोये, बस आतमराम अराधे ।
ऐसे साधक को ही समझो सच्चा महात्यागी
वाणी से जो सच बोले तोला रत्ती पूरा तोले—धर्म तराजू ले के ।
चाहे हो अमीर पर कगले फकीर को जो अपने-जैसा देखे ।
दूर रहे जो राग-द्वेष से उसे कहो वैरागी
भूखे को खिलाया और नगे को पहनाया जिस—उसने सब कुछ पाया ।
कपडे रगाए और चाहे न रगाए-पर मन हर रग रगाया ।
जिसने तृष्णा और मोह-ममता मैल समझ कर त्यागी
ईश्वर-आराधना व आत्मा की साधना को जिसने लक्ष्य बनाया ।
प्राणियो की सेवा को ही जान कर मेवा जिम मोहन भोग लगाया ।
"नत्थासिह" फिर जनम-जनम की, सोई किस्मत जागी

प्रेम-प्याला

[तर्ज—हुण नाम जपन दा वेला]

यह मीठा प्रेम प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला ।
यह सतसग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला ।

प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला,
प्रेम की फेरो माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला ।

प्रेम बिना प्रभू भी नही मिलते, मन के कष्ट कभी नही टलते,
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला ।

प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म-मरण के दुःख मिटावे,
कटे कर्म जजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला ।

प्रेमी सब के कष्ट मिटावे, लाखो से दुराचार छुडावे,
प्रेम मे हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला,

मुक्ती का सुख प्रेमी पावे, नरको मे हर्गिज नही जावे,
प्रेम का भोजन आला, कोई करेगा किस्मत वाला !

गुरु श्री 'पृथ्वीचन्द्र' हमारे, अमृत प्रेम पिलाने वाले,
प्रेम का पथ निराला, कोई चलेगा किस्मत वाला ।